



Malaika Arora On Women Being Questioned About Age, Desirability...

मुख्यमंत्री ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार को लिखा पत्र

जनगणना में सरना धर्म को अलग कोड के रूप में करें शामिल : हेमंत सोरेन

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जनगणना 2027 में आदिवासी समुदाय के सरना धर्म को अलग धार्मिक पहचान देने की मांग केंद्र सरकार से की है। इस संबंध में उन्होंने देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार को अलग-अलग विस्तृत पत्र भेजा है। मुख्यमंत्री ने इस मुद्दे को राज्य की आकांक्षाओं, झारखंड विधानसभा के संकल्प और आदिवासी समाज की भावनाओं से जुड़ा बताते हुए केंद्र सरकार से संवेदनशील निर्णय लेने का आग्रह किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह जानकारी मिली है कि जनगणना के पहले चरण में अन्य तथ्यों के साथ यह भी दर्ज किया जाएगा कि हाउसहोल्ड का



आदिवासी समाज की भावनाओं से जुड़ा है मुद्दा, केंद्र सरकार ले संवेदनशील निर्णय

दिल्ली गए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन

जनगणना सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक संरचना समझने का महत्वपूर्ण माध्यम

सरना धर्म में जल, जंगल और जमीन के साथ होता है गहरा आध्यात्मिक संबंध

जनगणना केवल आंकड़ों का संकलन नहीं

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनगणना केवल आंकड़ों का संकलन नहीं, बल्कि देश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। जनगणना के आधार पर ही नीतियां बनती हैं, कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन होता है और संवैधानिक अधिकारों का संरक्षण सुनिश्चित किया जाता है। ऐसे में यदि किसी समुदाय की धार्मिक पहचान स्पष्ट रूप से दर्ज नहीं होती है, तो उसके विकास से जुड़े निर्णयों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

बताई सरना धर्म की विशेषताएं

मुख्यमंत्री ने सरना धर्म की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि यह प्रकृति-आधारित आस्था प्रणाली है, जिसमें जल, जंगल और जमीन के साथ गहरा आध्यात्मिक संबंध होता है। ग्राम देवता, कुल देवता, प्रकृति पूजा, पारंपरिक पुजारी व्यवस्था और विशिष्ट त्योहारों की परंपरा इसे अन्य धर्मों से अलग पहचान प्रदान करती है। ऐतिहासिक सदर्भ देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वतंत्रता से पूर्व जनगणना में विभिन्न समुदायों की धार्मिक पहचान दर्ज की जाती थी, लेकिन स्वतंत्र भारत में आदिवासी धर्मों को अलग से दर्ज करने की परंपरा नहीं अपनाई गई। इसके बावजूद वर्ष 2011 की जनगणना में अलग कोड नहीं होने के बावजूद देश के 21 राज्यों में लगभग 50 लाख लोगों ने स्वेच्छा से सरना धर्म दर्ज कराया, जो इसकी व्यापक सामाजिक स्वीकृति को दर्शाता है।

आदिवासी पहचान के आधार पर हुआ झारखंड का गठन

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि झारखंड राज्य का गठन आदिवासी पहचान के आधार पर हुआ है और राज्य की नीतियां स्थानीय समुदायों की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विशेषताओं को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं। ऐसे में सरना धर्म को अलग कोड देना राज्य की मूल भावना और पहचान को और मजबूत करेगा। उन्होंने स्वीकार किया कि जनगणना जैसी विशाल प्रक्रिया में नए वर्ग जोड़ने से कुछ तकनीकी चुनौतियां आ सकती हैं, लेकिन वर्तमान डिजिटल व्यवस्था के दौर में यह कार्य संभव है। यदि समय रहते इस तरह के महत्वपूर्ण आंकड़ों का समुचित संकलन नहीं किया गया, तो भविष्य में नीति निर्धारण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

प्रमुख व्यक्ति अनुसूचित जाति या नागरिक से जुड़े व्यक्ति आंकड़ों का संकलन किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आगामी जनगणना प्रक्रिया में सरना धर्म की पुष्टि तथा आदिवासी समुदाय के उससे जुड़े भावनात्मक लगाव को ध्यान में रखते हुए अलग सरना धर्म कोड का प्रावधान किया जाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि इस संबंध में पूर्व में भी अनुरोध किया जा चुका है और उम्मीद है कि इस पर गंभीरता से

विचार किया जाएगा। इस बीच मुख्यमंत्री रविवार को ही दोपहर में दिल्ली रवाना हो गए। चर्चा है कि वह राष्ट्रपति सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से इस मुद्दे पर मुलाकात कर चर्चा करेंगे।

विचार किया जाएगा। इस बीच मुख्यमंत्री रविवार को ही दोपहर में दिल्ली रवाना हो गए। चर्चा है कि वह राष्ट्रपति सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से इस मुद्दे पर मुलाकात कर चर्चा करेंगे।

विचार किया जाएगा। इस बीच मुख्यमंत्री रविवार को ही दोपहर में दिल्ली रवाना हो गए। चर्चा है कि वह राष्ट्रपति सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से इस मुद्दे पर मुलाकात कर चर्चा करेंगे।

विचार किया जाएगा। इस बीच मुख्यमंत्री रविवार को ही दोपहर में दिल्ली रवाना हो गए। चर्चा है कि वह राष्ट्रपति सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से इस मुद्दे पर मुलाकात कर चर्चा करेंगे।

विचार किया जाएगा। इस बीच मुख्यमंत्री रविवार को ही दोपहर में दिल्ली रवाना हो गए। चर्चा है कि वह राष्ट्रपति सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से इस मुद्दे पर मुलाकात कर चर्चा करेंगे।

विचार किया जाएगा। इस बीच मुख्यमंत्री रविवार को ही दोपहर में दिल्ली रवाना हो गए। चर्चा है कि वह राष्ट्रपति सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से इस मुद्दे पर मुलाकात कर चर्चा करेंगे।

SARAFI

सोना	: 13,985
चांदी	: 270.00

(नोट : सोना 22 केरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

पालामू में नीट एग्जाम में हिंदी के बदले मिले इंग्लिश में त्वरेचन पेपर

PALAMU : सोमवार को पूरे देश में मेडिकल का नेशनल एलिजिबिलिटी-कम-एंट्रेस टेस्ट (नीट यूजी) की परीक्षा हुई। परीक्षा में झारखंड के पलामू में हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को अंग्रेजी में प्रश्नपत्र दे दिया गया। अंग्रेजी में प्रश्न पत्र मिलने के बाद कुछ देर तक हंगामा वाली स्थिति उत्पन्न हो गई। बाद में रविवार की देर शाम गाइडलाइन के अनुसार दोबारा परीक्षा शुरू हुई। पलामू के मेडिनीनगर के योद्ध सिंह नामधारी महिला कॉलेज में नीट की परीक्षा के लिए केंद्र बनाया गया था। परीक्षा का समय 2 बजे से शाम के 5 बजे तक निर्धारित किया गया था। प्रश्नपत्र का विवाद सामने आने के बाद 6:00 बजे के बाद फिर से परीक्षा शुरू हुई।

बरेली में तालाब में डूबकर एक ही परिवार के तीन बच्चों की मौत

BAREILLY : रविवार को उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में एक गांव के बाहर तालाब में डूबकर एक ही परिवार के तीन बच्चों की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, मृतकों की पहचान अंश (आठ), आयुष (नौ) और त्रिवेन्द्र उर्फ देव (10) के रूप में हुई है। मीरगंज थाना प्रभारी निरीक्षक (एसएचओ) संजय तोमर ने बताया कि शाम करीब 4:30 बजे सूचना मिली कि दोपहर दो से तीन बजे के बीच तीन बच्चे गांव के तालाब में नहाने गए थे और इसी दौरान तीनों डूब गए।

दर्दनाक : मृतकों में चार पुरुष, चार महिलाएं और डेढ़ साल का बच्चा भी शामिल

दिल्ली में 4 मंजिला मकान में लगी भीषण आग, 9 की मौत

NEW DELHI @ PTI : रविवार की सुबह दिल्ली के शाहदरा इलाके के विवेक विहार में एक चार मंजिला मकान में भीषण आग लग गई। हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई। इनमें 4 पुरुष, 4 महिलाएं और एक डेढ़ साल का बच्चा शामिल है। दिल्ली फायर सर्विस जोर से बताया गया कि सुबह करीब 3.47 बजे आग लगने की सूचना मिली थी। 4 घंटों की मशक्कत के बाद सुबह करीब 8 बजे आग पर काबू पाया गया। बिल्डिंग के अंदर फंसे 15 लोगों को बचाया गया। इनमें दो लोग घायल हुए हैं। मृतकों के शव बिल्डिंग के अलग-अलग फ्लोर से बरामद किए गए। स्थानीय पार्श्व पंक्त जलूथरा ने बताया कि कुछ शव इतने खुरे तरह जल चुके हैं कि सिर्फ कंकाल बचा है। डीएनए टेस्ट के बाद ही मृतकों का पता चल पाएगा। हादसे को लेकर कुछ लोगों का कहना है कि शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगी। वहीं कुछ स्थानीय लोगों ने बताया कि एसी में धमाके के बाद आग फैली। अधिकारियों की तरफ से असली कारण की पुष्टि नहीं हुई है।

शाहदरा इलाके के विवेक विहार में हुआ हादसा, एसी में ब्लास्ट की आशंका



बचाए गए 15 लोग, दो घायल
4 घंटों की मशक्कत के बाद आग पर पाया गया काबू

मृतकों की डेढ़ बॉडी बिल्डिंग के अलग-अलग फ्लोर से की गई बरामद

मृतकों के नाम आए सामने, पहचान मुश्किल

दिल्ली पुलिस के अनुसार, बिल्डिंग के पहले फ्लोर से 1 शव, दूसरे फ्लोर से 5 शव और सीढ़ियों से 3 शव मिले, जहां दरवाजा बंद था। आशंका है कि लोगों ने छत पर भागकर जान बचाने की कोशिश की थी। दूसरे फ्लोर पर मिले मृतकों की पहचान अरविंद जैन (60), उनकी पत्नी अनीता जैन (58), बेटे निशांत जैन (35), बहू आंचल जैन (33) और डेढ़ साल के पोते आकाश जैन के रूप में हुई। तीसरे फ्लोर पर नितिन जैन (50), उनकी पत्नी शैले जैन (48) और बेटे संयुक्त जैन (25) मृत पाए गए। पहले फ्लोर पर शिखा जैन (45) का शव मिला, जबकि उनके पति नीलम जैन (48) घायल हो गए। स्थानीय पार्श्व पंक्त जलूथरा ने बताया कि उन्होंने मृतकों के शव देखे हैं। इनमें कौन से शव पुरुष के हैं और कौन सी महिला के, इसकी पहचान करना भी मुश्किल है।

बिल्डिंग के पिछले हिस्से से मिले अधिकतर शव

दिल्ली फायर सर्विस के अधिकारी मुकेश वर्मा ने बताया कि चार मंजिला बिल्डिंग के हर फ्लोर पर दो 4 बीएचके फ्लैट हैं। आग बिल्डिंग के पिछले हिस्से में लगी थी और वहीं सबसे ज्यादा मौतें हुई हैं। 16 फ्लैट्स का सामान जल गया। खिड़कियों और बालकनी पर गिरल और लोहे की रॉड लगी थी, जिससे रेस्क्यू में दिक्कत आई। फिर भी करीब 15 लोगों को बचाया। इनमें से एक व्यक्ति करीब 30% तक जल गया था, जिसे इलाज के लिए गुरु तेग बहादुर हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।

चेन्नई में चलते विमान का इमरजेंसी गेट खोलकर कूदा यात्री, मची अफरातफरी

- रनवे से टर्मिनल की तरफ जा रही थी फ्लाइट, पायलट ने तुरंत रोका, आरोपी अरेस्ट
- 29 साल के मोहम्मद शरीफ मोहम्मद नजमुद्दीन के रूप में हुई आरोपी की पहचान



CHENNAI @ PTI : रविवार की सुबह चेन्नई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लैंडिंग के दौरान एयर अरेबिया की चलती फ्लाइट में एक यात्री इमरजेंसी गेट खोलकर नीचे कूद गया। यह फ्लाइट शारजाह से चेन्नई पहुंची थी और इसमें 231 यात्री सवार थे। घटना के बाद यात्री

एयरपोर्ट के कमर्शियल एरिया की ओर भागने लगा, जिससे कुछ देर के लिए अफरा-तफरी की स्थिति बन गई। हालांकि, सुरक्षा कर्मियों ने तुरंत उसे पकड़ लिया। आरोपी की पहचान 29 साल के मोहम्मद शरीफ मोहम्मद नजमुद्दीन के रूप में हुई है।

चार राज्यों और पुडुचेरी में विधानसभा चुनावों के वोटों की गिनती आज, सुरक्षा के कड़े इंतजाम

NEW DELHI @ PTI : चार राज्यों- पश्चिम बंगाल, असम तमिलनाडु और केरल तथा केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में विधानसभा चुनाव के लिए वे वोटों की काउंटिंग सोमवार को सुबह 8 बजे से होगी। स्पष्ट हो जाएगा कि किस राज्य में किसकी सरकार बनेगी। भारत निर्वाचन आयोग की ओर से इसके लिए हर प्रकार की तैयारी पूरी कर ली गई है। मतगणना केंद्रों पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। पश्चिम बंगाल में यूडीएफ के बीच मुकाबला है। तमिलनाडु में डीएमके एआईडीएमके के बीच मुकाबला है। असम के 40 मतगणना केंद्रों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के मूक का रहने वाला 35 वर्षीय सौरभ कुमार यादव सोनू को गिरफ्तार किया गया है। 126 विधानसभा क्षेत्रों के 722 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला होगा। तमिलनाडु के 62 केंद्रों पर निस्तरयी सुरक्षा घेरे में होगी मतगणना होगी। प्रत्येक मतगणना केंद्र के चारों ओर 100 मीटर की दूरी तक सुरक्षा घेरा बनाया गया है।

सकारात्मक संकेत बड़े निवेश के वास्ते मरोसेमंद टौर के रूप में तेजी से उभर रहा देश वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच भारतीय पूंजी बाजार ने दिखाई मजबूती

PHOTON NEWS, RESEARCH DESK : अर्थशास्त्रियों के अनुसार, कैपिटल मार्केट यानी पूंजी बाजार यह वित्तीय बाजार है, जहां सरकारें और कंपनियां एक साल से अधिक समय के लिए दीर्घकालिक धन जुटाती हैं। इसके माध्यम से निवेशकों और धन की आवश्यकता वाली संस्थाओं को जोड़ा जाता है। इससे अर्थव्यवस्था के लिए पूंजी निर्माण और आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। प्राथमिक और द्वितीयक इसके दो प्रकार होते हैं। प्राइमरी यानी प्राथमिक बाजार के तहत कंपनियां पहली बार शेयर या बॉन्ड जारी कर सीधे निवेशकों से पैसा जुटाती हैं। सेकेंडरी यानी द्वितीयक बाजार के तहत पहले से जारी शेयरों का शेयर मार्केट में क्रय-विक्रय किया जाता है। हाल ही में यह महत्वपूर्ण जानकारी सामने आई है कि वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय पूंजी बाजार की स्थिति मजबूत बनी हुई है। हम जानते हैं कि सियोरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) निवेशकों के हितों की रक्षा और बाजार की निष्पक्षता सुनिश्चित करने वाली

कैपिटल मार्केट से एक साल से अधिक समय के लिए धन जुटाती हैं सरकारें और कंपनियां

इसके माध्यम से जोड़े जाते हैं » निवेशक और धन की आवश्यकता वाली सभी संस्थाएं	अर्थव्यवस्था के लिए अपेक्षित » पूंजी निर्माण व आर्थिक विकास का प्रशस्त होता है मार्ग	वर्तमान में लगभग 4.4 लाख करोड़ डॉलर तक पहुंच चुका है कुल बाजार पूंजीकरण	तकनीक, स्वास्थ्य व ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में निवेश के अवसरों से निवेशकों की बढ़ती धारणा
---	---	---	--

स्थिर पूंजी केंद्र के रूप में अहम भूमिका
चंद दिन पहले उद्योग जगत के प्रतिनिधियों के साथ एक उच्चस्तरीय बैठक के दौरान सेबी प्रमुख तुहिन कांत पांडे ने स्पष्ट किया था कि भारत अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक स्थिर पूंजी केंद्र के रूप में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। देश का कुल बाजार पूंजीकरण लगभग 4.4 लाख करोड़ डॉलर तक पहुंच गया है। तकनीक, स्वास्थ्य और ऊर्जा जैसे विविध क्षेत्रों में निवेश के अवसरों ने निवेशकों की धारणा को बदल दिया है। उन्होंने बताया कि वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान भारत ने इक्विटी और ऋण बाजारों के जरिए कुल 154 अरब डॉलर की पूंजी जुटाई है।

आरबीआई ने की पुष्टि
रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) की ओर से हाल में जारी रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में भारत इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग यानी प्राथमिक सार्वजनिक निर्माण (आईपीओ) की संख्या के मामले में दुनिया में पहले स्थान पर, जबकि जुलाई गई पूंजी के मामले में तीसरे स्थान पर रहा। साल 2026 में आर्थिक वृद्धि बेहतर रहने का अनुमान है, जो बाजार को मजबूती को और पुष्टा करता है। शेयर मार्केट के आंकड़ों के मुताबिक, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की परिस्पर्धियां करीब 780 अरब डॉलर हो गई हैं।

मुख्य नियामक संस्था है। सेबी की ओर से बाजार अब कैपिटल मार्केट के तीसरे दौर की जारी रिपोर्ट बताती है कि भारत का पूंजी बाजार और बढ़ रहा है, जिसमें संस्थागत भागीदारी, खुदरा निवेशकों में वृद्धि और तकनीक का तेजी से उपयोग हो रहा है।

ईरान ने युद्ध समाप्त करने के लिए अमेरिका को दिया नया प्रस्ताव, ट्रंप ने बताया संदेह

DUBAI @ PTI : ईरान ने अमेरिका को भेजे नवीनतम प्रस्ताव में दोनों देशों के बीच गतिरोध के लिए जिम्मेदार मुद्दों को 30 दिनों के भीतर सुलझाने का आह्वान किया है। उसने कहा कि इसका उद्देश्य युद्धविराम को बढ़ाने के बजाय युद्ध को समाप्त करना है। ईरानी सरकार से जुड़ी मीडिया ने यह खबर दी। दूसरी ओर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह युद्ध समाप्त करने के लिए ईरान के एक नए प्रस्ताव पर संशय कर रहे हैं। लेकिन, उन्होंने ईरान के साथ कोई समझौता होने की संभावना पर सदेह भी जताया। राम कोई गलत हरकत करता है तो फिर से हमला किया जाएगा।

30 दिनों के भीतर गतिरोध के जिम्मेदार मुद्दों को सुलझाने का आह्वान

अमेरिकी प्रेसिडेंट डोनाल्ड ट्रंप ने कहा- प्रस्ताव पर संशय

ईरान के गलत हरकत करने पर फिर से किया जाएगा हमला

होर्मुज को अमेरिकी सेना की बना देंगे कब्रगाह : मोहसिन
ईरान के सीनियर अधिकारी मोहसिन रजाई ने अमेरिका को चेतावनी देते हुए कहा कि होर्मुज स्ट्रेट को अमेरिकी सेना की कब्रगाह बना दिया जाएगा। मोहसिन रजाई पहले ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड (आईआरजी) में कमांडर रह चुके हैं। उन्होंने अमेरिकी सेना को समुद्री लुटने (पाइरेट) बताते हुए कहा कि अमेरिका दुनिया का इकलौता ऐसा पाइरेट है, जिसके पास एक्स्प्रेस कैरियर हैं।

ईरान के सुरक्षा प्रतिष्ठानों से घनिष्ठ संबंध रखने वाली अर्ध-सरकारी नूर-न्यूज एजेंसीने खबर दी कि खाड़ी देश की ओर से भेजे गए 14 सूत्री प्रस्ताव में युद्धविराम की अर्थात् बढ़ाने के बजाय युद्ध को समाप्त का आह्वान किया गया है।

दो अलग-अलग सड़क हादसों में चार की हुई मौत, गोड्डा में जमकर हुआ बवाल

पलामू में रेलिंग से टकराई तेज रफ्तार बाइक, महागामा में डंपर ने बुलेट को मारी टक्कर, पुलिस कर रही जांच

PALAMU/GODDA: झारखंड के दो जिलों पलामू और गोड्डा में दो अलग-अलग सड़क हादसों में चार युवकों की मौत हो गई है। पलामू में शादी समारोह से लौट रहे युवकों की बाइक बेकाबू होकर रेलिंग से टकरा गई। इस हादसे में बाइक सवार दोनों युवकों की मौत हो गई। दूसरी घटना, गोड्डा जिले की है। यहां महागामा जा रहे युवकों की बुलेट को डंपर ने टक्कर मार दी। इस घटना में मौके पर ही दोनों युवकों ने दम तोड़ दिया था।

मेदिनीपुर ओवरब्रिज पर हुआ हादसा

PALAMU : झारखंड के पलामू जिला अंतर्गत मेदिनीपुर टाउन थाना क्षेत्र के रेड्मा ओवरब्रिज पर रविवार की सुबह हुए दर्दनाक सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान चैनपुर थाना क्षेत्र निवासी आनंद कुमार और मिशु कुमार के रूप में हुई है। टाउन थाना प्रभारी ज्योतिपाल राजवार ने घटना की पुष्टि की है। स्थानीय लोगों से मिली जानकारी के अनुसार, दोनों युवक बाइक से लेस्लीगंज क्षेत्र में एक शादी समारोह में शामिल होने गए थे। समारोह से लौटने के दौरान रेड्मा ओवरब्रिज पर उनकी बाइक अनियंत्रित होकर रेलिंग से टकरा गई। हादसे में दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और दोनों को तत्काल मेदिनीपुर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल भेजा गया, जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की प्रक्रिया शुरू कर दी है। हादसे की खबर मिलते ही अस्पताल में परिजनों और परिचितों की भीड़ उमड़ पड़ी। परिवार के लोगों का रो-रो कर बुरा हाल हो गया है। उधर, पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।



गम्हरिया गांव में ग्रामीणों ने कर दिया रोड जाम

GODDA : झारखंड के गोड्डा जिले में महागामा थाना क्षेत्र के गम्हरिया गांव में रविवार की सुबह हृदयविदारक घटना में बुलेट सवार दो युवकों की सड़क ही मौत हो गई। हादसे के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने रोड जाम कर दिया। मृतकों में विपिन कुमार (30) और सत्यम कुमार (21) शामिल हैं। विपिन बिहार के कटिहार का रहने वाला था, जबकि सत्यम गोड्डा के नुनाजोर का निवासी था। दोनों में गहरी दोस्ती थी। रविवार की सुबह दोनों दोस्त बुलेट बाइक से महागामा जा रहे थे। गोड्डा से निकलने के बाद गम्हरिया के पास विपरीत दिशा से आ रहे अनियंत्रित डंपर ने बुलेट सवार युवकों को अपनी चपेट में ले लिया। घटना महागामा थाना क्षेत्र के गोड्डा-महागामा राष्ट्रीय उच्च पथ -133 पर हुई। हादसे में युवकों की मौत के बाद वहां ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। आक्रोशित ग्रामीणों ने रोड जाम कर दिया। बताया जाता है कि दोनों दोस्त किसी काम से महागामा की ओर जा रहे थे। इसी दौरान डंपर ने दोनों युवकों को कुचल



हादसे के बाद सड़क जाम करते ग्रामीण

दिया, जिससे मौके पर ही दोनों युवक की मौत हो गई। घटना के बाद स्थानीय लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। घटना से आक्रोशित लोग तेज रफ्तार डंपर के परिचालन पर रोक लगाने की मांग पर अड़े हुए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि उक्त स्थल पर दर्जनों घटनाएं हो चुकी हैं, जिसमें करीब आधा दर्जन लोगों की मौत हो गई है। इधर घटना की सूचना मिलते ही महागामा थाना की पुलिस घटनास्थल पर

पहुंचकर दोनों शवों को एंबुलेंस से रेफरल अस्पताल महागामा ले गई, जहां परिजन एवं सगे-संबंधियों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। परिवार जनों की चीख-पुकार से अस्पताल परिसर का माहौल गर्मांगन हो गया। अस्पताल में देखने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी, जो भी देखने जाता उसकी आंखें नम हो जा रही थीं। महागामा क्षेत्र में लगातार हो रही सड़क दुर्घटनाओं से लोग काफी डरे-सहमे हैं।

BRIEF NEWS

नौकरी दिलाने के नाम पर 29 लाख की ठगी

DHANBAD : छत्तीसगढ़ के रहने वाले दो युवकों को रेलवे में नौकरी दिलाने के नाम पर धनबाद के ठगों ने ठगी की है। युवकों के पिता गुरुदेव प्रसाद से 29 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। गुरुदेव से उनके दोनों बेटों विकास चौहान और अविनाश चौहान को रेलवे में नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी की गई है। ठगी का आरोप मनीष कुमार, जितेन्द्र कुमार और बॉरेडर कुमार पर लगाया गया है। गुरुदेव प्रसाद के आवेदन पर सुराबहेला थाना में प्राथमिकी हुई है। छत्तीसगढ़ के रहने वाले गुरुदेव ने परिवार को बताया कि आरोपी जितेन्द्र कुमार न्यू गौघर कुसुंडा कोलियरी में जनरल मजदूर के पद पर कार्यरत है। वह बापुनगर, न्यू कार्मिक नगर सरायेवेल में निवास कार्य है। जितेन्द्र से उनकी मुलाकात जनवरी 2023 में धनबाद में एक शादी समारोह में हुई थी। जून 2023 और अगस्त 2023 में पुनः मुलाकात हुई और उसी के आवास पर उसके भाई बिरेंद्र कुमार एवं मनीष कुमार से हुई थी। मनीष इनका पड़ोसी है। इन सभी ने रेल में नौकरी लगाने का झांसा दिया। वह प्रलोभन में आ गए। गुरुदेव के बेटों को ग्रुप सी और कनीय अभियन्ता में नौकरी दिलाने का भरोसा दिया। इस एवज में इन तीनों ने मनीष और जितेन्द्र की पुत्री अमृति कुमारी के खाले में पांच बार में कुल 22 लाख रुपये लिए। इसके अतिरिक्त, इसी बीच तीन किस्तों में सात लाख रुपये नकद जितेन्द्र कुमार एवं उसके छोटे भाई बिरेंद्र कुमार को दिया। पैसा मिलने के बाद इन सबको ने विश्वास दिलाने के लिए रेलवे के जॉइनिंग लेटर एवं मेडिकल लेटर भी तैयार करा दिए। ट्रेनिंग के नाम पर पत्र बनाकर भेज दिया। वे दस्तावेज असली प्रतीत होते थे और इन्होंने का माध्यम से परिवार को भरोसे रखा गया। ट्रेनिंग के लिए इन सभी ने हावड़ा स्टेशन जाने को कहा। परन्तु खुद के स्तर से पता चला कि यह सारे दस्तावेज नकली एवं फर्जी हैं जब पैसा वापस मांगा गया तो तीनों बहाना बनाते रहे और परिवार को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी और साफ-साफ पैसे लौटाने से मना कर दिया।

सीएम ने ट्रेनों के विलंब पर रेलमंत्री से की हस्तक्षेप की मांग

RANCHI : झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने चांडील-टाटा रेल सेक्शन में यात्री ट्रेनों की लगातार देरी को लेकर गंभीर चिंता जताई है। उन्होंने इस मुद्दे को अस्वीकार्य बताते हुए रेलवे की प्राथमिकताओं पर सवाल खड़े किए हैं। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि पिछले दो वर्षों से इस रेलखंड पर यात्री ट्रेनों घंटों विलंब से चल रही हैं, जबकि उसी ट्रेक पर मालगाड़ियों का संचालन बिना किसी बाधा के जारी है। उन्होंने इसे केवल परिचालन की समस्या नहीं, बल्कि प्राथमिकता तय करने का विषय बताया। उन्होंने कहा कि इस स्थिति का सीधा असर झारखंड के हजारों दैनिक यात्रियों, श्रमिकों, छात्रों और नौकरियोंवालों पर पड़ रहा है, जिनका समय और सुविधा लगातार प्रभावित हो रही है। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से हस्तक्षेप की मांग की। गौरतलब है कि चांडील रेलवे स्टेशन तक ट्रेनों समय पर आ जाती हैं। लेकिन चांडील से टाटानगर आने में ट्रेनों को तकरीबन 3 से 4 घंटे लग जाते हैं। इसके चलते जमशेदपुर के लोगों में नाराजगी है। इसे लेकर टाटानगर रेलवे स्टेशन पर धरना दिया जा चुका है। हस्ताक्षर अभियान भी चला है।

झामुमो के नवनिर्वाचित जिलाध्यक्ष ने की मीटिंग

JAMSHEDPUR : झारखंड मुक्ति मोर्चा की नवगठित जिला समिति ने रिविवाल को एक बलक जिला अध्यक्ष विक्रम सोरेन के नेतृत्व में शहीद निर्मल महतो गेस्ट हाउस में की है। इसमें पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह केंद्रीय प्रवक्ता विनोद पांडे ने पार्टी को रिजट ओरिएंटेड बनाने की बात कही। बैठक में सांगठनिक समीक्षा कर पार्टी के आगामी कार्यक्रमों को लेकर चर्चा हुई। सांगठन को और अधिक सशक्त बनाने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

पानी के चलते बनखेता स्कूल में एक माह से मध्याह्न भोजन बंद

250 बच्चे योजना से वंचित, डीप बोरिंग नहीं होने से गहराया संकट

PHOTON NEWS PALAMU : 'रहितम पानी रखिए, बिन पानी सह सूख...' रहीमसक का यह प्रसिद्ध दोहा प्रखंड क्षेत्र के उत्कर्मित मध्य विद्यालय बनखेता में चरितार्थ होता दिख रहा है। यहां पानी के अभाव में पिछले एक महीने से मध्याह्न भोजन योजना ठप पड़ी है, जिससे 250 नामांकित छात्र-छात्राएं प्रभावित हो रहे हैं। जानकारी के अनुसार, विद्यालय में तीन अप्रैल से मध्याह्न भोजन योजना बंद है। जबकि सरकार के स्पष्ट निर्देश हैं कि बच्चों को एक भी दिन इस योजना से वंचित नहीं रखा जाए। बावजूद इसके पानी की किल्लत के कारण बच्चों को भोजन नहीं मिल पा रहा है। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक को ही विभाग के उच्च अधिकारियों को दे दी गई थी। उन्होंने बताया कि पिछले दो वर्षों से विद्यालय में पानी की समस्या बनी हुई है। पहले जिस बोरिंग से पानी मिलता था, वह पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। कई बार साफ-सफाई के बावजूद पानी नहीं निकला। अब डीप बोरिंग के बिना समस्या का समाधान संभव नहीं है। विद्यालय प्रबंधन समिति की अध्यक्ष ममता देवी ने बताया कि इस संबंध में प्रखंड से लेकर जिला स्तर तक आवेदन दिया जा चुका है, लेकिन अब तक कोई ठोस पहल नहीं हुई है। इसके कारण बच्चे एक-एक बूंद पानी के लिए तरस रहे हैं और मध्याह्न भोजन योजना ठप है।



बनखेता स्कूल

जिन विद्यालयों में पानी की समस्या है, उन्हें लिखित कर इसकी सूचना जिला को दी जाएगी। साथ ही वैकल्पिक जल व्यवस्था सुनिश्चित कर मध्याह्न भोजन योजना को जल्द पुनः शुरू कराया जाएगा।

-नागेद प्रसाद सिंह, बीईईओ, पंडवा

नवल किशोर मेहता ने बताया कि इस समस्या की सूचना तीन अप्रैल

नशीला पदार्थ खिलाकर चालक को किया बेहोश, कार ले भागे बदमाश

KHUNTI : झारखंड के खूंटी जिले में एक सनसनीखेज वारदात सामने आई है, जहां दो अपराधियों ने कार चालक को नशीला पदार्थ खिलाकर बेहोश कर दिया और उसकी कार लेकर फरार हो गए। घायल चालक को पुलिस ने अस्पताल में भर्ती कराया है, जहां उसका इलाज चल रहा है। बताया जा रहा है कि ओडिशा के अंगुल जिले के डेराजंगा, जरापाड़ा से दो व्यक्तियों ने एक ट्रैवल एजेंसी के जरिए अर्टिका कार बुक की थी। चालक दुर्घटना साहू को बताया गया कि उन्हें रांची से करीब 30 किलोमीटर आगे जाना है और फिर परिवार के कुछ सदस्यों को लेकर वापस ओडिशा लौटना है। योजना के मुताबिक चालक उन्हें लेकर रांची पहुंचा। रिग रोड स्थित दलादिली चौक के पास एक होटल से मीट-भात पैक कराया गया और दूसरी दुकान से मिठाइयां खरीदी गईं। इसके बाद तीनों चुकरू मोड़ के पास पहुंचे, जहां पेड़ के नीचे बैठकर खाना खाया। खाना खाने के कुछ ही देर बाद चालक दुर्घटना साहू जैसे ही कार में बैठा, वह अचानक बेहोश हो गया। उसे इसके बाद की कोई जानकारी नहीं है। आशंका है कि अपराधियों ने उसे नशीला पदार्थ खिलाया और बेहोशी की हालत में पिटाई कर मृत समझकर वहीं छोड़ दिया। स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल चालक को खूंटी सदर अस्पताल में भर्ती कराया। फिलहाल उसकी हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है।



अस्पताल में इलाजगत चालक

सारंडा में अवैध सोना खनन का आरोप, बाहरी लोगों को गांव छोड़ने का निर्देश

CHAIBASA : पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा क्षेत्र में अवैध सोना खनन का मामला सामने आया है। आरोप है कि मनोहरपुर प्रखंड की विडिया पंचायत स्थित बिनुवा टोला (अंकुवा) में कोयना नदी के किनारे महाराष्ट्र और केरल के तीन लोग पिछले एक सप्ताह से मशीन से सोना निकाल रहे थे। ग्रामीणों के कई विरोध के बाद तीनों को गांव छोड़ने का निर्देश दिया गया। सूत्रों के अनुसार तीनों व्यक्ति बिनुवा गांव में एक ग्रामीण के घर ठहर कर नदी किनारे जमीन की खुदाई कर रहे थे। इस गतिविधि की जानकारी मिलते ही ग्राम रक्षा समिति ने तुरंत खिड़िया ओपी पुलिस को दूरभाष पर सूचना दी। इसमें जिन लोगों की पहचान की गई है, उनमें महाराष्ट्र के 38 वर्षीय समाधान सुरेश गुवर, महाराष्ट्र के 30 वर्षीय ऋषिकेश मानिक निवल और केरल के 54 वर्षीय अब्दुल मुतलिब बी. एम शामिल हैं। दावा किया जा रहा है कि तीनों पिछले एक सप्ताह से अवैध खनन में जुटे थे। मामले की भनक लगने पर ग्राम रक्षा समिति के सदस्यों और ग्रामीणों ने एकजुट होकर विरोध दर्ज कराया। ग्रामीणों ने संबंधित व्यक्तियों को तत्काल गांव छोड़ने का निर्देश दिया।

पीएम आवास के फ्लैट में 6 मई को गृहप्रवेश पूजा, लाभार्थियों ने खुद ही कर दिया एलान

PHOTON NEWS JSR :

बिरसानगर क्षेत्र में बन रहे प्रधानमंत्री आवास योजना के 200 से ज्यादा लाभार्थियों ने गृह प्रवेश पूजा कराने का एलान खुद ही कर दिया है। यह लाभार्थी कई महीने से जेएनएसी का इंतजार कर रहे थे। इन लोगों ने बैंक से लोन लेकर आवास की रकम जमा कर दी है। अब बैंक की किस्त भी चुका रहे हैं और फ्लैट की चांकी नहीं मिलने की वजह से अपने किराए के घरों का किराया भी दे रहे हैं। इन लोगों ने जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय से रविवार को बात की और उन्हें अपने फैसेल से अवगत कराया है। रविवार की सुबह जमशेदपुर पश्चिम के विधायक सरयू राय के बिष्टुपुर स्थित आवास पर पहुंचे। इन्होंने सरयू राय से अपना दर्द साझा किया। लोगों ने



विधायक सरयू राय के आवास पर पहुंचे लाभार्थी

उनसे कहा कि उनकी आर्थिक स्थिति बेहद खराब हो गई है। किराये के मकान में रह रहे हैं। पीएम आवास योजना का पूरा पैसा जमा कर देने के बावजूद सरकार ने अभी तक उनके मकान की चाबी उन्हें नहीं दी। इससे उनकी मौली हालत और खराब होती जा रही है। जिन लोगों ने बैंकों से कर्ज ले रखा है, बैंक वाले लगातार उनकी ईएमआई काट रहे हैं। किराया जा रहा है, सो अलग।

इनकी बातों को सुनने के बाद सरयू राय ने कहा कि बिरसानगर क्षेत्र में 21 ब्लॉक बनने थे। मात्र दो ब्लॉक ही बने हैं। दो ब्लॉक में लोगों को मकान भी अलॉट हो चुके हैं। लोगों ने बिजली के लिए आवेदन भी कर दिया गया है। लोग चाहते हैं कि वे अपने घर में जाएं। लोगों को किराया देना पड़ रहा है। बैंक कर्ज की किस्त भी देनी पड़ रही है। सरकार को लगता है मानो सांप सूंघ गया है।

सड़क निर्माण करा रही एमजीसीपीएल कंपनी के कैंप में लगी भीषण आग, दो मजदूर झुलसे

PHOTON NEWS GARHWA : मेराल थाना क्षेत्र के अकलवानी स्थित एमजीसीपीएल के कैंप में आग लगने से लाखों रुपए का नुकसान हो गया है। शनिवार की देर रात मजदूर तथा स्टाफ के रहने वाले सैट से बने कैंप में अचानक भीषण आग लग गई। उस वक्त खाना खाने बनाने का काम चल रहा था। वहां के कर्मियों के अनुसार बिजली के तार में शॉर्ट सर्किट होने के कारण आग लगने की संभावना जताई जा रही है। आग इतनी भीषण थी कि देखते ही देखते स्टाफ के रहने वाले तीन ब्लॉक को अपने चपेट में ले लिया। कैंप में रह रहे स्टाफ तथा मजदूर अपना सामान को छोड़कर किसी तरीके से बाहर निकाल कर जान बचाए। मजदूरों द्वारा आग को बुझाने के लिए काफी प्रयास किया गया, लेकिन वह असफल रहे। अंत में फायर ब्रिगेड की टीम भी दो दमकल



अगलानी के बाद जला हुआ सामान

गाड़ी के साथ मौके पर पहुंच गई लेकिन जब तक फायर ब्रिगेड आ गए पर काबू पाते तीन चार ब्लॉक पूरी तरह से जलकर राख हो गया। मजदूरों की मानें तो शरीर पर जो कपड़ा था उससे अलावा एक पैसा, मोबाइल, आधार कार्ड तथा अन्य जरूरी कागजात सब कुछ जलकर राख हो गया। आग बुझाने के क्रम में नेपाल साहू, महादेव श्रद्धा सहित कुछ लोग झुलसे गए। इनको मेराल सरकारी अस्पताल में भेज कर

इलाज कराया गया। सभी खतरे से बाहर हैं। उधर घटना की जानकारी मिलने के बाद थाना प्रभारी विष्णु कांत भी दलबल के साथ घटना पर पहुंचकर काफी देर तक जम रहे। एनएच 39 का निर्माण कर रही एमजीसीपीएल कंपनी के सीनियर सेप्टी ऑफिसर राजेश पचौरी ने बताया कि शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगी तथा काफी प्रयास के बाद भी आपको काबू में नहीं किया जा सका जिससे यह नुकसान हुआ।

उत्कीर्द तोपचांची में एयरपोर्ट निर्माण की मांग, जयराम और अरूप का मिला समर्थन

एयरपोर्ट के मामले पर राजनीति से ऊपर उठ कर हो पहल : जयराम

● श्रीपार्श्वनाथ धनबाद एयरपोर्ट मिशन के लोगों ने दोनों विधायकों से की मुलाकात

PHOTON NEWS DHANBAD: जिले में एयरपोर्ट बनाने की मांग तेज होते जा रही है। एक ओर धनबाद के सांसद और अन्य सभी विधायक एयरपोर्ट को लेकर राज्य व केंद्र सरकार पर दायरोपण कर रहे हैं, वहीं मिशन एयरपोर्ट धनबाद के लोगों ने औद्योगिक और धार्मिक महत्व को देखते हुए तोपचांची में श्री पार्श्वनाथ धनबाद एयरपोर्ट बनाने की मांग की है। अपनी मांग को लेकर मिशन के लोग विधायकों का समर्थन जुटाने में लगे हुए हैं। इसके लिए रविवार को दुमरी विधायक जयराम महतो और



जयराम महतो को मांगपत्र सौंपते लोग

निरस विधायक अरूप चटर्जी को मांग पत्र सौंपा गया। इसके अलावा इस मांग पर झारखंड इंडस्ट्रीज एंड ट्रेड एसोसिएशन ने भी अपना समर्थन दिया है।

पत्र सौंपने वालों में प्रवीण गोधा, सोमनाथ पृथ्वी, सम्राट चौधरी, अजय मुखर्जी, अविनाश पांडेय समेत अन्य शामिल थे।

मत करें राजनीति

विधायक जयराम महतो ने कहा कि धनबाद में एयरपोर्ट बनाने के मामले में राजनीति से ऊपर उठ कर पहल होनी चाहिए। एयरपोर्ट का औद्योगिक क्षेत्र में होना समय की मांग है। बेहतर कनेक्टिविटी ही विकास की नींव है और एयरपोर्ट किसी भी क्षेत्र को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जोड़ने का सबसे प्रभावी माध्यम है। महतो ने कहा कि राजनीति अपनी जगह है। जनहित के मुद्दों पर एकजुट होकर प्रयास करने से ही सफलता मिलेगी। धनबाद, बोकारो और गिरिडीह जिला औद्योगिक क्षेत्र हैं। इस नजर से भी यहां एयरपोर्ट का निर्माण होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन जिलों में कोयला, स्टील और अन्य उद्योगों के कारण देश-विदेश से निवेशकों और विशेषज्ञों का आना-जाना लगा रहता है। पार्श्वनाथ पर्वत जैसे विश्व प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल होने के कारण हर वर्ष हजारों श्रद्धालुओं का आना जाना लगा रहता है। एयरपोर्ट बनने से धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ा बढ़ावा मिलेगा।

धनबाद के लिए एयरपोर्ट जरूरी

विधायक अरूप चटर्जी ने कहा कि धनबाद के लिए एयरपोर्ट बहुत जरूरी है। धनबाद और इसके आसपास के जिले औद्योगिक रूप से मजबूत हैं। धनबाद में शिक्षण संस्थान और अनुसंधान परिषद भी हैं। इसलिए जरूरी है कि धनबाद में एयरपोर्ट बने।

शराब के नशे में पति ने पत्नी पर टांगी से किया हमला, हालत गंभीर

PALAMU : जिले के पांकी थाना क्षेत्र के कोनवाई गांव में परेल् विवाद के दौरान शराब के नशे में पति ने पत्नी पर लाठी-डंडा और टांगी से हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। घायल महिला की पहचान रानी देवी (28) के रूप में हुई है, जिनकी हालत चिंताजनक बनी हुई है। घायल रानी देवी ने बताया कि शनिवार रात उसका पति विनोद टाकुर नशे की हालत में घर पहुंचा और बच्चों के साथ मारपीट करने लगा। जब उसने इसका विरोध किया तो आरोपी ने उसे भी लाठी-डंडा और टांगी से बेरहमी से पीटा। टांगी के वार से उसका दाहिना पैर गंभीर रूप से जख्मी हो गया। घटना की जानकारी ग्रामीणों ने महिला के मायके वालों को दी। मौके पर पहुंचे परिजनों ने रानी देवी को पहले पांकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए मेदिनीपुर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल रेफर कर दिया। वहां इलाज जारी है, लेकिन उसकी हालत अब भी गंभीर बनी हुई है। स्वजनों का आरोप है कि पति विनोद टाकुर, देवर सजय टाकुर सहित ससुराल पक्ष के लोग अक्सर छोटी-छोटी बातों पर रानी देवी के साथ मारपीट व प्रताड़ना करते थे। इस संबंध में मायके पक्ष की ओर से पांकी थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। मामला दर्ज होने के बाद पुलिस पूरे प्रकरण की जांच में जुट गई है।

BRIEF NEWS

नारी शक्ति वंदन अधिनियम पर समय दें सीएम : बाबूलाल रान्ची : नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने रविवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम जैसे महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के लिए समय नहीं देना दुर्भाग्यपूर्ण है। प्रदेश कार्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी लगातार मुख्यमंत्री से मिलने का समय मांग रही थी, लेकिन कोई सकारात्मक जवाब नहीं मिला। उन्होंने बताया कि पार्टी के महामंत्री अमर कुमार बाउरी 30 अप्रैल से ही मुख्यमंत्री से मुलाकात का समय लेने का प्रयास कर रहे थे ताकि 3 मई को इस विषय पर चर्चा की जा सके। उन्होंने कहा कि विषय स्पष्ट रूप से बताने के बावजूद मुख्यमंत्री ने समय देना उचित नहीं समझा, जिसके बाद पार्टी ने उन्हें पत्र लिखकर अपनी बात रखने का निर्णय लिया।

बहुत हुई महंगाई की मार, अब विदा हो मोदी सरकार : सुप्रियो रान्ची : झारखंड की राजनीति में महंगाई का मुद्दा फिर से गरमा गया है। झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। रान्ची में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा कि बहुत हुई महंगाई की मार, अब विदा हो मोदी सरकार का समय आ गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि 2014 से 2026 के बीच रोजमर्रा की जरूरी वस्तुओं की कीमतें लगभग दोगुनी हो गई हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने 2014 में महंगाई कम करने का वादा किया था, लेकिन अब हालात इसके उलट हो गए हैं। रसोई गैस, पेट्रोल और डीजल की कीमतें आम लोगों की पहुंच से बाहर होती जा रही हैं। उन्होंने विशेष रूप से कॉम्प्लिक्स गैस सिलिंडर की कीमतों का जिक्र करते हुए कहा कि 2014 में इसकी कीमत करीब 900 रुपये थी जो अब बढ़कर लगभग 3000 रुपये तक पहुंच गई है।

कांके के हुसीर गांव में 9 को होगा जलसा-ए-दस्ताखंदी कार्यक्रम
KANKE : कांके प्रखंड के हुसीर गांव स्थित मदरसा अरबिया तजवीदुल कुरआन हुसीर में 9 मई को जलसा-ए-दस्ताखंदी कार्यक्रम का आयोजन होगा। इसमें मदरसा में पढ़ने वाले 15 हफीजों की दस्ताखंदी की जाएगी। इस दौरान जलसा में मुस्लिम धर्म के देश के जानेमाने ओलेमा और शायर भी शामिल होंगे। मुख्य रूप से मौलाना अबु तालिब रहमानी सा. कलकत्ता और मौलाना अशरफ अब्बास सा.दारुल उलूम देवबंद शामिल होंगे। शायर दिल खेराबादी व असद आजमी भी शामिल होंगे। इनके अलावा क्षेत्र के ओलेमा मौजूद होंगे। हुसीर के सदर अंजुमन इस्लामिया और मदरसा के जिम्मेदारान ने बताया कि जलसा में हजारों की भीड़ उमड़ने की संभावना है। इसके लिए पूरी तैयारी बुद्ध स्तर पर चल रही है।

लाखों रुपये के गमलों में एक भी पौधा नहीं, चढ़ गए अनदेखी की भेंट

VIVEK SHARMA, RANCHI : राजधानी रान्ची के कांटाटोली फ्लाईओवर को शहर को जाम मुक्त बनाने के उद्देश्य से निर्माण कराया गया है। इसकी खूबसूरती बढ़ाने के उद्देश्य से फ्लाईओवर के डिवाइडर पर लगाए गए सीमेंट के गमलों में कभी रंग-बिरंगी पौधे लगे थे। लेकिन, ये अनदेखी की भेंट चढ़ गए हैं। लाखों रुपये की लागत से लगाए गए इन गमलों में अब एक भी पौधा नहीं बचा है। स्थिति ये है कि अब ये गमले भी टूटकर बर्बाद हो रहे हैं। जानकारी के अनुसार, फ्लाईओवर के डिवाइडर

कांटाटोली फ्लाईओवर के डिवाइडर पर किया गया था खूबसूरत इंतजाम एक हजार गमलों में लगाए गए थे तरह-तरह के सजावटी पौधे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने किया था फ्लाईओवर का उद्घाटन रख-रखाव नहीं होने के कारण अब टूटकर बर्बाद होने लगे हैं गमले

नगर निगम और संबंधित विभाग की लापरवाही पर उठ रहे सवाल



कांटाटोली फ्लाईओवर के डिवाइडर पर खाली पड़े गमले पर करीब एक हजार सीमेंट के प्रकार के सजावटी पौधे लगाए गए थे। इसका उद्देश्य शहर की सुंदरता बढ़ाना और हरियाली को प्रोत्साहित करना था। फ्लाईओवर के उद्घाटन के समय यह दृश्य आकर्षण का केंद्र बना हुआ था और लोगों ने

पर्यावरण के अनुकूल विकास की सोच
इस फ्लाईओवर का उद्घाटन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पिछले साल किया था। उद्घाटन के दौरान इसे आधुनिक और पर्यावरण के अनुकूल विकास की सोच अपना उदाहरण बताया गया था। लेकिन, कुछ ही महीनों में इसकी स्थिति बदतर हो गई है। रख-रखाव के अभाव में पौधे सूख गए और अब गमले खाली पड़े हैं। स्थिति सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। कई जगहों पर गमले टूटने भी लगे हैं, जिससे न सिर्फ सौंदर्य प्रभावित हो रहा है, बल्कि दुर्घटना का खतरा भी बढ़ गया है।

शुरुआत में निगम ने की थी पौधों की भरपूर देखभाल
स्थानीय लोगों का कहना है कि शुरुआत में तो नियमित देखभाल की गई, लेकिन बाद में विभाग ने इस ओर ध्यान देना बंद कर दिया। नगर निगम और संबंधित विभाग की इस लापरवाही पर सवाल उठने लगे हैं। लोगों का कहना है कि यदि इतनी बड़ी राशि खर्च की गई थी तो उसके रख-रखाव की भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए थी। ये पूरी तरह से पैसे की बर्बादी है। यदि समय पर पौधों को पानी, खाद और सुरक्षा नहीं दी जाए तो इस तरह की स्थिति उत्पन्न होना तय है। शुरुआत में तो पौधों की भरपूर देखभाल की गई। आज की स्थिति किसी से छिपी नहीं है।

सांसद सांस्कृतिक महोत्सव-सह-स्वदेशी मेला का समापन, अर्जुन राम मेघवाल बोले-

स्थानीय कलाकारों व लोगों के लिए प्रेरणा का बनेगा मंच

PHOTON NEWS RANCHI : आठे हाउस में तीन दिवसीय सांसद सांस्कृतिक महोत्सव-सह-स्वदेशी मेला का समापन रविवार को हो गया। मेला 1 मई से आठे हाउस में शुरू हुआ था। समापन के मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल शामिल हुए। उन्होंने कहा कि 1 मई को बुद्ध पूर्णिमा के दिन महोत्सव प्रारंभ हुआ था और आज समापन उत्सव हम मना रहे हैं। लेकिन कल भी हम उत्सव मनाएंगे। उन्होंने सांसद सह केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री को बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि ऐसा आयोजन स्थानीय कलाकारों के साथ लोगों के लिए प्रेरणा का मंच बनेगा।

तंदे मातरम के गौरवशाली 150 वर्ष पूर्ण होने पर किया गया था महोत्सव का आयोजन



कार्यक्रम में भाग लेते केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल व अन्य

ऑपरेशन सिंदूर की पेंटिंग की लगाई गई प्रदर्शनी
रान्ची के ईशान सिंह ने तेरने का 10 घंटे का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। श्री लंका से भारत की धनुष कोटि तक तेरने का रिकॉर्ड बनाने पर उसे समिति द्वारा 1 लाख 1 हजार रुपया का पुरस्कार दिया गया। ऑपरेशन सिंदूर पर रान्ची के बच्चों के द्वारा बनाई गई 400 पेंटिंग की प्रदर्शनी लगाई गई। बच्चों ने ऑपरेशन सिंदूर के शौर्यगाथा को केनवास पर उतारने का कार्य किया। वहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम के तहत 70 से भी ज्यादा स्कूलों और महाविद्यालय के छात्रों ने रंगारंग प्रस्तुति दी।

लोकल प्रोडक्ट्स की बिक्री
महिलाओं द्वारा निर्मित पापड़, खजला, बड़ी, मंगोड़ी, विभिन्न प्रकार के अचार, ब्लैक राइस, रेड राइस, पनर्जी चॉकलेट, मडुवा के लड्डू, रागी की कुकीज, चॉकलेट सहित कई उत्पाद की लोगों ने जमकर खरीदारी की। इसी के साथ हर्बल मसाला, धरेलू दवा, मेटल की तस्वीर, जूट बैग, ऊन से बने हैंडमेड प्लावर, लिपिन आर्ट, ब्लू कार्ड पेंटिंग की तस्वीर भी आकर्षण का केंद्र रही। श्री अन आहार कुटीर में झारखंड के पारंपरिक व्यंजनों सहित मोटे अनाज से बने मडुवा समोसा, मडुवा चोप, निमकी, भुजिया चॉकलेट, बिरिचट जैसे खाद्य पदार्थ का लोगों ने स्वाद चखा।

आयोजन के जरिये धरेलू उत्पाद मिलेगी। उन्होंने कहा कि स्वदेशी को जीवन में उतारना होगा। हम सभी कोशिश करे कि मोटे अनाज का सेवन करें।
पूर्णतः स्वदेशी को समर्पित मेला केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ

बॉयफ्रेंड ने नशीला पदार्थ खिलाकर किया दुष्कर्म, वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड

PHOTON NEWS RANCHI : राजधानी रान्ची में एक युवती ने अपने बॉयफ्रेंड पर गंभीर आरोप लगाते हुए कांके थाना में लिखित शिकायत दी है। पीड़िता ने आरोप लगाया है कि उसके बॉयफ्रेंड ने नशीला पदार्थ खिलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया और उसकी आपत्तिजनक फोटो व वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया। अब पीड़िता ने अपने बॉयफ्रेंड पर धमकी देने का आरोप लगाया है। साथ ही उसके बॉयफ्रेंड ने ये भी कहा है कि जहां शिकायत करना है कर लो कोई मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।



लंबे समय तक शारीरिक संबंध बनाए और बाद में उन वीडियो के आधार पर उसे ब्लैकमेल करने लगी। पीड़िता का कहना है कि आरोपी लगातार उससे पैसे की मांग करता रहा और इनकार करने पर वीडियो वायरल करने की धमकी देता था। युवती ने यह भी आरोप लगाया है कि आरोपी अपने परिजनों, खासकर अपने मामा के नाम पर उसे धमकाता है और कहता है कि उसके खिलाफ

कांके विधायक सुरेश कुमार बेटा को बनाया गया कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष
KANKE : कांग्रेस नेता नीरज भोक्ता और कांके विधायक सुरेश कुमार बेटा को कांग्रेस पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष के पद से मनोनीत किया है। गौरतलब है कि झारखंड कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने नई प्रदेश कमिटी गठित कर ली है। रविवार को सूचना जारी कर दी गई है। इसमें 229 पदाधिकारियों को शामिल किया गया है। इस कमिटी में 16 उपाध्यक्ष, 43 महासचिव, 81 सचिव, 44 संयुक्त सचिव और 44 को-ऑर्डिनेटर शामिल हैं।

जेएसएलपीएस व आईआईएम कोलकाता के बीच हुए समझौते के बाद तेज हुई तैयारी

50 हजार महिला उद्यमियों को दिया जाएगा आधुनिक प्रशिक्षण

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड में महिला उद्यमिता को नई दिशा देने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी (जेएसएलपीएस) और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कोलकाता (आईआईएम कोलकाता) के बीच हुए समझौते के बाद अब प्रशिक्षण कार्यक्रम को जमीन पर उतारने की तैयारी तेज हो गई है। इसी कड़ी में आईआईएम कोलकाता की टीम के साथ जेएसएलपीएस और फील्ड स्तर के अधिकारियों के साथ मिलकर प्रशिक्षण मॉड्यूल को अंतिम रूप देने पर मंथन चल रहा है। महिलाओं को किस तरह से चरणबद्ध और प्रभावी तरीके से



प्रशिक्षण दिया जाए, इसकी पूरी रूपरेखा तैयार की जा रही है। इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के तहत राज्य के सभी 24 जिलों के 264 प्रखंडों में करीब 50 हजार महिला उद्यमियों को आधुनिक व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सखी मंडल की दीर्घियों को पारंपरिक व्यवसाय से आगे बढ़ाकर उन्हें संगठित और प्रतिस्पर्धी बाजार से जोड़ना है। प्रशिक्षण में महिलाओं को बिजनेस प्लान तैयार करने, उत्पाद की ब्रांडिंग और पैकेजिंग, मार्केट लिंकिंग, डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग, लागत प्रबंधन और मुनाफा बढ़ाने की रणनीतियों की व्यावहारिक जानकारी दी जाएगी। साथ ही चयनित महिला उद्यमियों को इनक्यूबेशन तकनीक के जरिए विशेष प्रशिक्षण देकर उनके व्यवसाय को बड़े स्तर तक विकसित करने पर जोर रहेगा।

बाजार के अनुसार प्रशिक्षित बनेंगी महिलाएं
इस पहल का उद्देश्य न केवल नई महिला उद्यमियों को तैयार करना है, बल्कि पहले से व्यवसाय कर रही महिलाओं को भी आधुनिक बाजार की जरूरतों के अनुरूप सशक्त बनाना है। इससे राज्य में महिला स्वरोजगार को बढ़ावा मिलने के साथ उनकी आय में वृद्धि और आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

महिलाओं को सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह प्रशिक्षण हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध होगा। वीडियो मॉड्यूल के माध्यम से भी सीखने की व्यवस्था होगी, वहीं महिलाएं ऑनलाइन संदेश के जरिए अपने सवाल पूछकर विशेषज्ञों से समाधान प्राप्त कर सकेंगीं।

मुख्य सचिव ने पूरी की जनगणना की स्व-गणना प्रक्रिया, लोगों से सक्रिय भागीदारी की अपील



स्व-गणना प्रक्रिया को पूरी करते मुख्य सचिव अविनाश कुमार व अन्य

PHOTON NEWS RANCHI : मुख्य सचिव अविनाश कुमार ने जनगणना-2027 के तहत स्व-गणना की प्रक्रिया पूरी कर अभिवान में सक्रिय और उत्साहपूर्ण भागीदारी का संदेश दिया। राज्य में 1 मई से 15 मई तक स्व-गणना का कार्य चल रहा है। इसी क्रम में रविवार को मुख्य सचिव ने स्वयं इस प्रक्रिया को पूरा किया। उन्होंने कहा कि जनगणना जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य में आम नागरिकों की भागीदारी बेहद जरूरी है। स्व-गणना के माध्यम से लोग स्वयं अपनी जानकारी दर्ज कर सकते हैं, जिससे प्रक्रिया अधिक पारदर्शी और सटीक बनती है।

महाधिवक्ता ने भी पूरी की प्रक्रिया
झारखंड उच्च न्यायालय के महाधिवक्ता राजीव रंजन मिश्रा ने जनगणना-2027 के तहत रविवार को स्व-गणना (सेल्फ एन्यूमरेशन) की प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी कर ली। यह प्रक्रिया डिजिटल माध्यम से की जा रही है, जिसमें नागरिक स्वयं अपनी जानकारी दर्ज कर रहे हैं। इस मौके पर जनगणना कार्य निदेशालय, झारखंड के निदेशक प्रभात कुमार, रांची नगर निगम के नगर आयुक्त सुशांत गौरव, संयुक्त निदेशक डॉ. सत्येंद्र कुमार गुप्ता, जिला सांख्यिकी अधिकारी शोभाशंख बैठा तथा सहायक निदेशक ज्ञानचंद्र महतो सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

प्रशासनिक जानकारी के अनुसार, 15 मई के बाद जनगणना के अगले चरण में मकान सूचीकरण एवं मकान गणना का कार्य 16 मई से 14 जून 2026 तक पूरे राज्य में

संचालित किया जाएगा। इस दौरान प्रगणक घर-घर जाकर डेटा संग्रह करेंगे। सभी जिलों में इस कार्य को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई हैं।

तमाड़ में 700 किलो अफीम-डोडा बरामद पुलिस के पहुंचने से पहले तस्क़र फ़रार

PHOTON NEWS RANCHI : राजधानी रान्ची के तमाड़ थाना क्षेत्र में पुलिस ने नशा तस्क़रों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए करीब 700 किलो अफीम-डोडा बरामद किया है। यह खेप जंगल में छिपाकर रखी गई थी, जिसे पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर जन्म किया। इस कार्रवाई के बाद इलाके में सक्रिय तस्क़री नेटवर्क का खुलासा हुआ है। वहीं तस्क़र पुलिस के पहुंचने से पहले ही फरार हो गए।



जंगल में छिपाकर रखा गया डोडा व पुलिस के जवान

जानकारी के अनुसार रगड़ी मोड़ के पास कदमडोह इलाके में पहाड़ी की तलहटी स्थित जंगल में तस्क़रों ने 21 बोरा डोडा गट्टे में छिपाकर रखा था। पुलिस ने योजनाबद्ध तरीके से छापेमारी करते हुए सभी बोरे बरामद कर लिए।

विशेष टीम गठित की गई और उनके नेतृत्व में छापेमारी की गई। हालांकि पुलिस के पहुंचने से पहले ही तस्क़रों को भनक लग गई और ये घने जंगल का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गए। पुलिस अब फरार तस्क़रों की पहचान और गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी कर रही है।

कैडर रिज्यू कमिटी में सचिवालय सेवा के दो सदस्य किए गए शामिल

■ विवाद के कारण राज्य सरकार ने कमिटी में किया आंशिक बदलाव
■ कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग ने जारी किया आदेश

संघ ने 28 अप्रैल को प्रोजेक्ट भवन में कैडर रिज्यू कमिटी को भंग करने की मांग को लेकर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया था। संघ का कहना था कि कमिटी में सेवा का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है और टर्म्स ऑफ रेफरेंस में भी स्पष्टता की कमी है। हालांकि, कैबिनेट मंत्री इरफान अंसारी और सुदिव्य कुमार के हस्तक्षेप के बाद कमिटी को भंग करने का निर्णय नहीं लिया गया। इसके बजाय सरकार ने बीच का रास्ता निकालते हुए सचिवालय सेवा के दो प्रतिनिधियों को कमिटी में शामिल करने का फैसला किया। कमिटी की संरचना में राजस्व पर्यद के सदस्य को अध्यक्ष, वित्त विभाग, भू-राजस्व विभाग और कार्मिक विभाग के सचिव को सदस्य बनाया गया है।

PHOTON NEWS RANCHI : झारखंड सचिवालय सेवा के कैडर रिज्यू को लेकर चल रहे विवाद के बीच राज्य सरकार ने कमिटी में आंशिक बदलाव किया है। सचिवालय सेवा संघ के अध्यक्ष रितेश कुमार और महासचिव राजेश कुमार को कैडर रिज्यू कमिटी में सदस्य के रूप में शामिल किया गया है। इस संघर्ष में कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग ने आदेश जारी कर दिया है। गौरतलब है कि सचिवालय सेवा

समाचार सार

सिदगोड़ा में टाटा स्टीलकर्मियों के घर दिनदहाड़े चोरी



JAMSHEDPUR : सिदगोड़ा थाना क्षेत्र में रविवार को दिनदहाड़े चोरी की बड़ी घटना सामने आई है। अमल संघ के पास स्थित एक क्वार्टर को निशाना बनाते हुए चोरों ने नकद रुपये और लाखों के गहनों पर हाथ साफ कर दिया। घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल है और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल उठने लगे हैं। यह वारदात क्वार्टर नंबर एल 4/39 में हुई, जहां टाटा स्टील के कर्मचारी राकेश कुमार झा रहते हैं। बताते हैं राकेश कुमार झा अपने परिवार के साथ शादी समारोह में शामिल होने के लिए गांव गए हुए थे। घर की देखरेख के लिए उन्होंने चाबी अपने एक परिचित रिश्तेदार को दी थी। रविवार सुबह करीब 8 बजे रिश्तेदार घर बंद कर द्यूटी पर चला गया। इसी दौरान चोरों ने सुनसान घर को निशाना बनाया। वे पीछे के रास्ते से घर में घुसे और दरवाजा तोड़कर अंदर प्रवेश किया। इसके बाद चोरों ने अलमारी का लॉक तोड़कर करीब 10 से 12 हजार रुपये नकद और लाखों रुपये के सोने-चांदी के गहने चोरी कर लिए। शाम करीब 4 बजे जब राकेश कुमार झा अपने परिवार के साथ लौटे, तो घर की हालत देखकर स्तब्ध रह गए। पीछे का दरवाजा टूटा हुआ था, अलमारी खुली पड़ी थी और पूरे कमरे में सामान बिखरा हुआ था। घटना देखकर परिवार के होश उड़ गए। सूचना मिलते ही सिदगोड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की और इलाके में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है, ताकि आरोपियों की पहचान की जा सके। स्थानीय लोगों का कहना है कि दिनदहाड़े इस तरह की चोरी बेहद चिंताजनक है। लोगों ने पुलिस गश्त बढ़ाने और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की मांग की है। फिलहाल पुलिस ने जल्द ही चोरों की गिरफ्तारी का भरोसा दिलाया।

टाटानगर स्टेशन पर मोबाइल चोरी का पर्दाफाश



JAMSHEDPUR : टाटानगर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुरक्षा को लेकर चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और सरकारी रेलवे पुलिस (जीआरपी) की संयुक्त टीम को बड़ी सफलता मिली है। शनिवार की देर रात कार्रवाई करते हुए टीम ने एक शांति मोबाइल चोर को रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान बागबेड़ा के गांधीनगर निवासी सोनु कुमार राव उर्फ गडजला के रूप में हुई है। तलाशी के दौरान उसके पास से एक चोरी का मोबाइल फोन बरामद किया गया। जांच में पता चला कि यह मोबाइल महाराष्ट्र के यात्री ऋषिकेश अशोक घोराड़े का है, जिसे आरोपी ने स्टेशन परिसर या ट्रेन में मौका देखकर चुरा लिया था।

चाईबासा में शांतिपूर्ण माहौल में नीट परीक्षा हुई संपन्न, सुरक्षा के रहे पुख्ता इंतजाम

PHOTON NEWS CHAIBASA :

पश्चिमी सिंहभूम जिला मुख्यालय चाईबासा में रविवार को नीट (यूजी)-2026 की परीक्षा शांतिपूर्ण और कदाचार मुक्त माहौल में संपन्न हुई। जिला प्रशासन की सख्ती और पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था के बीच सैकड़ों परीक्षार्थी परीक्षा दी।

दो केंद्रों पर हुई परीक्षा : चाईबासा जिले में परीक्षा के लिए दो केंद्र बनाए गए थे। खीराम उल्कट्ट जिला स्कूल, चाईबासा और प्लस-2 मांगीलाल रूंगटा उच्च विद्यालय। सुबह 11:00 बजे से 1:30 बजे तक परीक्षार्थियों को प्रवेश दिया गया। इसके बाद मुख्य गेट बंद कर दिए गए। परीक्षा दोपहर 2:00 बजे से शाम 5:20 बजे तक चली।

सुरक्षा के रहे कड़े इंतजाम : परीक्षा को लेकर प्रशासन पूरी तरह अलर्ट था। दोनों केंद्रों पर भारी



परीक्षा केंद्र के गेट पर परीक्षार्थियों की जांच करती महिला कर्मी

संख्या में पुलिस बल तैनात रहा। केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में धारा 144 लागू की गई थी। प्रवेश द्वार पर सघन तलाशी के बाद ही परीक्षार्थियों को अंदर जाने दिया गया। बायोमेट्रिक उपस्थिति और मेटल डिटेक्टर से जांच की गई।

अधिकारियों ने लिया जायजा : परीक्षा के दौरान उपायुक्त मनीष कुमार और पुलिस अधीक्षक अमित रेणु समेत वरीय अधिकारियों ने दोनों केंद्रों का दौरा

धतकीडीह में बदमाशों ने की गामा होटल पर हवाई फायरिंग, दो किए गए गिरफ्तार

बिष्टपुर इलाके में बढ़ रही अपराधिक घटनाएं, पुलिस नहीं कस पा रही बदमाशों पर लगाम

PHOTON NEWS JSR :

बिष्टपुर थाना क्षेत्र के धतकीडीह में फायरिंग हुई है। कुरैशो मुहल्ले में फायरिंग की इस घटना से धतकीडीह दहल गया। रविवार को दिन दहाड़े बदमाशों ने गामा होटल के पास पहुंच कर हवाई फायरिंग की। घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल के आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले हैं। इसके बाद पुलिस ने दो बदमाशों को दबोचा है। इनके पास से घटना में प्रयुक्त हथियार भी बरामद कर लिया है। इस फायरिंग में गोरा नामक एक बदमाश का नाम आ रहा था। घटना रविवार की सुबह की है। बदमाशों ने गामा होटल के संचालक गामा के सामने हवाई फायरिंग की। फायरिंग होते ही इलाके में दहशत फैल गई। लोगों में अफरा-तफरी मच गई। लोग



सुरक्षित स्थान पर भागने लगे। घटना की जानकारी पुलिस को दे दी गई। गोली क्यों चली अभी इसका पता नहीं चल पाया है। घटना के पीछे के कारणों का पता लगाया जा रहा है। फायरिंग की घटना को अंजाम देकर बदमाश फरार हो गए थे। बताया जा रहा है कि पुलिस ने इस मामले में कपाली में भी छापेमारी की है। गौरतलब है कि बिष्टपुर इलाके में इन दिनों अपराध का ग्राफ बढ़ता ही जा रही है। आए दिन घटनाएं हो रही हैं। अपराधियों में पुलिस का जरा भी खौफ नहीं रहा। बिष्टपुर में ही दबंगों ने एक महिला चाय दुकानदार पर चम चाय फेंकी थी।

कदमा में महिला के गले से सरेआम चैन छीनकर भागे बदमाश सीसीटीवी में कैद, एफआईआर दर्ज

PHOTON NEWS JSR :

जमशेदपुर में अपराध का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। कदमा थाना क्षेत्र के डी रोड के पास स्कूटी सवार दो बदमाशों ने अनीता चौधरी नामक महिला की गले से चैन छीन ली थी और फरार हो गए थे। पुलिस ने रविवार को इस मामले में एफआईआर दर्ज कर ली है। पुलिस बदमाशों की तलाश में जुट गई है। पुलिस को इस घटना का सीसीटीवी फुटेज मिल गया है। सीसीटीवी फुटेज में स्कूटी पर सवार दो बदमाश घटना को अंजाम देते देखे जा रहे हैं। यह दोनों स्कूटी सवार पहले एक सड़क की तरफ

आरोपियों की तलाश में छापेमारी कर रही पुलिस



घटना का सीसीटीवी फुटेज

मुड़ गए थे। बाद में फिर फौरन वापस आए। स्कूटी पर जो बदमाश पीछे बैठा था वह आगे जाकर

स्कूटी चलाने लगता है। और दूसरा बदमाश पीछे बैठ जाता है। इसके बाद दोनों बदमाशों ने महिला का

पीछा किया और उसके गले से सोने की चैन छीनकर फरार हो गए। जैसे ही दोनों बदमाश घटना को अंजाम देते हैं वैसे ही महिला आगे चल रहे अपने पति जेपी चौधरी को मामले की जानकारी देती है। जेपी चौधरी ने बदमाशों का पीछा करने की कोशिश की। वह बदमाशों के पीछे दौड़े। लेकिन, बदमाश स्कूटी से निकल भागने में कामयाब हो गए। कदमा थाना प्रभारी का कहना है कि मामले की एफआईआर दर्ज कर आरोपियों की तलाश में छापेमारी का रजा रही है।

घरेलू विवाद में नशेड़ी देवर ने भाभी को बैट से मारकर किया लहलुहान

PHOTON NEWS CHAIBASA :

पश्चिमी सिंहभूम जिले के चक्रधरपुर प्रखंड के बोड़दा-बाईडीह गांव में घरेलू विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। देवर ने अपनी भाभी के सिर पर क्रिकेट बैट से हमला कर लहलुहान कर दिया। पुलिस ने आरोपी देवर दिलीप हेंब्रम को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में चाईबासा जेल भेज दिया है।

पुलिस के अनुसार बोड़दा-बाईडीह गांव निवासी दिलीप हेंब्रम का अपनी भाभी चांची हेंब्रम से कुछ दिनों से घरेलू विवाद चल रहा था। गुस्वार की सुबह दिलीप नशे की हालत में उठा और गुस्से में आकर भाभी के सिर पर क्रिकेट बैट से चार कर दिया। हमले में चांची हेंब्रम गंभीर रूप से घायल हो गईं।

पुलिस ने किया गिरफ्तार



आरोपी दिलीप हेंब्रम

छापेमारी दल गठित कर पुलिस ने दबोचा : घटना के बाद घायल चांची हेंब्रम ने चक्रधरपुर थाना में दिलीप हेंब्रम के खिलाफ मारपीट का मामला दर्ज कराया। थाना प्रभारी अवधेश कुमार ने बताया कि महिला के लिखित आवेदन पर तत्काल छापेमारी टीम गठित

की गई। पुलिस ने फरार चल रहे आरोपी दिलीप हेंब्रम को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ चक्रधरपुर थाने में 30 अप्रैल 2026 को बीएनएस-2023 की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।

न्यायिक हिरासत में भेजा गया जेल : गिरफ्तार करने के बाद पुलिस ने शनिवार को आरोपी दिलीप हेंब्रम को न्यायिक हिरासत में चाईबासा जेल भेज दिया। थाना प्रभारी अवधेश कुमार ने कहा कि घरेलू हिंसा के मामलों में पुलिस सख्त कार्रवाई कर रही है। उन्होंने लोगों से अपील है कि विवाद को बातचीत से सुलझाए। हिंसा का रास्ता न अपनाए। घायल महिला का इलाज चल रहा है और उसकी स्थिति खतरे से बाहर बताई जा रही है।

नीट(यूजी)-2026 परीक्षा संपन्न, 8 केंद्रों में 119 परीक्षार्थी रहे गैरहाजिर

JAMSHEDPUR :

जिला दण्डाधिकारी सह उपायुक्त राजीव रंजन के निदेशानुसार नीट (यूजी)-2026 परीक्षा जिले के सभी परीक्षा केंद्रों पर शांतिपूर्ण, सुव्यवस्थित एवं कदाचारमुक्त वातावरण में संपन्न हुई। जिले में 6 शिक्षण संस्थानों में बनाए गए कुल 8 परीक्षा केंद्रों पर परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 4231 परीक्षार्थियों में से 4112 परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए, जबकि 119 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। परीक्षा के सफल संचालन हेतु सभी केंद्रों पर पर्याप्त दण्डाधिकारी, पुलिस बल एवं स्टैटिक मजिस्ट्रेट की प्रतिनियुक्ति की गई थी। परीक्षा केंद्रों पर सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था, फ्रिस्किंग, वीडियोग्राफी तथा एनटीए के दिशा-निर्देशों का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित किया गया। शहर में यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए प्रमुख चौक-चौराहों पर विशेष व्यवस्था की गई, जिससे परीक्षार्थियों को समय पर परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में सुविधा हुई। जिला प्रशासन द्वारा परीक्षा के पारदर्शी एवं निष्पक्ष संचालन हेतु सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई, जिसके परिणामस्वरूप परीक्षा शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई।

स्वणरेखा नदी में हजारों मछलियों की मौत से हड़कंप

PHOTON NEWS JSR :

शहर की जीवनरेखा कही जाने वाली स्वणरेखा नदी एक बार फिर गंभीर पर्यावरणीय संकट के संकेत दे रही है। रविवार तड़के डोबो पुल के नीचे नदी में हजारों की संख्या में मरी हुई मछलियां पाई गईं, जिससे इलाके में हड़कंप मच गया।

सुबह करीब तीन बजे मछुआरे जब मछली पकड़ने नदी में पहुंचे तो उन्हें बिना जाल डाले ही मछलियां हाथ लगने लगीं, लेकिन सभी मछलियां मृत थीं। यह खबर फैलते ही बड़ी संख्या में लोग मौके पर पहुंचे और मृत मछलियां अपने साथ ले गए।

घटना की सूचना मिलने पर जमशेदपुर पश्चिम के विधायक सरयू राय मौके पर पहुंचे और हालात का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में मछलियों की मौत एक गंभीर पर्यावरणीय खतरे की ओर इशारा

प्रदूषण पर उठे सवाल, विधायक सरयू राय ने नदी का किया निरीक्षण



नदी किनारे निरीक्षण करते विधायक सरयू राय व इनसेट में मछलियां

करती है। स्थानीय लोगों से बातचीत के बाद उन्होंने बताया कि जिस स्थान पर मछलियां मरी मिली हैं, उसके पास से सोनारी क्षेत्र की ओर से आने वाला एक सीवेज नाला गुजरता है। कुछ साल पहले यहां जल शोधन के लिए बनाए गए कुंड अब बेकार हो चुके हैं और दंगी का स्रोत

बन गए हैं। इनसे निकलने वाला दूषित पानी सीधे नदी में मिल रहा है। सरयू राय ने आशंका जताई कि सीवेज के साथ कोई जहरीला पदार्थ भी नदी में बहाया जा रहा है, जिससे मछलियों की मौत हो रही है। नदी में फैली जलकुंभी भी बढ़ते प्रदूषण का संकेत दे रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि नदी का

प्रदूषित पानी न केवल जलीय जीवों के लिए बल्कि आम लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी खतरनाक है। लोग इसी पानी का इस्तेमाल नहाने और अन्य कार्यों में कर रहे हैं, जिससे बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। विधायक ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, टाटा स्टील और नगर निकाय से मामले की गंभीर जांच कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि जांच रिपोर्ट सार्वजनिक की जानी चाहिए, ताकि सच्चाई सामने आ सके और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

पहल मुसाबनी इलाके में अब जाएगी जेयूएसएनएल की बिजली, लद गए दामोदर वैली कॉरपोरेशन के दिन

जिले से खत्म होगा डीवीसी का राज, इसी महीने चालू हो जाएगा सुरदा पावर ग्रिड

MUZTABA RIZVI @ JSR :

जमशेदपुर और इसके आसपास के इलाकों की बिजली आपूर्ति व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए विभाग कई ग्रिड का निर्माण कर रहा है। इनमें से मुसाबनी के सुरदा में 132/33 केवी व 100 एमवीए क्षमता का नया पावर ग्रिड बनकर तैयार हो गया है। इस पावर ग्रिड के निर्माण पर लगभग 32.61 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं।

यह पावर ग्रिड इसी महीने चालू कर दिया जाएगा। इस पावर ग्रिड में 50-50 एमवीए क्षमता के दो ट्रांसफार्मर लगाए गए हैं इस पावर ग्रिड के बन जाने के बाद घाटशिला और मुसाबनी इलाके में बिजली विभाग डीवीसी (दामोदर वैली कॉरपोरेशन) से बिजली न लेकर अब झारखंड

समस्या खत्म, सर्किल में आ रही फुल लोड बिजली

जमशेदपुर सर्किल में बिजली कटौती की समस्या अब खत्म हो गई है। अब सर्किल को फुल लोड बिजली मिलने लगी है। शीत में कुछ दिनों तक समस्या के चलते बिजली आपूर्ति बाधित हुई थी। मगर, अब हालात में सुधार हो गया है। बिजली विभाग के अधीक्षण अभियंता सुधीर कुमार ने बताया कि सर्किल को पीक ऑवर में 350 मेगावाट बिजली चाहिए। इन दिनों सर्किल को पर्याप्त बिजली दी जा रही है।

ऊर्जा संचरण निगम लिमिटेड (जेयूएसएनएल) से बिजली लेगा। इसके अलावा, पावर ग्रिड चालू हो जाने के बाद घाटशिला और आसपास के इलाके में निर्बाध



प्रतीकात्मक तस्वीर

बिजली आपूर्ति होगी। बिजली कटौती की समस्या से क्षेत्र के लोगों को निजात मिलेगी। लो वोल्टेज की समस्या भी खत्म हो जाएगी। इस ग्रिड का शिलान्यास 6 साल पहले हुआ था। ग्रिड के

अब तक लग चुके 80 हजार प्रीपेड मीटर

जमशेदपुर सर्किल में बिजली विभाग प्रीपेड मीटर लगा रहा है। यह काम अब तेजी से किया जा रहा है। सर्किल में कुल तीन लाख के करीब प्रीपेड मीटर लगाने हैं। इनमें से तकरीबन 80 हजार प्रीपेड मीटर लगाए जा चुके हैं। अब जिन लोगों के मीटर जल जाते हैं वहां विभाग प्रीपेड मीटर लगा देता है। प्रीपेड मीटर लगाने की शुरुआत जुगसलाई से हुई थी। अभी मानगो इलाके में प्रीपेड मीटर लगाने का काम शुरू नहीं हो पाया है। हालांकि, जिनका मीटर जल जाता है और वह आवेदन करते हैं तो विभाग उनके यहां सामान्य मीटर न लगा कर प्रीपेड मीटर ही लगा रहा है।

निर्माण में 6 साल लगे हैं। इस ग्रिड से 70 मेगावाट बिजली की आपूर्ति की जा सकेगी। सुरदा के अलावा बिजली विभाग चौका, सुंदर नगर चाकुलिया और कांड्र में भी पावर ग्रिड का

निर्माण करा रहा है। यह सभी पावर ग्रिड 132/33 केवीए क्षमता के बनाए जा रहे हैं। इन सभी पावर ग्रिड में 50-50 एमवीए क्षमता के दो-दो ट्रांसफार्मर लगाए जाएंगे।

चाकुलिया का ग्रिड बन जाने से बहरगोड़ा, धालभूमगढ़ आदि इलाके में बिजली आपूर्ति की व्यवस्था मजबूत होगी। इससे किसानों को लाभ होगा। सुंदर नगर का ग्रिड बन जाने के बाद जादूगोड़ा इलाके और सुंदर नगर के औद्योगिक और व्यवसायिक क्षेत्र में लो वोल्टेज की समस्या खत्म हो जाएगी। कांड्र का ग्रिड बन जाने से सरायकेला-खरसावां जिले में औद्योगिक इलाकों में निर्बाध बिजली मिल सकेगी।

इसके अलावा, नई ग्रिड परियोजना के धरातल पर उतरने के बाद ट्रांसमिशन लॉस भी कम होगा और बिजली की बचत होगी। यह सभी ग्रिड 400 करोड़ रुपए की लागत से बनाए जा रहे हैं।

गैस लीकेज से लगी आग डेढ़ लाख की संपत्ति राख



घटनास्थल पर मौजूद दमकलकर्मी

फोटो नव्युज

JAMSHEDPUR : जमशेदपुर के साकची थाना क्षेत्र स्थित स्टेट माइल रोड पर कब्रिस्तान के सामने कंपनी क्वार्टर (एल 4/98) में रविवार को गैस सिलेंडर लीकेज के कारण अचानक आग लग गई। घटना उस समय हुई जब घर के किचन में खाना बनाने की तैयारी चल रही थी। देखते ही देखते आग ने रसाईधर को पूरी तरह अपनी चपेट में ले लिया और धीरे-धीरे घर के अन्य हिस्सों में भी फैल गई। आग लगने की सूचना मिलते ही साकची थाना पुलिस मौके पर पहुंची। इसके बाद टाटा स्टील की दमकल और झारखंड फायर ब्रिगेड की एक-एक गाड़ी तुरंत घटनास्थल पर पहुंचकर राहत और बचाव कार्य में जुट गईं। दमकल कर्मियों की तत्परता से आग पर समय रहते काबू पा लिया गया, जिससे एक बड़ी दुर्घटना टल गई। घरवालों के मुताबिक इस आगजनी में फर्नीचर, कपड़े, घरेलू सामान और अन्य जरूरी वस्तुएं जलकर पूरी तरह राख हो गईं। अनुमान है कि इस घटना में करीब डेढ़ लाख रुपये की संपत्ति का नुकसान हुआ है।

ग्रीष्मकालीन भिंडी उत्पादन की उन्नत तकनीक



ग्रीष्मकालीन सब्जियों में भिंडी का प्रमुख स्थान है। ग्रीष्मकाल में भिंडी की अग्रेसरी फसल लगाकर किसान भाई अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। मुख्य रूप से भिंडी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट खनिज लवणों के अतिरिक्त विटामिन 'ए', 'सी' थाईमीन एवं रिबोफ्लेविन भी पाया जाता है। भिंडी के फल में आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। भिंडी का फल कब्ज रोगी के लिए विशेष गुणकारी होता है। इस लेख में ग्रीष्मकालीन भिंडी की उत्पादन तकनीक की विवेचना की गयी है:-

जलवायु एवं भूमि की तैयारी:- भिंडी के उत्पादन हेतु गर्म मौसम अनुकूल होता है। बीजों के अंकुरण हेतु 20 सेंटीग्रेड से कम का तापमान प्रतिकूल होता है। 42 सेंटीग्रेड से अधिक तापमान पर फूल का परागण नहीं होता है एवं फूल गिर जाते हैं।

सामान्यतः भिंडी की खेती सभी प्रकार की भूमियों पर की जा सकती है परन्तु हल्की दोमट मिट्टी जिसमें पर्याप्त मात्रा में जीवांश उपलब्ध हो एवं उचित जल निकास की सुविधा हो, भिंडी की खेती हेतु श्रेष्ठ होती है। भूमि की दो-तीन बार जुताई कर भूभूरा कर तथा पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए।

उन्नत किस्में- अर्का अभय, अर्का अनामिका, परभणी क्रांति, पूसा-ए-4, वर्षा उपहार, बीज एवं बीजोपचार:- ग्रीष्मकालीन फसल हेतु 18-

20 कि.ग्रा. बीज एक हेक्टर बुवाई के लिए पर्याप्त होता है जबकि वर्षाकालीन फसल में अधिक बहवार की कारण 12-15 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टर उपयोग करना चाहिए। ग्रीष्मकालीन भिंडी के बीजों को बुवाई के पूर्व 12-24 घंटे तक पानी में डुबाकर रखने से अच्छे अंकुरण होता है। बुवाई के पूर्व भिंडी के बीजों को 3 ग्राम थायरम या कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीजदर से उपचारित करना चाहिए। संकर किस्मों के लिए 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की बीजदर पर्याप्त होती है।

बुवाई:- ग्रीष्मकालीन भिंडी की बुवाई फरवरी-मार्च में की जाती है। फिर भी अग्रेसरी फसल हेतु छत्तीसगढ़ क्षेत्र में 15 जनवरी के बाद भी बुवाई की जा सकती है। यदि भिंडी की फसल लगातार लेनी है तो तीन सप्ताह के अंतराल पर फरवरी से जुलाई के मध्य अलग-अलग खेतों में भिंडी की बुवाई की जा सकती है।

ग्रीष्मकालीन भिंडी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार दूरी 25-30 सें.मी. एवं कतार में पौधे की मध्य दूरी 15-20 से.मी. रखनी चाहिए। वर्षाकालीन भिंडी के लिए कतार से कतार दूरी 40-45

सें.मी. एवं कतारों में पौधे की बीच 25-30 सें.मी. का अंतर रखना उचित रहता है।

पोषण प्रबंधन:- भिंडी की बुवाई के दो सप्ताह पूर्व 250-300 क्विंटल सड़ा हुआ गोबर खाद मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए। प्रमुख तत्वों में नत्रजन, स्फुर एवं पोटेश क्रमशः 60 कि.ग्रा., 30 कि.ग्रा. एवं 50 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की दर से मिट्टी में देना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा स्फुर एवं पोटेश की पूरी मात्रा बुवाई के पूर्व भूमि में देना चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा को दो भागों में 30-40 दिनों के अंतराल पर देना चाहिए।

जलप्रबंधन:- यदि भूमि में पर्याप्त नमी न हो तो बुवाई के पूर्व एक सिंचाई करनी चाहिए। गर्मी के मौसम में

प्रत्येक पांच से सात दिन के अंतराल पर सिंचाई आवश्यक होती है। बरसात में आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए तथा अतिवृष्टि के समय उचित जलनिकास प्रबंध करना चाहिए।

निर्दाई-गुड़ाई:- नियमित निर्दाई-गुड़ाई कर खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। बोने के 15-20 दिन बाद प्रथम निर्दाई-गुड़ाई करना जरूरी रहता है। खरपतवार नियंत्रण हेतु रासायनिक नौदानाशकों का भी प्रयोग किया जा सकता है। बासालिन को 1.2 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व को प्रति हेक्टर की दर से पर्याप्त नम खेत में

बीज बोने के पूर्व मिलाने से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।

फल की तोड़ाई एवं उपज:- किस्म की गुणता के अनुसार 45-60 दिनों में फलों की तोड़ाई प्रारंभ की जाती है एवं 4 से 5 दिनों के अंतराल पर नियमित तोड़ाई की जानी चाहिए। ग्रीष्मकालीन भिंडी फसल में उत्पादन 60-

7

0

क्विंटल प्रति

हेक्टर तक होता है।

पौधे संरक्षण:-

भिंडी के प्रमुख रोग

पीत शिरा मौजक एवं चूर्णिल

आसिता एवं नुकसानदायक कीट

प्ररोह एवं फल छेदक तथा जैसिड है।

पीत शिरा रोग:- यह भिंडी की फसल में नुकसान

पहुंचाने वाला प्रमुख रोग है। इस रोग के प्रकोप से

सर्वप्रथम पत्तियों की शिराएं पीली पड़ने लगती है।

तत्पश्चात् पूरी पत्तियां एवं फल भी पीले रंग के हो जाते हैं

पौधे की बहवार रुक जाती है। वर्षा ऋतु में इस रोग का

संक्रमण अधिक होता है।

सर्वप्रथम इस रोग के लक्षण वाले पौधे दिखाई देते

हैं उन्हें उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। यह विषाणु

जनित रोग सफेद मक्खी कीट द्वारा स्वस्थ पौधों में

फैलाया जाता है। अतः रोग संवाहक कीट के नियंत्रण हेतु

आक्सी मिथाइल डेमेटान 1 मिली प्रति लीटर पानी में

मिलाकर छिड़काव करने से रोग का प्रसारण कम होता है।

पीतशिरा रोग प्रतिरोधी किस्मों जैसे अर्का अभय, अर्का

अनामिका, परभणी क्रांति इत्यादि का चुनाव करना

चाहिए। फसल के चारों ओर 2-3 कतार मक्का बोने से

भी रोग का फैलाव नियंत्रित किया जा सकता है।

चूर्णिल आसिता:- इस रोग में भिंडी की पुरानी निचली

पत्तियों पर सफेद चूर्ण युक्त हल्के पीले धब्बे पड़ने लगते

हैं। ये सफेद चूर्ण वाले धब्बे काफी तेजी से फैलते हैं।

इस रोग का नियंत्रण न करने पर पैदावार 30 प्रतिशत तक

7

0

क्विंटल प्रति

हेक्टर तक होता है।

पौधे संरक्षण:-

भिंडी के प्रमुख रोग

पीत शिरा मौजक एवं चूर्णिल

आसिता एवं नुकसानदायक कीट

प्ररोह एवं फल छेदक तथा जैसिड है।

पीत शिरा रोग:- यह भिंडी की फसल में नुकसान

पहुंचाने वाला प्रमुख रोग है। इस रोग के प्रकोप से

सर्वप्रथम पत्तियों की शिराएं पीली पड़ने लगती है।

तत्पश्चात् पूरी पत्तियां एवं फल भी पीले रंग के हो जाते हैं

पौधे की बहवार रुक जाती है। वर्षा ऋतु में इस रोग का

संक्रमण अधिक होता है।

सर्वप्रथम इस रोग के लक्षण वाले पौधे दिखाई देते

हैं उन्हें उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। यह विषाणु

जनित रोग सफेद मक्खी कीट द्वारा स्वस्थ पौधों में

फैलाया जाता है। अतः रोग संवाहक कीट के नियंत्रण हेतु

आक्सी मिथाइल डेमेटान 1 मिली प्रति लीटर पानी में

मिलाकर छिड़काव करने से रोग का प्रसारण कम होता है।

पीतशिरा रोग प्रतिरोधी किस्मों जैसे अर्का अभय, अर्का

अनामिका, परभणी क्रांति इत्यादि का चुनाव करना

चाहिए। फसल के चारों ओर 2-3 कतार मक्का बोने से

भी रोग का फैलाव नियंत्रित किया जा सकता है।

चूर्णिल आसिता:- इस रोग में भिंडी की पुरानी निचली

पत्तियों पर सफेद चूर्ण युक्त हल्के पीले धब्बे पड़ने लगते

हैं। ये सफेद चूर्ण वाले धब्बे काफी तेजी से फैलते हैं।

इस रोग का नियंत्रण न करने पर पैदावार 30 प्रतिशत तक

कम हो

सकती है। इस

रोग के नियंत्रण हेतु

घुलनशील गंधक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 या 3 बार 12-15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।

प्ररोह एवं फल छेदक:- इस कीट का प्रकोप वर्षा ऋतु में अधिक होता है। प्रारंभिक अवस्था में इल्ली कोमल तने में छेद करती है जिससे तना सूख जाता है। फूलों पर इसके आक्रमण से फल लगने के पूर्व फूल गिर जाते हैं। फल लगने पर इल्ली छेदकर उनको खाती है जिससे फल मुड़ जाते हैं एवं खाने योग्य नहीं रहते हैं।

जैसिड:- ये सुक्ष्म आकार के कीट पत्तियों, कोमल तने एवं फल से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं।

फल छेदक के द्वारा आक्रमण किये गये फलों एवं तने को काटकर नष्ट कर देना चाहिए। क्रिनालफास 25 ई.सी. 1.5 मिली लीटर या इंडोसल्फान 1.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी की दर से कीट प्रकोप की मात्रा के अनुसार 2-3 बार छिड़काव करने से जैसिड एवं फल प्ररोह छेदक कीटों का प्रभावी नियंत्रण होता है। फल बनने के उपरांत कीट प्रकोप होने पर 'फेनवेलेरेट' 0.5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर उपर्युक्त बनाये कीटनाशक के साथ अदल-बदल कर प्रयोग करें।

कैसे करें संरक्षित खेती

संरक्षित खेती का मुख्य उद्देश्य सब्जी फसलों को मुख्य जैविक या अजैविक कारकों से बचाकर उगाना होता है। इसमें फसल को किसी एक कारक या कई कारकों से बचाकर उगाया जा सकता है। संरक्षित सब्जी उत्पादन के लिए सब्जी उत्पादकों को संरक्षित खेती व विभिन्न संरक्षित संरचनाओं की पूर्ण जानकारी होना बहुत आवश्यक है। उसके बाद ही उत्पादक तय कर सकता है कि वह किस प्रकार की संरक्षित तकनीक अपनाकर बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन करे। कौन कौन सी संरक्षित प्रौद्योगिकियां हैं जिनमें वह सब्जियों को वर्ष भर उगा सकता है। संरक्षित संरचनाओं को बनाने के बाद में रख रखवाव में क्या व्यव होगा तथा उच्च गुणवत्ता वाली सब्जियों को वह किस बाजार में बेचकर अधिक लाभ कमा सकता है। इन सभी विषयों की जानकारी आवश्यक है।

मुख्यतः सब्जी उत्पादन हेतु उचित व उपयुक्त संरक्षित प्रौद्योगिकी की आवश्यकता उस क्षेत्र की जलवायु पर निर्भर करती है। लेकिन इसके अलावा किसान की आर्थिक दशा, टिकाऊ व उच्च बाजारकी उपलब्धता व बिजली की उपलब्धता आदि कारक भी इसको निर्धारित करते हैं। सब्जियों के बेमौसमी उत्पादन हेतु मुख्यतः वातावरण अनुकूलित ग्रीनहाउस, प्राकृतिक वायु संचारित ग्रीनहाउस, कम लागत वाले पॉलीहाउस, वाक-इन-टनल, कीट अवरोधी नेटहाउस तथा लो प्लास्टिक टनल आदि संरचनाओं का उपयोग किया जाता है।

बेमौसमी सब्जियों की संरक्षित खेती के लिए सब्जियों की पौधे प्लग ट्रे पद्धती से ग्रीनहाउस में तैयार की जाती है। तथा उसके बाद पौधों को उपयुक्त संरक्षित संरचना में रोपाई करते हैं।

वाक-इन- टनल तकनीक

वाक-इन- टनल एक प्रकार की अस्थाई संरक्षित संरचना है जो आधा इंच मोटाई के जंग रोधी पाईपों को अधोगोलाकार आकार में मोड़कर तथा इन्हे सरियों के टुकड़ों के सहारे खेत में खड़ा करके उसके



उपर प्लास्टिक की चादर से ढककर बनाया जाता है। इसके मध्य में ऊंचाई लगभग 6 से 6.5 फुट तथा जमीन पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक चौड़ाई 4 मीटर तक होती है। इस प्रकार की संरक्षित संरचनाओं को सर्दी के मौसम में बेमौसमी सब्जी जैसे लोकी, खरबूजा, तरबूज, खीरा, चप्पनकहू, तथा अन्य कटहू वगीय सब्जियां उगाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार

की संरक्षित संरचनाओं में दिन के समय जब सूर्य की रोशनी प्लास्टिक पर मंडती है तो टनल के अन्दर का तापमान काफी (लगभग 10 से 12 डि.ग्री से.) बढ़ जाता है। जिससे कटहू वगीय सब्जियों को कम तापमान के दिनों में भी बहवार करने में सफलता मिल जाती है।

वाक-इन- टनल की लम्बाई आवश्यकता अनुसार बढ़ाई जा सकती है। लेकिन सामान्यतः इनकी लम्बाई 25 से 30 मीटर होती है। इसके तीन प्रमुख कारण हैं- प्लास्टिक की चादर की उपलब्ध माप, टनल में हवा का आदान प्रदान, तथा इस लम्बाई के टनल में मधुमक्खियों को भी परागण कार्य करने में कोई असुविधा नहीं होती। इन संरचनाओं को बनाने में लागत भी बहुत कम ही आती है। तथा अस्थाई होने के कारण इनकी देखभाल भी सरलता पूर्वक की जा सकती है।

इन संरचनाओं का उपयोग केवल सर्दी के मौसम (दिसम्बर जनवरी व फरवरी माह) में ही फसल उत्पादन के लिए किया जा सकता है। क्योंकि सर्दी के बाद इसके अंदर का तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है तथा हवा का अधिक आदान प्रदान न होने के कारण तब इनमें फसल उगाना संभव नहीं होता है। यही नहीं इनका उपयोग पहाड़ी क्षेत्रों में और भी लम्बे समय तक सब्जी उत्पादन के लिए किया जाता है। इसी प्रकार इन संरचनाओं को ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्रों में भी सब्जी उत्पादन के लिए उपयोग में लाना संभव है।

छतरपुर के गांधी आश्रम में जैविक खेती का अद्भुत प्रयोग



यहां जैविक, परंपरागत और टिकाऊ खेती की किताबी बातें नहीं की जाती बल्कि जमीन पर नजर भी आती है। कड़कड़ाती ठंड और पाला भी इस इलाके में लगी दलहनी फसलों को नुकसान नहीं पहुंचा पाया। पेड़-पौधों की रंगत देखकर ही लगता है कि यहां की मिट्टी ने अपनी खोयी ताकत और ऊर्जा फिर पा ली है। यह कोई वर्षों की मेहनत नहीं बल्कि केवल चार साल की लगन का नतीजा है। मिसाल पेश करने वाले हैं - संजय और दमयंती। जिस बुदेलखंड में पिछले पांच सालों में भयंकर सूखे से किसानों की कमर टूट गई है, उसी धरती पर एक जगह ऐसी भी है, जहां खुशियों की खेती लहलहा रही है। विदर्भ के बाद मध्यप्रदेश में किसानों की बढ़ती आत्महत्याओं के बीच खेती का यह प्रयोग एक मिसाल पेश करता है। यहां जैविक, परंपरागत और टिकाऊ खेती की किताबी बातें नहीं की जाती बल्कि जमीन पर नजर भी आती है। कड़कड़ाती ठंड और पाला भी इस इलाके में लगी दलहनी फसलों को नुकसान नहीं पहुंचा पाया। पेड़-पौधों की रंगत देखकर ही लगता है कि यहां की मिट्टी ने अपनी खोयी ताकत और ऊर्जा फिर पा ली है। यह कोई वर्षों की मेहनत नहीं बल्कि केवल चार साल की लगन का नतीजा है। मिसाल पेश करने वाले हैं संजय और दमयंती और जगह है छतरपुर।

टिकाऊ खेती की बात से पहले आपको थोड़ा सा इतिहास जानना जरूरी होगा। गांधी आश्रम छतरपुर ऐतिहासिक महत्व की जगह है। अंग्रेजी शासन काल के बाद दीवान साहब के बंगले से यह जगह गांधी विचारों को आगे ले जाने का एक केन्द्र बनी। तत्कालीन दीवान ने विनोबा के भूदान आंदोलन से प्रेरित होकर इस बंगले और बंगले से लगी जमीन को गांधी विचारों के लिए समर्पित कर दिया। उसके बाद इसे गांधी आश्रम के नाम से विकसित किया गया। सांस्कृतिक-साहित्यिक-सामाजिक गतिविधियों को यहां से संचालित किया जाता रहा। सत्तर के दशक में जब चंबल में डकुओं का आतंक अपने चरम पर पहुंचकर आत्मसमर्पण की ओर बढ़ा तब इस प्रक्रिया की बुनियाद इसी आश्रम के पुस्तकालय से पड़ी। जयप्रकाश नारायण के साथ यहां डकुओं की बातचीत हुई और इसके बाद डकुओं

ने आत्मसमर्पण भी किए। गांधी का ग्रामस्वराज, बुनियादी तालीम और टिकाऊ विकास की अवधारणाओं की झलक इस छोटे से आश्रम में दिखाई देती है। बीच में एक लंबा दौर ऐसा भी आया जब यह आश्रम भूमाफियों और सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र में तब्दील हो गया।

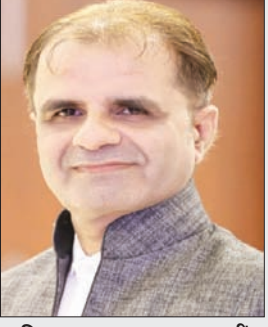
2006 में गांधी विचारों से जुड़े संजय और दमयंती जब इस जगह आए तो उन्होंने ठान लिया कि यहां की तस्वीर को बदलने के लिए वह कठिन परिश्रम करेंगे। खेती-किसानी और प्रकृति प्रेमी भाई ने इस आश्रम से लगे लगभग चालीस



एकड़ खेत में जैविक खेती के प्रयोग को शुरू करने की योजना बनाई। एक ओर जहां नकद फसलों ने फसलों की विविधता को खत्म कर दिया है वहीं इस आश्रम में उन्होंने अलग-अलग फसलों को अपनाया। इस छोटी सी जमीन पर गेहूं, चना, सरसों, अरहर, ज्वार, मक्का, जौ सहित ऐसी फसलें लीं जो सीधे-सीधे किसान अपने खाने के लिए भी उपयोग करते हैं। दरअसल खेती का परंपरागत तरीका था

भी यहीं कि किसान ज्यादातर खाद्यान्न और मसाले अपने खेतों में पैदा किया करते थे और उन्हें हर चीज के लिए बाजार की ओर मुंह नहीं देखा पड़ता था, अब किसान गेहूं-सोयाबीन पैदा तो खूब कर रहे हैं, लेकिन दाल-मसालों के लिए वह बाजार पर निर्भर है। खेती की इस विविधता से आश्रम की व्यवस्थाएं भी स्वतः संचालित होती हैं। यहां तक की सब्जी और फलों का उत्पादन भी आश्रम से ही हो जाता है। इस खेती की सबसे बड़ी बात यह है कि पिछले चार सालों से यहां रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर एक पैसा भी खर्च नहीं किया गया। वर्मी कम्पोस्ट और गोमूत्र के जरिए यहां की फसलों को जान मिलती है। 40 एकड़ के इस क्षेत्र को आश्रम के केवल सात कार्यकर्ता अंजाम देते हैं। संजय भाई बताते हैं कि आज के इस दौर में जैविक खेती करना थोड़ा कठिन जरूर लग सकता है पर यह असंभव कतई नहीं है। हम अपने खेतों में उतना ही समय खर्च करते हैं जितना दूसरे किसान। पर यहां आपको यह समझना होगा कि जमीन क्या चाहती है। किस तरह की जमीन पर किस तरह के फसल ठीक रहेगी यह समझना होगा। इस आश्रम की एक खास बात यह है कि आप यहां पूरी तरह जैविक भोजन का आनंद ले सकते हैं। यहां तक की दाल-मसाले और तेल भी खुद की उगाई गई तिल का। इस आश्रम में चल रही खेती के प्रयोग को समझने फ्रांस के निकोलस आए हैं। निकोलस कहते हैं कि 'वह भारत में जैविक खेती के अलग-अलग प्रयोगों को उन्होंने देखा, लेकिन यह प्रयोग सबसे अद्भुत है। इसलिए भी क्योंकि यह गांधी के विचारों से जुड़ा हुआ है। गांधी ग्राम स्वराज की बात करते थे और गांव की अर्थव्यवस्था के एक मॉडल की बात करते थे जहां कि ग्रामवासी आपसी व्यवहार में अपने साझा जीवन को अंजाम देते थे। यह प्रयोग अपने आप में दिलचस्प है।' यही कारण है कि वह न केवल इस खेती पर अध्ययन कर रहे हैं बल्कि इस प्रयोग के साथ इतना रम गए हैं कि वह खुद खेतों में पसीना बहाते हैं। बिहार के सामाजिक कार्यकर्ता भावेश भी इस प्रयोग के साथ जुड़कर काम कर रहे हैं। वह कहते हैं कि कम लागत की इस खेती को जीवन के साथ जोड़कर भी देखा जाना जरूरी है।

पश्चिम बंगाल में ऐतिहासिक बंपर वोटिंग-खेला होबे बनाम परिवर्तन होबे



किशन सनमुखदास भवानी

वैश्विक स्तर पर पश्चिम बंगाल का चुनाव केवल एक राज्य का चुनाव नहीं रह गया है, बल्कि यह भारत की लोकतांत्रिक राजनीति, संघीय ढांचे, वैचारिक संघर्ष और चुनावी रणनीतियों का एक ऐसा प्रयोगशाला बन चुका है जिस पर पूरे देश ही नहीं बल्कि वैश्विक राजनीतिक विश्लेषकों की भी पैनी नजर टिकी हुई है। जब मतदान के दोनों चरण अमृतपूर्व उत्साह और अत्यधिक मतदान प्रतिशत के साथ संपन्न हुए, तो यह अपने आप में कई संकेत देता है, पश्चिम बंगाल में मतदान संपन्न हो चुके हैं। अब इंटरनेट है तो सिर्फ 4 मई का जब नतीजे आएंगे और क्लियर हो जाएगा कि सत्ता में ममता बनर्जी की वापसी होगी या फिर इस बार पश्चिम बंगाल में कमल खिलेगा। लेकिन उससे पहले जो एग्जिट पोल सामने आए हैं, वह कहीं ना कहीं ममता बनर्जी की जमीन हिलाने रहे हैं। तमाम टीएमसी नेताओं की धड़कनें बढ़ा रहे हैं। और कुछ नेता तो क्या कह रहे हैं टीएमसी के टीएमसी के नेता कह रहे हैं कि बीजेपी हर बार इस तरीके का माहौल बनाती है और उसका माहौल उल्टा ही साबित होता है। इस बार बंगाल में 200 पार का यह लोग बातें कर रहे हैं। इस बार वो बातें हवा-हवाई ही साबित होंगी क्योंकि 4 मई को जो नतीजे आएंगे वो टीएमसी के पक्ष में आएंगे। हालांकि बीजेपी वाले जो हैं वो ये कह रहे हैं कि इस बार ममता बनर्जी के साथ खेला होगा। एक तरफ जनता की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी, दूसरी तरफ सत्ता के प्रति गहरी असंतुष्टि या समर्थन का तीव्र भाव। पश्चिम बंगाल में 92 प्रतिशत से अधिक मतदान केवल साधारण घटना नहीं है, यह दर्शाता है कि चुनाव केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं बल्कि जनता के लिए निर्णायक क्षण बन चुका है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भवानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि इस चतुर्भूमि में बदला बनाम बदलाव की बहस, वोटों की बरसात और सत्ता परिवर्तन जैसे सवाल केवल नारे नहीं बल्कि सामाजिक मनोविज्ञान के संकेतक बन जाते हैं। अगर हम ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो पश्चिम बंगाल लंबे समय तक वैचारिक राजनीति का केंद्र रहा है। वामपंथी शासन के तीन दशक और उसके बाद ममता बनर्जी के नेतृत्व में आल इंडिया तृणमूल

भा रतीय राजनीति के भविष्य की दिशा तय होने की संभावना-4 मई 2026 महीनों से लिखी जा रही कथा के नतीजों का राजनीतिक निष्कर्ष होगा

पश्चिम बंगाल में 92 प्रतिशत से अधिक मतदान कोई साधारण घटना नहीं; यह चुनाव केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं बल्कि जनता के लिए निर्णायक क्षण बन चुका है।

उच्च मतदान प्रतिशत एंटी- इंकंबेंसी का परिणाम -बीजेपी को फायदा, प्रो-इंकंबेंसी मोबिलाइजेशन-टीएमसी अपनी सत्ता बचा सकती है- स्थानीय उम्मीदवारों की लोकप्रियता क्षेत्रीय मुद्दे और अंतिम समय में मतदाताओं का रुझान निर्णायक भूमिका निभाते हैं की संभावना।

वैश्विक स्तर पर पश्चिम बंगाल का चुनाव केवल एक राज्य का चुनाव नहीं रह गया है, बल्कि यह भारत की लोकतांत्रिक राजनीति, संघीय ढांचे, वैचारिक संघर्ष और चुनावी रणनीतियों का एक ऐसा प्रयोगशाला बन चुका है जिस पर पूरे देश ही नहीं बल्कि वैश्विक राजनीतिक विश्लेषकों की भी पैनी नजर टिकी हुई है। जब मतदान के दोनों चरण अमृतपूर्व उत्साह और अत्यधिक मतदान प्रतिशत के साथ संपन्न हुए, तो यह अपने आप में कई संकेत देता है, पश्चिम बंगाल में मतदान संपन्न हो चुके हैं। अब इंटरनेट है तो सिर्फ 4 मई का जब नतीजे आएंगे और क्लियर हो जाएगा कि सत्ता में ममता बनर्जी की वापसी होगी या फिर इस बार पश्चिम बंगाल में कमल खिलेगा। लेकिन उससे पहले जो एग्जिट पोल सामने आए हैं, वह कहीं ना कहीं ममता बनर्जी की जमीन हिलाने रहे हैं। तमाम टीएमसी नेताओं की धड़कनें बढ़ा रहे हैं। और कुछ नेता तो क्या कह रहे हैं टीएमसी के टीएमसी के नेता कह रहे हैं कि बीजेपी हर बार इस तरीके का माहौल बनाती है और उसका माहौल उल्टा ही साबित होता है। इस बार बंगाल में 200 पार का यह लोग बातें कर रहे हैं। इस बार वो बातें हवा-हवाई ही साबित होंगी क्योंकि 4 मई को जो नतीजे आएंगे वो टीएमसी के पक्ष में आएंगे। हालांकि बीजेपी वाले जो हैं वो ये कह रहे हैं कि इस बार ममता बनर्जी के साथ खेला होगा। एक तरफ जनता की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी, दूसरी तरफ सत्ता के प्रति गहरी असंतुष्टि या समर्थन का तीव्र भाव। पश्चिम बंगाल में 92 प्रतिशत से अधिक मतदान केवल साधारण घटना नहीं है, यह दर्शाता है कि चुनाव केवल औपचारिक प्रक्रिया नहीं बल्कि जनता के लिए निर्णायक क्षण बन चुका है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भवानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूँ कि इस चतुर्भूमि में बदला बनाम बदलाव की बहस, वोटों की बरसात और सत्ता परिवर्तन जैसे सवाल केवल नारे नहीं बल्कि सामाजिक मनोविज्ञान के संकेतक बन जाते हैं। अगर हम ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो पश्चिम बंगाल लंबे समय तक वैचारिक राजनीति का केंद्र रहा है। वामपंथी शासन के तीन दशक और उसके बाद ममता बनर्जी के नेतृत्व में आल इंडिया तृणमूल



कांग्रेस (टीएमसी) का उदय, ये दोनों ही चरण बताते हैं कि बंगाल की राजनीति हमेशा परिवर्तनशील रही है। लेकिन वर्तमान चुनाव में जो सबसे बड़ा बदलाव दिखाता है, वह है बीजेपी का अमृतपूर्व उभार, जिसने राज्य की पारंपरिक द्विध्रुवीय राजनीति को त्रिकोणीय और अब लगभग द्विध्रुवीय (टीएमसी बनाम बीजेपी) संघर्ष में बदल दिया है। साथियों बात अगर हम भारत भारत व पूरे विश्व की नजरों में अब पहले सबसे बड़े प्रश्न की करें, पूरी दुनिया की नजरों सोमवार 4 मई 2026 के नतीजों पर क्यों टिकी है? इसका उत्तर केवल सीटों के गणित में नहीं बल्कि उस राजनीतिक कथा में छिपा है जो भारत के लोकतंत्र को परिभाषित करती है। बंगाल का चुनाव इस बात का संकेत देगा कि क्या क्षेत्रीय दल अभी भी अपने मजबूत गढ़ों को बचा सकते हैं या राष्ट्रीय दलों का विस्तार अब लगभग हर राज्य में संभव हो गया है। यह चुनाव पीएम के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय राजनीति बनाम क्षेत्रीय पहचान की राजनीति का सीधा मुकाबला भी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे लोकल बनाम नेशनल नैरेटिव के रूप में देखा जा रहा है, जो कई लोकतांत्रिक देशों में उभरती प्रवृत्ति से मेल खाता है। साथियों बात अगर हम बदलाव या बदलाव, इस प्रश्न को समझने की करें तो पश्चिम बंगाल की राजनीति के सबसे संवेदनशील पहलू को छूला है। बदलाव शब्द बंगाल में राजनीतिक हिंसा और प्रतिशोध की उस संस्कृति की ओर इशारा करता है जो दशकों से चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा रही है। वहीं बदलाव विकास, प्रशासनिक सुधार और नई राजनीतिक दिशा का प्रतीक है। इस चुनाव में दिलचस्प बात यह रही कि व्यापक रूप से हिंसा की घटनाएं अपेक्षाकृत कम देखने को मिलीं, जिसका श्रेय केंद्रीय बलों की तैनाती और कड़ी निगरानी को दिया जा रहा है। यह बदलाव केवल चुनावी प्रक्रिया में नहीं बल्कि मतदाताओं के मनोविज्ञान में भी

झलकता है, वे अब स्थिरता और सुरक्षा को सटीकता से प्राथमिकता दे रहे हैं। साथियों बात अगर हम दोनों चरणों में 92 प्रतिशत से अधिक हुई बंपर वोटिंग को समझने की करें तो अब सवाल आता है, वोटों की बरसात किसके साथ? अत्यधिक मतदान प्रतिशत आमतौर पर दो तरह के संकेत देता है: या तो सत्ता के खिलाफ भारी असंतोष, या फिर सत्ता के समर्थन में जबर्दस्त लामबंदी। इस बार बंगाल में दोनों ही संभावनाएं मौजूद हैं। एक तरफ टीएमसी ने अपने कल्याणकारी योजनाओं, महिला वोट बैंक और ग्रामीण नेटवर्क के दम पर मजबूत पकड़ बनाए रखी है, वहीं बीजेपी ने हिंदुत्व, राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास के मुद्दों के साथ-साथ संगठनात्मक विस्तार के जरिए शहरी और युवा मतदाताओं को आकर्षित करने की कोशिश की है। एग्जिट पोलस ने इस जटिल समीकरण को और भी रोमांचक बना दिया है। विभिन्न एंजिनों के अनुमान में बीजेपी को बहुत दिखाई जा रही है, कुछ में तो स्पष्ट बहुमत का दावा भी किया गया है। हालांकि पोल ऑफ पोलस एक करीबी मुकाबले की ओर इशारा करता है, जहां टीएमसी और बीजेपी के बीच सीटों का अंतर बहुत ज्यादा नहीं है। भारतीय चुनावी इतिहास में एग्जिट पोल कई बार गलत भी साबित हुए हैं, इसलिए इन्हें अंतिम सत्य नहीं माना जा सकता। फिर भी ये राजनीतिक माहौल और मतदाताओं की संभावित दिशा का संकेत जरूर देते हैं। टीएमसी का दावा है कि ये एग्जिट पोल मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने की रणनीति का हिस्सा है। पार्टी नेताओं का कहना है कि वास्तविक नतीजे उनके पक्ष में आएंगे और बीजेपी का 200 पार का दावा केवल प्रचार है। दूसरी ओर बीजेपी का आत्मविश्वास इस बात को दर्शाता है कि पार्टी की जमीनी स्तर पर अपने प्रदर्शन को लेकर भरोसा है। खेला होबे बनाम परिवर्तन होबे ये नारे अब केवल शब्द नहीं बल्कि दो अलग-अलग राजनीतिक दृष्टिकोणों का

प्रतिनिधित्व करते हैं।

साथियों बात अगर हम इस चुनाव में एक और महत्वपूर्ण पहलू को समझने की करें तो वह है, प्रशासन के आरोप, विशेषकर कोयला घोटाला। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर इस बार कोई बड़ा उलटफेर होता है, तो उसमें इन आरोपों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। जांच एंजिनों की कार्रवाई और उससे जुड़ी राजनीतिक बहस ने चुनावी माहौल को प्रभावित किया है। साथ ही, चुनावी रणनीति में पेशेवर संस्थाओं की भूमिका जैसे कि आइपैक भी चर्चा का विषय रही है, जिसने आधुनिक भारतीय चुनावों में डेटा-आधारित रणनीति की अहमियत को उजागर किया है। इतमदान के शांतिपूर्ण संपन्न होने का एक और बड़ा प्रभाव यह है कि इससे चुनाव की वैधता और विश्वसनीयता बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के लोकतंत्र को अक्सर उसकी जटिलता और विविधता के कारण सराहा जाता है, लेकिन चुनावी हिंसा उसकी छवि को प्रभावित करती रही है। इस बार अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण चुनाव ने यह संदेश दिया है कि भारत अपने चुनावी तंत्र को और मजबूत बना रहा है।

साथियों बात अगर हम सबसे बड़ा प्रश्न, क्या एग्जिट पोल के आंकड़े वास्तविक नतीजों में बदलेंगे? इसको समझने की करें तो, इसका उत्तर 4 मई को ही मिलेगा, लेकिन कुछ संकेतों के आधार पर संभावनाओं का विश्लेषण किया जा सकता है। अगर उच्च मतदान प्रतिशत एंटी-इंकंबेंसी का परिणाम है, तो बीजेपी को फायदा हो सकता है। लेकिन अगर यह ह्यूप्रो-इंकंबेंसी मोबिलाइजेशन है, तो टीएमसी अपनी सत्ता बचा सकती है। इसके अलावा, स्थानीय उम्मीदवारों की लोकप्रियता, क्षेत्रीय मुद्दे और अंतिम समय में मतदाताओं का रुझान भी निर्णायक भूमिका निभाएंगे।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि पश्चिम बंगाल का यह चुनाव भारतीय राजनीति के भविष्य की दिशा तय करने वाला साबित हो सकता है। यह केवल यह नहीं बताएगा कि सत्ता किसके हाथ में जाएगी, बल्कि यह भी संकेत देगा कि भारत में राजनीति का स्वरूप किस दिशा में विकसित हो रहा है, क्या क्षेत्रीय दल अपनी पकड़ बनाए रखेंगे या राष्ट्रीय दलों का वर्चस्व बढ़ेगा। बदलाव और बदलाव के बीच झूलता यह चुनाव लोकतंत्र के उस जीवंत स्वरूप का उदाहरण है, जहां अंतिम निर्णय जनता के हाथ में होता है। 4 मई का दिन केवल नतीजों की घोषणा नहीं होगा, बल्कि यह उस राजनीतिक कथा का निष्कर्ष होगा जो महीनों से लिखी जा रही है। क्या ममता बनर्जी अपनी सत्ता बचा पाएंगी या बीजेपी पहली बार बंगाल में सरकार बनाएगी, यह सवाल जितना बंगाल के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही भारत और विश्व की राजनीति के लिए भी महत्व रखेगा।

संपादकीय

जिंदगी निगलती रफ्तार

देश के नीति-निर्णयताओं की सोच रही है कि विकास के लिए चौड़ी व रफ्तार वाली सड़कें जीवन रेखा का काम करें। हाल के वर्षों में इसी सोच के साथ राजग सरकार ने राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण युद्ध स्तर पर किया। देश के उत्थान के लिए विकास के बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता दी। लेकिन विकास की इस उन्नति के साथ ही राष्ट्रीय राजमार्गों से जुड़ी विसंगति भी सामने आई कि इन पर होने वाली दुर्घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। हादसों का यह सिलसिला लगातार जारी है। सवाल उठता है कि उच्च तकनीक से तैयार आकर्षक व सुविधाजनक एक्सप्रेस-वे और राष्ट्रीय राजमार्ग यात्रियों की सुरक्षा की कसौटी पर खरे क्यों नहीं उतर पा रहे हैं। यूं तो देश की कुल सड़कों में दो फीसदी ही राष्ट्रीय राजमार्ग हैं, लेकिन देश में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में इनकी संख्या तीस फीसदी हो गई है। जो हमारी गंभीर चिंता का सबब बन रहा है। ऐसे में आम नागरिकों की इस गहरी चिंता को महसूस करते हुए देश की शीर्ष अदालत ने हस्तक्षेप किया है। शीर्ष अदालत ने इस संकट पर गहरी चिंता जताते हुए केंद्र व राज्य सरकार तथा इससे संबंधित विभागों को सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता के आधार पर सशक्त करने के निर्देश दिए हैं। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट की मान्यता रही है अधिकारियों की उदासीनता व निर्माण से जुड़ी खामियों की वजह से राजमार्ग व एक्सप्रेस-वे दुर्घटना के कारक नहीं बनने चाहिए। इस दिशा में अविलंब कार्रवाई होनी चाहिए ताकि मार्ग खतरों का गलियारा न बने। विडंबना यह भी है कि देश में आम लोगों में ट्रैफिक से जुड़ी अनुशासन की सोच पूरी तरह से विकसित नहीं हो पायी है। खुली सड़क मिलते ही रफ्तार तेज होने लगती है, यह जानते हुए कि ये गति हमारी दुर्गति का कारण भी बन सकती है। इसके अलावा तेज स्पीड में भी फोन पर बात करते रहना और शराब पीकर वाहन चलाना भी सड़क दुर्घटनाओं को बढ़ाने वाला साबित हुआ है। यह विडंबना ही है कि भारत में दुनिया के अन्य विकसित व समकक्ष विकासशील देशों के अनुपात में वाहनों की संख्या तो कम है लेकिन सड़क दुर्घटनाओं में हम अग्रणी हैं। यह आंकड़ा डरता है कि साल भर में होने वाली करीब साढ़े चार लाख से अधिक सड़क दुर्घटनाओं में हर साल डेढ़ लाख से अधिक लोगों की मौत हो जाती है। इसके अलावा लाखों लोग घायल होते हैं।

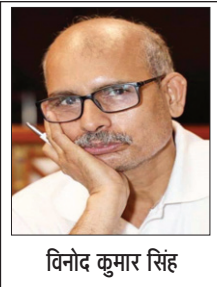
चिंतन-मनन

आत्मबल के लिए

एक गरीब बुढ़िया थी। अपनी झोपड़ी में अकेली रहती थी। उसके पास एक गाय थी। बस उसी के सहारे वह अपना जीवन निर्वाह करती थी। पर्युण पर्व चल रहा था। वह अपनी झोपड़ी में बैठी-बैठी रोज देखती थी कि गांव के लोग बहुत टाट-बाट से पूजा की थाल और प्रसाद आदि लेकर लिए मंदिर जा रहे हैं। उन्हें देख कर बुढ़िया सोचती थी, मैं इतनी टाट से पूजा नहीं कर सकती, मेरे पास पयांफ साधन नहीं है। पूजा की इच्छा दब जाती। एक दिन उसने सोचा, यदि पूजा नहीं कर सकती तो आरती तो कर सकती हूँ। बस, यह सोच कर वह उठी, अपनी गाय के दूध से निकाला हुआ घी लिया। पड़ोसी के एक कपास के खेत में से थोड़ी-सी रुई ले आई।

एक मिट्टी के दीपक में आरती संजोकर चल दी मंदिर की ओर। अत्यंत श्रद्धा भक्ति से उसने आरती की, जिसके परिणाम स्वरूप आगामी भव में उसे अत्यंत ज्ञानी मुनिराज की पर्याय प्राप्त हुई। न कोई उपवास, न कोई व्रत, केवल पवित्र भावना, श्रद्धा और भक्ति से उसे यह प्राप्त हुआ। किसी शक्तिहीन व्रती प्राणी का उपहास मत कीजिए। संभव है, उसमें शक्ति की अल्पता हो पर भक्ति की प्रबलता हो। कोई छोटा बच्चा पवित्र भावना लेकर व्रत करना चाहता है, तो उसे रोकिए मत, करने दीजिए। उसकी भावनाओं को खंडित मत कीजिए, ठेस मत पहुंचाइए। बल्कि उसे व्रत के वास्तविक उद्देश्य को समझा कर उसके इरादे को और दृढ़ बनाइए। तप के मार्ग को सामान्य मत समझिए।

कुछ लोग कहते हैं, तप में क्या रखा है? बेकार है? व्यर्थ है। ऐसा वे लोग कहते हैं जिनमें पुरुषार्थ का अभाव है। जो स्वयं पालन नहीं कर सके, उन्हें कहना चाहिए हम तो नहीं कर पाते, पर आप कर रहे हैं, यह अच्छे बात है। आपका कल्याण हो। उसके प्रति कम से कम अपनी भावनाएं पवित्र रखनी चाहिए। तप की सबसे बड़ी पूंजी आत्मशक्ति की उत्पत्ति है। इस आत्मशक्ति के माध्यम से हमारे में विरोध में भी जीने का साहस उत्पन्न होता है।



विनोद कुमार सिंह

ज म्मू-तवी से श्रीनगर तक वंदे भारत ट्रेन का विस्तार...

विकास की रफ्तार जब आस्था, पर्यटन और आजीविका के साथ कदमताल करती है, तब वह केवल एक परियोजना नहीं रहती, बल्कि समाज के बहुआयामी परिवर्तन की जीवंत गथा बन जाती है। जम्मू-तवी से श्रीनगर तक विस्तारित वंदे भारत एक्सप्रेस सेवा भी ऐसे ही परिवर्तन का सशक्त प्रतीक बनकर उभरी है - जहाँ पहाड़ों की निस्तब्धता, प्रकृति की विराटता और बदलती जीवमशीली एक नई कहानी रचती प्रतीत होती है। आज जब रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस सेवा को हरी झंडी दिखाई, तो उनके संक्षिप्त लेकिन सारगर्भित उद्घोषण में एक स्पष्ट संदेश था - 'यह केवल एक ट्रेन नहीं, बल्कि जम्मू-कश्मीर पर जीवंत भविष्य की दिशा में बढ़ता हुआ विश्वास है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय रेल का लक्ष्य है कि देश के सबसे दुर्गम क्षेत्रों तक भी आधुनिक कनेक्टिविटी पहुंचे, ताकि विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।' उन्होंने यह भी कहा कि यह सेवा आने वाले समय में क्षेत्र के युवाओं के लिए नए अवसरों के द्वार खोलेगी और



स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति प्रदान करेगी। दरअसल, यह विस्तार उस स्वयं का परिपक्व रूप है, जिसकी शुरुआत जून 2025 में कटरा-श्रीनगर वंदे भारत सेवा से हुई थी। अब यह सेवा जम्मू-तवी तक पहुंचकर न केवल दूरी को कम कर रही है, बल्कि लोगों के मनो के बीच की दूरी को भी टूट रही है। कश्मीर की वादियों में जब यह आधुनिक ट्रेन सफर टूटती है, तो उसके साथ-साथ प्रकृति का एक अद्भुत संसार भी खुलता चलता है। ऊँचे-ऊँचे देवदरों से आच्छादित पहाड़, बादलों से संवाद करती घाटियाँ, और दूर तक फैली हरियाली - यह सब मिलकर एक ऐसी अनुभूति का निर्माण करते हैं, जहाँ विकास और प्रकृति के बीच एक संतुलित संवाद दिखाई देता है। यहाँ की सुबहें जब धूप की सुनहरी चादर ओढ़ती हैं और शामें जब ठंडी हवा के साथ सूकन का एहसास कराती हैं, तब यह यात्रा केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि भावनात्मक भी बन जाती है। चिनाव रेल पुल और अंजी खड़ पुल जैसे

इंजीनियरिंग के चमत्कार इस प्राकृतिक सौंदर्य के बीच आधुनिक भारत की तकनीकी क्षमता का परिचय देते हैं, जिसकी शुरुआत अंत में कटरा-श्रीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस मानो यह संदेश देती है कि विकास और प्रकृति एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हो सकते हैं। इस पूरी यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि जम्मू-कश्मीर में पिछले कुछ वर्षों में शांति और व्यवस्था का जो नया वातावरण बने है, उसी ने ऐसे बड़े बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को संभव बनाया है। कश्मीर जो क्षेत्र अस्थिरता और अनिश्चितताओं के कारण विकास से वंचित रह जाता था, वहीं आज प्रगति की मुखधरारा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह परिवर्तन केवल आंकड़ों में नहीं, बल्कि लोगों के जीवन में स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है - बाजारों की रौनक, पर्यटकों की बढ़ती आवाजाही और युवाओं के चेहरों पर उभरती नई उम्मीदों में। आर्थिक दृष्टि से यह रेल सेवा रोजगार के नए अवसरों

अंतरजातीय संबंधों पर सामाजिक हिंसा का संकट और बदलते समाज की चुनौती

संबंध को स्वीकार नहीं कर पाते, तब ऐसे रिश्ते अक्सर टकराव का कारण बनते हैं। इस मामले में भी युवती के भाई ने संबंध का विरोध किया, जिससे तनाव बढ़ा और अंततः यह हिंसक रूप ले बैठा। आरोप है कि युवक की हत्या बेहद क्रूर तरीके से की गई, जिसने पूरे गांव को झकझोर दिया। हत्या के बाद जो हुआ वह और भी चिंताजनक है। गुस्साए परिवर्तनों और ग्रामीणों ने दूसरे पक्ष के लोगों पर हमला कर दिया, घरों में आग लगा दी, और देखते ही देखते कई परिवार बेघर हो गए। बताया जा रहा है कि 30 से अधिक घर जलकर राख हो गए। यह केवल संपत्ति का नुकसान नहीं है, बल्कि उन परिवारों की जिंदगी पर गहरा आघात है, जिन्होंने एक ही रात में अपना सब कुछ खो दिया। आजनी के बाद भी लंबे समय तक घरों से घुआं उठता रहा, जो इस त्रासदी की भयावहता का प्रतीक है। घटना के बाद पुलिस और प्रशासन की भूमिका भी सवालियों के घेरे में है। ग्रामीणों का आरोप है कि पहले से मिल रही धमकियों के बावजूद पुलिस ने समय रहते कार्रवाई नहीं की, जिसके कारण यह घटना हुई। यही कारण है कि अब लोग आरोपियों की गिरफ्तारी के साथ-साथ पुलिसकर्मियों के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। जब आम नागरिकों को यह महसूस होता है कि उनकी शिकायतों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा, तो उनके भीतर व्यवस्था के प्रति अविश्वास पैदा होता है, जो आगे चलकर सामाजिक अशांति को जन्म देता है। यह घटना केवल एक गांव या एक राज्य तक सीमित नहीं है। देश के कई हिस्सों में आज भी अंतरजातीय विवाह या प्रेम संबंधों को लेकर इसी तरह की हिंसा देखने को मिलती है। समाज का एक बड़ा वर्ग अब भी जातिगत

सीमाओं को तोड़ने के लिए तैयार नहीं है। खासकर जब बात बेटियों की आती है, तो परिवारों में नियंत्रण और कठोरता और भी बढ़ जाती है। यह एक गहरी विडंबना है कि जहाँ एक ओर समाज बहुओं को किसी भी जाति से स्वीकार कर लेता है, वहीं बेटियों के लिए वही स्वतंत्रता नहीं दी जाती। यह दोहरा मापदंड न केवल असमानता को बढ़ावा देता है बल्कि सामाजिक तनाव का कारण भी बनता है। समाज में लड़कियों की कमी भी एक गंभीर समस्या बन चुकी है। कई क्षेत्रों में आज भी लिंगानुपात असंतुलित है, जिसके कारण हजारों युवक शादी से वंचित रह जाते हैं। इसके बावजूद अगर समाज अंतरजातीय विवाह को स्वीकार नहीं करता, तो यह समस्या और जटिल होती जाती है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि हम अपनी सोच को बदलें और रिश्तों को जाति के बजाय मानवीय आधार पर स्वीकार करें। इस तरह की घटनाएं यह भी दिखाती हैं कि परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष अब भी जारी है। एक ओर बढ़ते पीढ़ी अपने फैसले खुद लेना चाहती है, अपने जीवनसाथी का चुनाव करना चाहती है, वहीं दूसरी ओर पुरानी सोच अब भी इन बदलावों को स्वीकार करने में हिचक रही है। यह टकराव जब संवाद के बजाय हिंसा में बदल जाता है, तब इसके परिणाम बेहद खतरनाक होते हैं। इस समस्या का समाधान केवल कानून के जरिए संभव नहीं है। इसके लिए समाज में व्यापक स्तर पर जागरूकता और संवाद की जरूरत है। परिवारों को यह समझना होगा कि बच्चों की खुशियाँ और उनका अधिकार सर्वोपरि हैं। शिक्षा का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है, क्योंकि शिक्षित समाज में इस तरह की कटुता अपेक्षाकृत



कम देखने को मिलती है। साथ ही प्रशासन को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी और ऐसे मामलों में समय रहते प्रभावी कार्रवाई करनी होगी ताकि स्थिति बिगड़ने से पहले ही संभाली जा सके।

दामटिया गांव की यह घटना एक चेतावनी है कि अगर हमने अब भी अपनी सोच नहीं बदली, तो ऐसे हादसे बार-बार होते रहेंगे। हमें यह स्वीकार करना होगा कि समाज बदल रहा है और इस बदलाव को रोकना संभव नहीं है। व्यक्ति की अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीने की आजादी हो। इस सवाल का जवाब ही तय करेगा कि आने वाले समय में इस तरह की घटनाएं कम होंगी या फिर और बढ़ेंगी।

Defections redraw Punjab's political battle lines

THE defection of seven of the 10 AAP Rajya Sabha MPs, six of them representing Punjab, and their subsequent merger with the saffron party has boosted perceptions of a resurgent BJP as a party of change committed to muscular nationalism that can ensure the security of the citizens in these difficult times. This has strong resonance in the border state that has borne the brunt of terrorism for many years. The switching of loyalties by the AAP MPs to the BJP could facilitate a possible pre-poll alliance with the Akali Dal, which is in a revival mode, with the BJP in a stronger negotiating position. This possibility will significantly alter the political dynamics in the state. In the changed scenario, the Congress could find its prospects as the principal claimant to the anti-incumbency vote negatively impacted, in what is likely to be a fiercely contested election to the Vidhan Sabha early next year. To play its rightful role in Punjab, the grand old party will need to reinvent itself as a merit-based inclusive party, appealing to the progressive imagination of the people rather than as one encouraging casteist majoritarianism contrary to the constitutional vision crafted by its leaders.

Also, the current political logic and electoral arithmetic in Punjab demand that the Congress and the AAP reassess their political strategies, particularly in view of the post-poll exigencies, including the possibility of a fractured mandate.

Ten months is a long time in politics, and the AAP being in the driver's seat can still enlist popular allegiance through a vigorous implementation of its welfare schemes, a demonstration of just and fair governance and by addressing the pervasive perception of a deteriorating law and order situation in the state. Those who insist on writing the political obituary of the AAP may find themselves celebrating too early. Beyond the considerations of realpolitik, there are larger issues that must be debated in the public realm. In these troubled times, marked by intense political and personal rivalries and a fragile socio-political edifice, Punjab can show the way for constructive and civilised politics that is conducive to a robust, consensual democracy. This is not an option but a necessity if major policy issues for Punjab's renewal as a progressive state are to be initiated and implemented. Over the years, the state has had a faltering record on major development indices and its economic strength at present is among the poorest, as per the Niti Aayog's fiscal index. In the conduct of politics, no political party can ignore the grave challenges that Punjab faces. These include the pressing issues relating to environment and climate change, health and educational infrastructure, diversification of the state's economy, religious and casteist divides and the rise of identity politics, creeping extremism and a worrying law and order situation. Clearly, visceral political and personal animosities destructive of the forging of a broad consensus on critical policy choices will not serve the cause of Punjab and the credibility of the state's political leadership. Reckless allegations against political rivals, treating them as personal enemies to be tarnished and crushed at will, have eroded the credibility of the political class as a whole, thereby denuding the democratic process of its moral legitimacy. The absence of a meaningful public discourse on substantive issues as listed herein has robbed politics of its purpose and has exposed the failure of all political parties to mould and reflect the priorities of the nation. While democratic politics cannot escape the seduction of populism, it must concede space for principles that must survive the momentary impulses as a guarantee of social and political stability. There are also fundamental questions about the means and ends. If the advancement of human dignity is the aspirational goal of our constitutional state.

Tribune flyover threatens Chandigarh's founding vision

Expanding road capacity does not solve congestion; it invites more vehicles

Chandigarh stands at a perilous crossroads where the pressures of regional expansion threaten to dismantle the very logic of its creation. The impending construction of the Tribune Flyover is more than an urban design failure; it is a fundamental rejection of sustainability and the vision of an inclusive, humane city. This 1.6-kilometer concrete monolith is an obsolete 20th century response to a 21st century crisis - an intervention that ignores the statutory mandates of the Chandigarh Master Plan (CMP) 2031 and violates the city's unique architectural legacy. We are no longer just debating a traffic solution; we are deciding whether to remain a global benchmark for humane urbanism or surrender our identity to a highway culture Le Corbusier sought to transcend. Le Corbusier conceived Chandigarh as a biological organism, where each part of the city performed a specific function within a larger, integrated whole. This harmony relied on the 7V hierarchy of roads - a carefully graded system from pedestrian paths (V7) to fast vehicular roads (V1), designed to function as a circulatory network. By separating fast-moving traffic from local movement, this structure ensured not only efficiency but also safety, environmental balance, and a humane public realm. It is a system intended to privilege order over chaos, and people over vehicles. This foundational logic is precisely what interventions like the Tribune Flyover begin to unravel. By privileging speed and volume over hierarchy and separation, such projects disrupt the delicate balance that the city's road system was designed to maintain. The most damning argument against this approach lies in decades of global evidence on Induced Demand. Cities such as Los Angeles and Houston have repeatedly demonstrated this phenomenon, where multi-billion-dollar highway expansions resulted in little to no long-term congestion relief. The reality is that expanding road capacity does not solve congestion; it invites more vehicles, exacerbates carbon emissions, and merely funnels congestion to the next junction. Chandigarh is not immune to this pattern. We have already witnessed the damage caused by short-sighted road widening, which has systematically eroded our green road berms and safety zones. By prioritising through-traffic on our V2 and V3 roads - originally designed as internal city arteries - we have allowed them to become high-speed transit corridors that serve bypassing vehicles at the expense of our residents, pedestrians, environment, and public transport. As highlighted in a recent webinar by IIT Roorkee on "City, Equality and Happiness", the global paradigm is shifting toward the democratization of road space, which is being implemented in cities across continents. Enrique Peñalosa, former Mayor of

Bogotá, Colombia famously noted that a city is only "smart" when it prioritizes the dignity of human movement over the speed of machines. India holds a unique advantage: unlike the "locked-in" car-centric cities of the West, we still have the opportunity to leapfrog directly to 21st century mobility by investing in advanced public transport and pedestrian networks. In Chandigarh, this dignity is being eroded. While the V8 cycle tracks are often viewed as a recent addition, they were integral to the original Chandigarh Master Plan (CMP) of the 1950's. Their neglect, along with the incomplete implementation of the V7 pedestrian paths has gradually pushed Chandigarh into car dependency. To be truly humane, we must prioritize the cyclist and the



pedestrian over the private car.

This struggle echoes the opposition led by Jane Jacobs against the proposed Lower Manhattan Expressway in New York, where she argued that cities are communities to be nurtured, not corridors for vehicular movement. A more recent example can be seen in Cheonggyecheon Stream in Seoul, South Korea, where the removal of an elevated highway did not lead to the predicted gridlock. Instead, it improved urban ecology, reduced ambient temperatures, and boosted tourism, demonstrating the long-term benefits of reclaiming infrastructure for people rather than vehicles. This regression in our planning philosophy is most evident in the quiet collapse of the Punjab New Capital (Periphery) Control Act, 1952. Conceived to protect Chandigarh's character beyond its borders, the Act has been reduced to a formality as uncoordinated and ever-expanding satellite townships mushroom across Mohali, Panchkula, Zirakpur, and New Chandigarh. Every morning, thousands of vehicles stream into the city, unconcerned with the invisible lines that planners once believed would hold. The result is a city absorbing pressures it was never designed to. The Chandigarh Master Plan (CMP) 2031 clearly recognizes that this is not a local problem but a regional one, calling for a binding

Interstate Regional Planning Board and an Integrated Interstate Traffic and Transportation Plan (IITTP). These are not optional instruments of governance but essential safeguards against systemic failure. Without them, we are not solving congestion. We are adding scars and placing costly bandages on a widening regional wound, treating symptoms while the underlying imbalance deepens. Ignoring this statutory vacuum carries a profound environmental and human cost. The proposed flyover disregards the Expert Heritage Committee's warnings on preserving Chandigarh's defining "open-to-sky" vistas and necessitates the felling of the historic Mango Garden. This grove is not a cluster of trees. It is living infrastructure, a quiet lung deliberately placed between the city and its pollution, a biological filter embedded into the city's original design. Its removal is not just ecological loss; it is the erasure of intent. At the same time, the termination of a high-speed corridor near GMCH-32 threatens the integrity of a designated silence zone, introducing a constant stream of noise and disruption into a space where recovery depends on calm. In the name of easing movement, we risk degrading both the air we breathe and the spaces where we heal. The path forward does not lie in pouring more concrete, but in rethinking how the city moves. Instead of a flyover that accelerates vehicles through Chandigarh, we must invest in solutions that allow the city to function at a human pace: grade-separated underpasses where necessary, intelligent traffic management and a deliberate reallocation of road space toward pedestrians, cyclists and public transport. This is not an abstract ideal. It is the difference between a city where daily needs can be met within a short walk and one where every errand demands a cross-city drive. Restoring self-sufficient neighbourhoods means revitalising sector markets so they serve everyday life, not niche specialisation that pulls people across sectors unnecessarily. When movement is local, pressure on the entire system eases. When streets are designed for people, not just vehicles, the city regains its social and environmental balance. True progress requires the courage to enforce what already exists on paper: the statutory Red Lines against encroachment, the long-delayed regional coordination, and the prioritisation of a robust, high-frequency public transport network. The choice before Chandigarh is not a flyover versus traffic. It is a choice between two futures. One is defined by speed, fragmentation, and a gradual erosion of identity. The other is rooted in balance, accessibility, and the enduring vision of a humane city. Infrastructure decisions of this scale do more than alter movement patterns; they quietly rewrite the values a city lives by.

Curbing hate speech: Law enforcement beset by partisanship

The SC has sounded a moral alarm by asserting that hate speech is "fundamentally antithetical" to the constitutional value of fraternity

THE Supreme Court has observed that existing legal provisions are sufficient to deal with hate speech, an offence which poses a threat to public order as well as communal harmony. Putting the onus on the executive, the Court has flagged uneven enforcement of laws as a major concern. The SC has sounded a moral alarm by asserting that hate speech is "fundamentally antithetical" to the constitutional value of fraternity. Its message is clear: the erosion of civil discourse strikes at the very foundation of the republic. Laws that remain dormant or are selectively applied are as ineffective as laws that don't exist. The executive, particularly law enforcement agencies, needs to act without fear or favour. However, the efforts of governments to curb hate speech have left a lot to be desired. Powerful politicians often get away with divisive and communal remarks because the police are



reluctant to take action against them. It's this brazen dereliction of duty that the courts must closely monitor and firmly reprimand. When offenders go unpunished,

the rule of law and public trust in institutions are undermined.

The judiciary's refusal to create new legal mechanisms shifts the responsibility to the legislature. Parliament must now assess whether the current framework of provisions is adequate in an age where speech travels instantly and widely through digital platforms. If gaps exist, they must be addressed through carefully crafted legislation that balances free expression with the constitutional vision of unity, dignity and equality. Public figures, in particular, must exercise restraint as their reckless remarks can fan the flames. Ultimately, combating hate speech requires a collective effort. The State must enforce the law impartially, the legislature ought to remain responsive and the citizens should uphold the spirit of fraternity. And the judiciary needs to step in whenever the other pillars of democracy falter.

Does Trump's war with Iran mark the start of de-dollarisation?

The immediate effects are visible: a sharp rise in gas prices, inflation climbing to a two-year high, and growing concerns that, as consumers cut back on spending to offset higher costs, unemployment will rise

As the economic consequences of US President Donald Trump's war against Iran become evident, policymakers around the world are running out of patience. The recent Spring Meetings of the International Monetary Fund (IMF) and World Bank in Washington made this abundantly clear, with UK Chancellor of the Exchequer Rachel Reeves lamenting the "folly" of a war that is "not ours". But much of the cost will be borne by the US itself. The immediate effects are visible: a sharp rise in gas prices, inflation climbing to a two-year high, and growing concerns that, as consumers cut back on spending to offset higher costs, unemployment will rise. While these short-term shocks are serious, a major risk that has received less attention is that the dollar could lose its status as the world's primary trade and reserve currency.

The decline of a reserve currency is a slow process. The British pound ceded its dominance to the US dollar over roughly two decades, beginning in the 1920s. As Barry Eichengreen has noted, the Roman denarius — arguably the world's first international currency — also unravelled over a long period, starting when Emperor Nero debased it in the first century CE.

Any international currency ultimately depends on trust. I witnessed this during my time as chief economic adviser to the Indian government under Prime Minister Manmohan Singh. On August 5, 2011, S&P downgraded the US long-term credit rating from AAA to AA+, fuelling fears of immediate capital flight. Instead, the opposite happened: money flowed into the US economy. In the face of global turbulence, investors trusted that the US would honour its obligations, no matter the cost.

That trust, a cornerstone of soft power, is rapidly eroding. Samantha Power, the former administrator of US Agency for International Development (USAID),

highlighted this in a recent lecture at Cornell University, where she criticised the Trump administration's decision to dismantle the agency. The abrupt and "heartless" manner in which it was shut down, she said, halted humanitarian aid without warning, leading to immense suffering among populations around the world that had depended on its continuity. The closure of USAID, alongside Trump's military adventures in Iran and Venezuela and relentless attacks on long-standing allies like Canada and Denmark, has cast a shadow over America's global standing and trustworthiness. This, in turn, puts the dollar's hegemonic status at risk.

To understand the potential cost, consider seigniorage: because the dollar is globally trusted, the Federal Reserve can print a USD 10 bill for less than seven cents, and it will be accepted at full value around the world. As empires from Rome to Britain have shown, issuing the world's leading currency allows a country to create value almost out of thin air. Losing that capacity would slow economic growth.

Unless US policy reverses course, this year may go down in history as the moment the US dollar began to lose its status as the world's currency.

This raises the question: Which currency will replace the



dollar? The renminbi appears to be the strongest candidate. A decade ago, the Chinese currency gained credibility when the IMF included it in the basket of global currencies underpinning Special Drawing Rights (the Fund's reserve asset), but it was still widely dismissed as "no match" for the greenback. Today, the prospect of renminbi primacy no longer seems unthinkable. Yet China's ability to assume that global role is far from assured. As economist Qiao Liu observed

in his 2016 book 'Corporate China 2.0', the country combines an "authoritative political regime" with more flexible institutional arrangements in which "relationships still matter", a hybrid that does not readily inspire the kind of global confidence a reserve currency requires.

Chinese President Xi Jinping appears to understand this dynamic. In a 2024 speech, Xi emphasised the need to internationalise the renminbi to bolster China's soft power, calling for a "powerful currency that can be widely used in international trade, investment, and foreign-exchange markets and attain reserve currency status". But the main obstacle to reserve-currency status for the renminbi — the maintenance of capital controls — remains firmly in place.

The strongest rebuke of Trump's policies over the past year came from an unexpected source: King Charles III. His address to Congress on April 28, delivered with characteristic British wit and restraint, sent a clear message that the US is on the wrong path, one that could destroy its global standing.

There was, however, cause for optimism. The repeated bursts of bipartisan applause Charles received from members of Congress suggested they were already aware of America's predicament.

'Rescue fares': US air carriers step up with after Spirit Airlines winds down

New Delhi.(Agency)

US air carriers on Saturday mobilized to help passengers and crew members stranded by the overnight shutdown of Spirit Airlines, after the low-cost carrier's last-minute talks with creditors and the White House collapsed.

Spirit, known for its bright yellow planes, succumbed to crushing fuel prices and announced in the early hours that it was "winding down its global operations, effective immediately," with all flights canceled and customer service no longer available.

Other carriers -- including American, Delta, United and JetBlue -- moved quickly to scoop up Spirit's customers, offering what some dubbed "rescue fares" to those waking up with cancelled itineraries. "In just over 12 hours, United has helped Spirit customers book 14,000 tickets to get to where they need to be," United said in a statement on Saturday.

Some airlines said they would increase the number of flights or schedule larger planes in and out of airports where Spirit had a significant presence. Carriers also sought to support marooned Spirit staff -- and hire them.

Spirit has been in and out of bankruptcy since 2024, and the White House was recently considering a bailout."

The recent material increase in oil prices and other pressures on the business have significantly impacted Spirit's financial outlook," the company said in a statement. "With no additional funding available to the company, Spirit had no choice but to begin this wind-down."

The company had nearly 7,500 employees at the end of last year, according to filings. Unions representing them slammed the failure to reach a deal.

Market recap: Top 10 firms add Rs 2.20 lakh crore in value; Reliance emerges biggest gainer

New Delhi.(Agency)

Dalal Street closed the holiday-shortened week in the green, lifting the combined market valuation of India's top 10 most valued firms by Rs 2.20 lakh crore. Reliance Industries led the rally as investor sentiment remained resilient despite a volatile trading environment.

The gains came even as the stock market moved within a narrow range. The BSE Sensex rose 249.29 points, or 0.32%, over the week. "Markets ended the week with marginal gains, reflecting a volatile and range-bound trading environment amid mixed global and domestic cues," Ajit Mishra -- SVP, Research, Religare Broking Ltd, said.

He said markets started the week on an optimistic note, helped by easing geopolitical tensions and steady Q4 earnings progress, which supported sentiment in the early sessions. That momentum, however, weakened later as higher crude oil prices, subdued Asian market trends and sustained foreign institutional investor (FII) outflows limited further gains.

Reliance Industries accounted for the largest jump in valuation, with its market capitalisation increasing by Rs 1,39,655.8 crore to reach Rs 19,36,303.30 crore. Bharti Airtel also posted a significant rise, adding Rs 43,503.51 crore and taking its valuation to Rs 11,49,222.13 crore. Tata Consultancy Services (TCS) saw its market worth rise by Rs 27,569.83 crore to Rs 8,94,933.95 crore, while Bajaj Finance gained Rs 9,432.32 crore, pushing its valuation to Rs 5,83,123.13 crore.

Adam Back again denies he is Satoshi, Bitcoin's inventor

NEW DELHI.(Agency)

Adam Back has spent weeks being asked yet again, by various people, whether he is the inventor of Bitcoin. He is not, he says.

He has been saying so for years and again since the New York Times suggested in early April, after dissecting writings from the early cypherpunk era, that Adam Back was the most credible candidate yet for Satoshi Nakamoto, the pseudonymous figure who released Bitcoin's design paper in 2008 and disappeared in 2011.

A documentary released weeks later proposed two other candidates. Back has done what he usually does, which is to deny the attribution, explain why people keep making it, and return to work. "It's not me, for the record," he said in late April, in a polite tone. "It's very hard to prove a negative." "Mystery around founder helped Bitcoin's growth"

The repetition does not seem to bother him. The mystery has been useful, he says. A Bitcoin without a known founder is a Bitcoin without a single point of capture, without a chief executive to subpoena, a founding team to coerce, a charismatic figure whose departure could destabilise the network. That, he believes, is part of why the asset has reached the position it now occupies.

"It helps Bitcoin be more understood as a digital commodity rather than shares in a startup," he told Bloomberg at the sidelines of the Bitcoin 2026 conference in Las Vegas. "Nobody has any particular strong influence."

Back is British, the holder of a doctorate in computer science and the chief executive of Blockstream, one of the oldest and best-capitalised infrastructure companies in the Bitcoin ecosystem. He is also one of the few known people whose work demonstrably influenced Bitcoin's design. His 1997 paper on Hashcash -- a proof-of-work algorithm intended to combat email spam -- is cited in Satoshi's 2008 whitepaper. He was, by his own account, working on the problem of digital scarcity, more than a decade before Bitcoin's release.

Digitalisation push raised productivity in Indian MSMEs, helped smaller firms: IMF

New Delhi.(Agency)

The International Monetary Fund (IMF) has lauded the digitalisation reforms in public administration in India saying it pushed productivity in the micro, small and medium enterprises (MSMEs). The IMF stated the benefits of the digitalisation push in a working paper and stated that states that have adopted these changes have witnessed the benefits. "We find that states that undertake more public administration digitalisation experience higher productivity growth and lower productivity dispersion among firms," wrote economists Somnath Sharma and Kenichi Ueda. To write the paper, the IMF economists studied the productivity of unincorporated manufacturing businesses in states which have adopted more digitalisation reforms and those that have undertaken fewer changes in public administration.

Significance of MSMEs in Indian economy

MSME is an umbrella term that encompasses a very bog category of businesses in India. They account for about 35% of the manufacturing activity and output in the country and provide livelihood for 11 crore workers. These units also contribute to about 45% of the country's cumulative export figures. The IMF working paper said that the business reforms undertaken in India between 2010-11 and 2014-15 were mostly through digitalisation of business-related public administration. This helped in reducing the cost of dealing with bureaucratic hurdles, which often become a big hindrance for small and micro businesses. "Thus, these reforms can be considered to help improve the

productivities of firms, in particular, small-and micro-manufacturing enterprises," the economists said

compliance, inspections, commercial disputes and single-window clearances. They mentioned clearly that digital tools drove down the administrative burden, especially for small firms. Steps such as online tax filing and automated approvals helped improve transparency and slashed delays. "By automating and making processes more transparent, digitalisation levels the playing field for all businesses," IMF said.

IMF stance in 2023

Three years ago, the IMF also came out in support of the digitalisation push. In a paper titled "Stacking up the benefits: Lessons from India's digital journey", the IMF mentioned, "India Stack's development is guided by a foundational building blocks approach, and a focus on supporting innovation across the ecosystem."



according to a PTI report.

Reforms in six areas

The IMF economists listed reforms in six areas. These are tax systems, construction permits, environment and labour

AI is helping you invest. But should you trust it?

New Delhi.(Agency)

Artificial intelligence has moved from being a novelty to a necessity in everyday life. We use it to write, edit, search, and create. It helps us save time, reduce effort, and make quicker decisions. Gradually, it has become a tool we depend on without thinking twice. Now, that same technology is being trusted with something far bigger; our money. People have started relying on AI to make decisions, whether it is picking a stock, understanding market trends, or figuring out when to buy and sell?

At recent app launches and updates across India's fast-growing fintech space, one thing has become clear. Artificial intelligence is no longer just a feature inside financial apps, it is the main pitch.

From stock suggestions and portfolio insights to some tools that claim to help users "time the market", AI is increasingly being positioned as a smarter way to invest. But when money

is involved, the question becomes far more important than the technology itself, how much should you actually trust it?

AI IS NOW EVERYWHERE IN INVESTING

The use of AI in financial services is not



new, but its role is expanding rapidly. According to Sebi's consultation paper on responsible usage of AI and machine learning, these systems are already being widely used across Indian securities markets -- from advisory and support services to surveillance, risk management, and even product recommendations.

Better data, faster computing power, and advances in generative AI have pushed this adoption further. For platforms, the logic is simple. Markets move fast. Data is overwhelming. And retail investors need help navigating both.

"AI helps us process large volumes of data quickly, identify patterns, and present information in a more usable way," said Navy Vijay Ramavat, Managing Director at Indira Securities.

"It strengthens decision-making by reducing noise and improving efficiency."

THE BIG PROMISE: SMARTER INVESTING

For users, AI promises something very appealing, better decisions with less effort. Instead of tracking earnings reports, analysing charts, or reading research reports, investors can now rely on AI-powered tools to simplify the process.

But even companies building these tools are careful about how far they take that promise. "AI does not replace that team, it amplifies what they can do," said Pranit Arora, Co-Founder.

Weak global cues, oil price, FII data likely to drive D-Street next week

New Delhi.(Agency)

The Indian stock market is likely to remain under pressure in the coming week as investors grapple with rising crude oil prices, persistent foreign fund outflows, and escalating geopolitical tensions. Alongside these macro triggers, a busy earnings calendar is expected to keep stock-specific action high, even as the broader sentiment stays cautious.

During the last trading session, the Nifty declined 0.73 per cent to close at 24,000, recovering from its day's low, while the Sensex slipped 0.78 per cent to end at 76,891 compared to the previous session.

The sell-off was largely led by oil-sensitive stocks, as crude prices stayed elevated above the USD 100-per-barrel



mark. Commenting on the Nifty technical outlook, experts said that the price action suggests consolidation with a mildly bullish bias. "On the upside, resistance levels are placed at 24,350 and 24,600. On the downside, support is seen at 23,900 and 23,550. A breakdown below 23,500 could result in increased selling pressure," an analyst stated.

Looking ahead, market participants are expected to closely track a packed earnings calendar. More than 250 companies are set to announce their results for the March quarter.

Geopolitical developments will also remain a key overhang. Concerns around a potential escalation in tensions between the United States and Iran have kept global markets on edge.

Crude oil prices will continue to be a crucial factor for domestic equities, given India's heavy reliance on imports.

Although prices eased slightly after reports of Iran's willingness to engage in talks, Brent crude continues to hover near USD 108 per barrel, while West Texas Intermediate remains around USD 101.

If crude stays high, Indian aviation faces margin squeeze, demand risk: Oil Analyst

India's aviation sector is particularly vulnerable because aviation turbine fuel (ATF) already forms a large part of operating costs, and the market is highly price-sensitive.

New Delhi.(Agency)

If the crude oil prices stay elevated, losses will become harder to absorb as Indian aviation is more sensitive, stated Sparta Commodities Senior Oil Analyst Abhishek Kumar.

In an exclusive conversation with ANI, he said, "If the fuel shock stays elevated, the risk is that losses become harder to absorb, flights are cancelled, and

government intervention may be needed to protect connectivity and prevent deeper stress across the sector."

Kumar explained that India's aviation sector is particularly vulnerable because aviation turbine fuel (ATF) already forms a large part of operating costs and the market is highly price-sensitive. Airlines may increase fares on some routes, but they cannot fully pass on higher fuel costs without hurting demand.

"India is more sensitive because ATF is already a large cost item and the airline sector is highly price-sensitive. Airlines may raise fares on some routes, but they cannot pass through the full cost without hurting demand," he said.

He added that the impact is already visible, with airlines reducing discounts, increasing fares and reviewing weaker routes, along with a rising risk of capacity cuts. The industry

has also started seeking policy support, including relief on ATF pricing and taxes.

Kumar noted that the surge in aviation fuel prices is creating a direct margin shock for airlines. "The aviation fuel



surge is now a direct margin shock for airlines. The issue is not only higher crude, but that jet fuel has risen faster than crude, making the ATF cost squeeze much sharper," he said.

Brent crude is currently trading around USD 109 per barrel, jet fuel prices have risen faster, increasing the cost burden on airlines.

He pointed out that airlines have now moved from the absorption phase to the adjustment phase after several weeks of elevated prices and disruptions. "We are also no longer in the first week of the shock. After several weeks of elevated prices and war-related disruption, airlines have moved from the absorption phase to the adjustment phase," he said.

Airlines initially relied on hedging and limited fare increases, but that protection is now weakening. "Airlines are cutting discounts, adding fuel surcharges, raising fares, reviewing weaker routes and becoming more cautious on capacity. The first casualty is margins," Kumar said. He also warned about demand risks. "The next risk is demand destruction. Airlines can pass on part of the fuel cost, but not endlessly. If fares rise too quickly, price-sensitive passengers start delaying or cancelling trips," he added. Kumar noted that leisure travel, budget flyers and weaker domestic routes are likely.

Wheat grain cheaper now, but your atta, bread prices haven't dipped. Why?

While wheat prices have gone down in mandis, there is no resultant relief in atta and bread prices for households. What's behind the mismatch between the rates at which farmers sell wheat and the retail prices of flour? Who is really benefiting?

New Delhi.(Agency)

When the price of wheat falls in the mandi, it should bring relief to the kitchens because of cheaper wheat flour (atta). That's a common perception. But across India, the impact of the falling prices of wheat is nowhere to be seen. Though farmers are forced to sell wheat below the Minimum Support Price (MSP), yet, the prices of atta and bread on the dining tables haven't got any cheaper. What's the reason behind this paradox? According to the Ministry of Agriculture and Farmers' Welfare, prices of wheat have dipped significantly in recent months. In several wholesale mandis across Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, and Rajasthan, prices have fluctuated between Rs 23 and Rs 25 per kg in April, which has often been below the MSP of Rs 25.85 per kg. The MSP on wheat was increased by the Narendra Modi government



in 2025 from Rs 160 to Rs 2585 per quintal. A quintal is equal to a hundred kilograms. Logically, cheaper wheat should translate into cheaper flour and bread. But that has not happened in India. Retail atta prices continue to float around Rs 36 to Rs 40 per kg nationally, with branded products often selling at a range of Rs 40 and Rs 50 or more for a kilogram. "Ideally, when wheat becomes cheaper, flour

prices should also come down. But that hasn't happened. The question here is whether this is the farmer's loss or the consumer's gain, or is someone else pocketing profits in the name of consumers? The bitter truth is that the middlemen's system is thriving," said Om Prakash, agricultural expert at Kisan Tak, India Today Digital's sister portal. "For the average household, the promise of cheaper roti remains something that is far from reach," Prakash added. This gap between falling raw wheat prices and spiking retail prices of atta exposes a structural imbalance in the supply chain. From mandi to mill to market, wheat passes through multiple processes like milling, packaging, branding, transportation, and retail distribution. Each stage adds costs, but more importantly, it adds margins that do not always adjust downward when input prices

fall. **WHAT'S BEHIND WHEAT-ATTA PRICE MISMATCH?** Agriculture experts and economists describe the situation as asymmetric price transmission. In the case of wheat flour, millers and companies tend to pass on cost increases to the customers but are slower to reduce prices when wheat becomes cheaper. This allows them to protect and even expand profit margins. "The decline of wheat prices in mandis of several states has been driven by strong production expectations, heavy arrivals, and comfortable government stocks exceeding 22 million tonnes," said Kisan Tak's Om Prakash. "Sweat is sold at throwaway prices in mandis, while consumers are charged premium rates in malls. This is today's harsh reality. The farmer's loss is not turning into savings for the consumer."

Fear, confusion grip Delhi residents as emergency alert blips on phones

New Delhi.(Agency)

Shock, fear, and confusion gripped people across the national capital on Saturday after a loud emergency alert sound from a Cell Broadcast message issued by the Government of India. Many were initially alarmed, only to later realise from the message that "no action is required by the public upon receipt of this message". Deepthi Nainwal, a former school teacher, said she was in her kitchen deciding what to cook when a loud, unfamiliar sound echoed at her home. "First of all, when the alert sound suddenly started on my phone, I was completely shocked. It was so unexpected that for a moment I didn't understand what was happening. However, after I read the message carefully, I realised it was a routine security alert issued by the authorities. Everyone in the house understood that it was only for safety and security purposes, and there was nothing to panic about. After reading it properly, I acknowledged the message and pressed OK," she said. She added that such alerts are issued periodically to keep citizens informed and prepared rather than to create panic. Mobile phones across the country displayed the alert with a loud tone. The message read: "Extremely Severe Alerts now in India. Launch of Cell Broadcast using indigenous technology for instant disaster alerting service. Alert citizens, safe nation. No action is required... This is a test message." The Delhi Police also clarified on social media platform that the alert was part of a test and required no public action. Residents shared mixed reactions online. Some found it easy to dismiss on Android devices, while others said the sound persisted longer on iPhones. Ankit Prakash from East Delhi said, "It felt as if my phone had exploded. The sound was so sudden and loud that it completely startled me. My wife was asleep at the time, and she too woke up in shock. In that moment of panic, she even told me to throw the phone away." Ashish Saini from Dwarka said, "I got scared because I had no idea what had happened. It definitely grabs attention. If the government wants to send such alerts, it's a good initiative."

Online feedback mandate sparks teachers' protest at Delhi's Shaheed Bhagat Singh College

New Delhi.(Agency)

A recent circular issued by Shaheed Bhagat Singh College mandating students to fill online feedback forms through the ERP portal has triggered strong opposition from the college's teachers' body, AADTA. The association has termed the directive "unilateral" and "anti-teacher", arguing that it disregards the collective position consistently maintained by the Delhi University Teachers' Association on such mechanisms. AADTA expressed surprise that the move was implemented despite the known affiliation of DUTA leadership with the college, raising concerns over the commitment to safeguarding teachers' rights and institutional solidarity. The association contended that making feedback compulsory, without addressing long-standing issues regarding transparency, and accountability, risks creating a coercive environment rather than fostering constructive engagement. Teachers also flagged fears that the system could be used as a tool for harassment, undermining professional autonomy. Describing the circular as a "farman", AADTA suggested that the measure appears more aligned with administrative control than genuine quality enhancement in teaching-learning processes.



Charred Bodies, Debris: Video Shows Grim Aftermath Of Delhi Building Fire

New Delhi.(Agency)

The aftermath of the massive fire inside a four-storey building in Delhi's Vivek Vihar remained grim, with a video showing charred bodies, collapsed structures, and huge debris as officials engaged in rescue operations. The fire broke out on the second floor of the building around 4 am today, killing at least nine people and injuring two others. As many as 14 fire engines were rushed to the spot to put out the fire and carry out rescue operations. But by then, the fire had spread to the third and fourth floors of the building. The fire officials rescued more than a dozen people and shifted them to a

nearby hospital for treatment. The blaze was put out after nearly two hours, around 6 am. The video, accessed by



showed a staircase heavily littered with rubble, broken plaster, and charred debris. A heavy stream of water can be seen pouring down from the ceiling onto the stairs - likely from a

broken pipe or a fire suppression system. As the clip moved through the building, charred furniture was visible, and light smoke could be seen in the air. Officials were seen recovering the charred bodies and wrapping them in a white cloth. According to the police, they have recovered all the bodies and handed them over to the Delhi Police crime team. The cause of the fire is not yet known, but a resident claimed an AC blast may have triggered the blaze. "A blast in the AC triggered the fire... Around 12-15 were rescued. However, 4-5 people are still missing," he told news agency ANI. Local MLA Sanjay Goyal also reached the spot to take stock of the situation.

One-year-old among nine killed in massive blaze at residential building in Delhi's Shahdara

New Delhi.(Agency)

Nine people were charred to death on Sunday morning after a fire broke out at a residential building in Shahdara's Vivek Vihar area. The fire department has recovered nine charred bodies from different floors -- one from the first floor, five from the second floor, and three from the staircase mummy which was found locked. According to reports, nine people -- including four women, four men, and a one-year-old child - lost their lives in the fire. Police said a preliminary investigation suggests the blaze may have been triggered by an air-conditioner explosion. They added that further probe is underway. According to the fire officials, they got information at 3.47 am regarding the blaze. A total of 14 fire tenders were rushed to the spot to douse the blaze. The fire was brought



under control at 6.25 am. The fire was in domestic articles in six flats, and 12 to 15 people were rescued by the Delhi Fire Services personnel. A senior police officer said that they got a PCR call at 3.48 am regarding the incident, following which staff reached the spot. The fire brigade and crime team also reached the spot at Vivek Vihar B-Block. Deputy Commissioner of Police (Shahdara) RP Meena said after reaching the spot, fire was found in the flats situated on the second, third, and fourth floors. During rescue and fire extinguishing operations, 10 to 15 people were rescued from the building, out of whom two persons, having sustained minor injuries, were shifted to Guru Teg Bahadur Hospital for medical treatment, the DCP said. Further enquiry and proceedings at the spot are in progress, Meena added.

9 Killed After Suspected AC Blast Sparks Fire At Delhi Residential Building

The cause of the fire is not yet known, but a resident claimed an AC blast may have triggered the blaze.

New Delhi.(Agency)

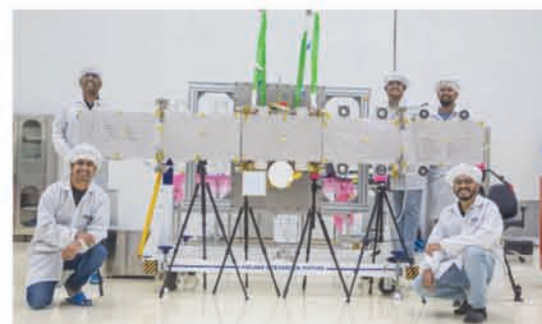
Nine people died, including a one-year-old child, and two others were injured in a fire that broke out in a four-storey building in Delhi's Vivek Vihar area this early morning. The fire broke out on the second floor of the building around 4 am, following which as many as 14 fire tenders were rushed to the spot to put out the fire and carry out rescue operations. On reaching the spot, officials found the fire had spread to the third and fourth floors of the building. Vivek Vihar is a prime location in East Delhi. More than a dozen people were rescued from the building, officials said. The injured people have been taken to the Guru Teg Bahadur Hospital for treatment. The identities of all nine victims have been established, the officials said. The most number of casualties were reported on the second floor, where five people lost their lives - Arvind Jain (60 years), his wife Anita Jain (58 years), Arvind's son Nishant Jain (35 years), Nishant's wife Anchal Jain (33 years), and their son Akash Jain (1.5 years). On the third floor, three members of a family were killed. They have been identified as Nitin Jain (50 years), his wife Shailey Jain (48 years), and their son Samyak Jain (25 years). On the first floor, Sikha Jain (40 years) was killed, while her husband, Naveen Jain (48 years), was injured and is currently receiving treatment. The fire was brought under control after two hours - by 6 am. Visuals showed many parts of the building burnt and smoke coming out from the top floor. "Early in the morning, around 4 am, a call was received about a fire. Fire tenders and local police were immediately rushed to the spot. It took about two hours to bring the fire under control, after which search operations were carried out," DCP Shahdara, Rajendra Prasad Meena, said. According to the police, they have recovered all the bodies and handed them over to the Delhi Police crime team. Delhi Chief Minister Rekha Gupta called the incident "extremely tragic" and extended support to the affected families. "The fire incident in a building in Vivek Vihar is extremely tragic."

How Indian Start-up's Drishti Satellite Could Be New Headache For Pak, China

New Delhi.(Agency)

Suyash Singh, CEO and Founder of GalaxEye, called the mission a technological first and explained why India needed to think differently while designing satellites.

India is getting ready to launch a satellite unlike any the world has seen before. Built by a private space start-up and designed to see through clouds and darkness, the mission marks a turning point for India's space ecosystem. At the heart of this effort is Drishti, a uniquely engineered Earth observation satellite developed by Bengaluru-based GalaxEye and set to fly aboard SpaceX's Falcon 9 rocket. The launch takes place from California on May 3 at 12.29 pm IST. Speaking ahead of the launch, Suyash Singh, CEO and Founder of GalaxEye, called the mission a technological first and explained why India needed to think differently while designing satellites. "This satellite mission is called Drishti. Drishti stands for seeing through anything and



everything in our context," he said. "The speciality of this particular satellite is it has a multispectral camera and a synthetic aperture radar (SAR) imager on the same satellite. This is a first of its kind." If this was operational, India could have gotten quality images of the bomb damage assessments from Operation Sindoor rather than relying on commercial American

satellites. In fact the current Israel, USA and Iran conflict has amply shown why countries need eyes in the skies from sovereign countries as USA has barred space giant Vantor, earlier called Maxar, from sharing images from the conflict. The idea for Drishti was born out of India's geography and climate. Unlike temperate regions in the West, much of India lies in the tropics, near the Tropic of Cancer. Cloud cover is frequent and persistent, often rendering conventional optical satellites ineffective. "We have found that India is a country which is tropical in nature. We have more clouds than the West," Singh explained. "The West has never thought about this concept because they never had this problem. If they have a clean sky, they will have a clean sky. If they have some cloud, they will have for some time and then it will go away."

NEWS BOX

Shakira eyes biggest career show with free Copacabana concert in Rio

World. (Agency)

Colombian superstar Shakira will give a free concert on Copacabana Beach in Rio de Janeiro on Saturday night in an event that Rio officials say will draw approximately 2 million people to one of the world's most iconic waterfronts. The performance follows similar shows by Madonna in 2024 and Lady Gaga last year, also attended by huge crowds that danced on the sprawling sands. It is part of Shakira's "Las Mujeres Ya No Lloran" ("Women No Longer Cry") world tour, named after her 2024 album. The Latina pop star said in an interview with Brazil's TV Globo that she expects the Copacabana concert to be the biggest of her career.

"For me it's a dream. I always dreamed of singing on this beach, because I think it's a magical place," she said in Portuguese, adding that she learned the language before English. Brazil was one of the first countries where Shakira became successful back in the 1990s, thanks to her charisma and the connection she created with the Brazilian public, according to Felipe Maia, an ethnomusicologist who is pursuing a doctoral degree on popular music and digital technologies at Paris Nanterre University.

Her historical success in Brazil "has a lot to do with the fact that she comes from Colombia, a country whose culture has many similarities with Brazil," Maia said, adding that Saturday's performance "crowns the relationship she has had with Brazil for a very long time." By Saturday morning, crowds had started piling onto the beach to nab a good spot for the performance. Street vendors were selling food and drinks, but also toilet paper, deodorant and even bags of sand on which to stand to get a better view of the stage set up opposite Copacabana Palace. DJs will start performing on the beach in the late afternoon. Shakira's set is scheduled for 9:45 p.m. local time and is expected to last around two hours. After the performance, another DJ will take to the stage — a new addition to keep the crowds entertained and help with an orderly exit, according to Rio officials.

'Rescue fares': US air carriers step up with after Spirit Airlines winds down

Washington. (Agency)

US air carriers on Saturday mobilized to help passengers and crew members stranded by the overnight shutdown of Spirit Airlines, after the low-cost carrier's last-minute talks with creditors and the White House collapsed.

Spirit, known for its bright yellow planes, succumbed to crushing fuel prices and announced in the early hours that it was "winding down its global operations, effective immediately," with all flights canceled and customer service no longer available.

Other carriers -- including American, Delta, United and JetBlue -- moved quickly to scoop up Spirit's customers, offering what some dubbed "rescue fares" to those waking up with cancelled itineraries. "In just over 12 hours, United has helped Spirit customers book 14,000 tickets to get to where they need to be," United said in a statement on Saturday.

Some airlines said they would increase the number of flights or schedule larger planes in and out of airports where Spirit had a significant presence. Carriers also sought to support marooned Spirit staff -- and hire them.

Spirit has been in and out of bankruptcy since 2024, and the White House was recently considering a bailout.

'Structural headwinds': 2026 midterm race enters last six months with US Congress at stake

Washington. (Agency)

The battle for control of the US Congress entered its final six months on Sunday, with midterm elections in November that could reshape President Donald Trump's second term and redefine the balance of power in Washington. As ever, the midterms will be a referendum on the president, with Democrats hoping to capitalize on economic discontent and Trump's sliding approval ratings to retake the House of Representatives and Senate -- while Republicans fight to defy political headwinds.

At stake is not just legislative control but the trajectory of Trump's agenda, with a Democratic-run Congress able to launch investigations, block nominees and generally complicate the remainder of his presidency.

Early indicators point to a challenging environment for Republicans, with Trump's approval rating around 40 percent and economic dissatisfaction -- particularly inflation and Iran war-related costs -- eroding confidence.

Polling shows Democrats with a narrow edge on the generic ballot, while some surveys suggest voters now trust them more on the economy.

A Republican-aligned group, AFP Action, warned the party's Senate majority was "at risk," citing "structural headwinds" and disengaged voters.

In midterm elections, Americans vote to fill all 435 House seats, about one-third of the 100-member Senate and most governorships. Democrats need to flip three House seats and four in the Senate to take control. "The Senate is on the table here," Molly Murphy, of pollster Impact Research, told cable network MS NOW, pointing to Trump's waning popularity and strong Democratic turnout in recent elections.

Trump's pirates remark direct admission of criminality: Iran demands UN action

Iran accused Donald Trump of admitting criminality after he said the US Navy acted like pirates against Iranian vessels. Tehran has urged the UN and its member states to reject any normalisation of such conduct under international law.

World. (Agency)

Iran has accused US President Donald Trump of making a "direct admission of criminality" after he likened the US Navy's actions against Iranian vessels to piracy, and called on the United Nations to intervene. Tehran's foreign ministry spokesperson Esmail Baqaei said Trump's remarks amounted to an open

acknowledgment of unlawful conduct at sea. "The President of the United States has openly described the unlawful seizure of Iranian vessels as 'piracy,' brazenly boasting that 'we act like pirates,'" Baqaei said in a statement. "This was no verbal slip. It was a direct and damning admission of the criminal nature of their actions against international maritime navigation."

He urged the international community, UN member states and the UN Secretary-General to reject what he described as attempts to normalise violations of international law.

TRUMP'S 'PIRATES' REMARK

The response followed Trump's comments on Friday, when he described US naval operations enforcing a blockade on Iran as being "like pirates."

"We took over the ship, we took over the cargo, we took over the oil. It's a very profitable business," Trump said. "We're



like pirates. We're sort of like pirates, but we are not playing games."

US forces have in recent days seized vessels linked to Iran, including tankers and container ships, as part of Washington's broader pressure campaign during the ongoing conflict involving Iran and Israel.

ESCALATING MARITIME TENSIONS

The confrontation at sea has intensified alongside the wider conflict, with Iran restricting most shipping through the Strait of Hormuz, a key global energy route, while the US has imposed its own blockade

on Iranian ports.

The disruption has affected a critical corridor that handles roughly a fifth of global oil and liquefied natural gas shipments, contributing to volatility in energy markets.

WAR CONTEXT AND GLOBAL REACTION

The current phase of the conflict began on February 28, when US and Israeli forces launched strikes on Iran, prompting retaliatory attacks by Tehran on Israel and Gulf states hosting US bases.

The fighting has resulted in large-scale casualties and displacement, with hostilities also spilling over into Lebanon.

Trump's remarks have drawn criticism from several quarters, adding to earlier controversy over his statements on the war, including threats to target Iranian infrastructure.

Some US experts have also raised concerns over the legality of certain actions during the conflict.

Ghana becomes latest African nation to reject US health deal, cites data concerns

Accra. (Agency)

Ghana has rejected a proposed health deal with the United States over concerns about data privacy and is now seeking a new agreement, an official said Friday. It was the latest African country to walk away from the deal over similar concerns. The deal included provisions that would have allowed US entities access to Ghana's sensitive health data without necessary safeguards, according to Arnold Kavaarpoo, executive director of Ghana's Data Protection Commission.

The scope of the data access that was requested under the deal "went far beyond what would typically be required," Kavaarpoo told The Associated Press.

A US State Department spokesperson said the department does not disclose details of bilateral negotiations. "We

continue to look for ways to strengthen the bilateral partnership between our two countries," the spokesperson added, speaking on condition of anonymity to discuss the matter.

United States Agency for International Development.

The deals offer hundreds of millions of dollars in US funding to some of the African countries worst hit by the US aid cuts to support their public health systems and help fight disease outbreaks.

The agreements, however, have raised questions about data privacy concerns. In February, authorities in Zimbabwe said they rejected the proposed deal over issues around health data, fairness and sovereignty. Zambia is also reported to have pushed back on a section of its deal, although no decision has been made there. Activists in

Africa say the agreements often lack adequate safeguards for the use of the data and are sometimes limiting in who is being helped -- such as in Nigeria, where the US committed to supporting mainly Christian faith-based healthcare providers.



White House dinner shooting suspect seeks end to jail suicide watch

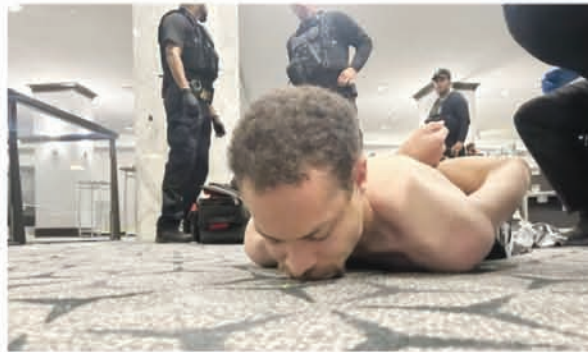
World. (Agency)

Attorneys for a man accused of attempting to assassinate President Donald Trump at a black-tie press gala last weekend asked a judge on Saturday to remove him from suicide watch at a Washington jail. The suspect, Cole Tomas Allen, allegedly forced his way through a security checkpoint and fired a shotgun outside the White House Correspondents' Dinner on April 25.

After being booked on April 27, Allen was placed in a "safe cell," described in a court filing as a padded room under 24-hour lockdown, where he was required to

wear a restrictive vest similar to a straitjacket.

He was later moved to suicide



precautions, which still barred him from making phone calls, receiving visitors other than his legal team, or leaving his cell except under escort for

legal meetings or showers.

According to the filing, a nurse recommended ending those measures on Friday, but they remained in place during a lawyer's visit that same day.

His attorneys argue the restrictions are punitive and limit access to basic resources, including a jail tablet that would allow him to communicate with family members.

Allen faces charges of attempted assassination, discharging a firearm during a violent crime, and illegally transporting weapons and ammunition across state lines. He has not yet entered a plea.

Dutch Princesses targeted in scary murder plot, suspect found with axes, Nazi symbol

This is not the first time the safety of Amalia — the future Queen of the Netherlands — has been under threat. She has previously been the target of multiple serious threats, including an alleged gang plot by drug cartels to kidnap her along with then Dutch Prime Minister Mark Rutte, who currently serves as Secretary-General of Nato.

World. (Agency)

Authorities in the Netherlands foiled an attack targeting two members of the Dutch royal family — Princess Catharina-Amalia, 22, and her younger sister, Princess Alexia, 20 — who were allegedly targeted by a 33-year-old man suspected of far-right extremist views and accused of plotting a

sinister Nazi-inspired attack to kill the future Queen and her sister. The suspect, who is due to appear in court on Monday, was arrested in The Hague in February. The court date is listed in an official scheduling order published by The Hague Public Prosecutor's Office.

Authorities said he was found with two axes engraved with the words "Alexia," "Mossad," and "Sieg Heil," a Nazi-era salute. He was also carrying a handwritten note bearing the names "Amalia," "Alexia," and the word "bloodbath."

AUTHORITIES HAVE NOT REVEALED MOTIVE

The Hague Public Prosecutor's Office did not disclose further details, including the suspect's identity, citing Dutch privacy laws. Authorities have also not revealed a motive behind the alleged plot or the disturbing writings. Details of the February arrest emerged as the royal family — including Amalia and Alexia — marked King's Day with public

appearances in the heavily secured city of Dokkum on April 27.

Amalia, the daughter of King Willem-Alexander and Queen Maxima, is the heir to the Dutch throne, while Alexia is second in line.



FUTURE DUTCH QUEEN HAS BEEN TARGET OF MULTIPLE THREATS

This is not the first time the safety of Amalia — the future Queen of the Netherlands — has been under threat. She has previously been the target of multiple serious threats, including an alleged gang plot by drug

cartels to kidnap her along with then Dutch Prime Minister Mark Rutte, who currently serves as Secretary-General of Nato.

In 2020, she was forced to go into hiding after a man sent messages threatening her with rape and violence. In 2022, authorities

intercepted communications between gang members targeting Amalia and Rutte. That same year, she was compelled to leave her student accommodation in Amsterdam over security concerns, and Queen Maxima moved her to the heavily guarded royal palace in The Hague. In 2024, Amalia secretly relocated to Madrid to complete her studies and experience greater personal freedom due to ongoing security concerns. Queen

Maxima described the impact on her daughter, saying, "She can't live in Amsterdam and she can't really go outside the palace." "It has enormous consequences for her life," she added, noting that her daughter could no longer live in Amsterdam or move freely outside.

Iran Nobel laureate Narges Mohammadi hospitalised after fainting twice, cardiac crisis



World. (Agency)

Iran's imprisoned Nobel Peace Prize laureate Narges Mohammadi has been urgently transferred from prison to a hospital in northwestern Iran after a "catastrophic deterioration" of her health, her foundation said Friday.

The Narges Mohammadi Foundation said the Nobel Prize laureate had two episodes of complete loss of consciousness and a severe cardiac crisis.

Earlier Friday, Mohammadi had fainted twice in prison in Zanjan in northwestern Iran, according to the foundation. She was believed to have suffered a heart attack in late March, according to her lawyers who visited her a few days after the incident. At the time, she appeared pale, underweight and needed a nurse to help her walk.

The hospital transfer comes "after 140 days of systematic medical neglect," since her arrest on Dec. 12, the foundation said. "This transfer was done as an unavoidable necessity after prison doctors determined her condition could not be managed on-site, despite standing medical recommendations that she be treated by her specialized team in Tehran," the foundation said.

Help may be little too late, family says. Mohammadi's family had advocated for her transfer to adequate medical facilities for weeks.

The foundation, quoting her family, said her transfer Friday to a hospital in Zanjan was "a desperate, 'last-minute' action that may be too late to address her critical needs." Mohammadi's brother Hamidreza Mohammadi, who lives in Oslo, Norway, said in an audio message shared with The Associated Press by the foundation that her family is "fighting for her life."

"My family in Iran is doing everything they can. But the prosecutors in Zanjan are blocking everything," he said. On March 24, Narges Mohammadi's fellow inmates found her unconscious, her lawyers said she told them during the visit a few days later. Upon later examination at the prison's clinic, a doctor told her that she probably had had a heart attack.

NEWS BOX

The Vibhuti Effect: Why do India's chess prodigies swear by the sacred ash?

New Delhi. (Agency)

The silence in an elite chess hall is thick, almost tactile. Under the clinical hum of the air conditioning and the unforgiving glare of broadcast lights, the world's finest minds sit frozen in a state of hyper-focus. Their eyes dart across sixty-four squares of impending mayhem, calculating permutations that would leave even the most sophisticated computer grinding for time. Yet, amidst this landscape of cold logic and high-tech tension, a small, organic detail has begun to pull the gaze of the curious spectator: a smudge of white ash on the brow of a Grandmaster.

Whether it is a single, contemplative stroke or the traditional marking of the forehead, the presence of vibhuti is a subtle visual that has largely escaped deeper exploration. From the historic rise of Rameshbabu Praggnanandhaa and D Gukesh to the steady brilliance of R Vaishali, a generation of Indian prodigies, predominantly from the country's southern heartlands, is conquering the world while wearing their culture with an unselfconscious pride.

This is a sight that travels. When Bodhana Sivanandan, a British-Indian prodigy of just 11 years old, appeared at a tournament in North London bearing the mark, it served as a quiet reminder of how deeply ingrained this practice is — a visual bridge between the ancient traditions of an Indian household and the sharp, secular world of international chess.

EGO'S END GAME

For the players themselves, the practice is less about outward display and more about an internal grounding. In the stratospheric world of elite chess, where a single blunder can ruin months of preparation and shatter a carefully constructed reputation, the ego is a dangerous passenger.

Praggnanandhaa, who has become the face of a new generation of Indian chess — calm, collected, almost preternatural in his composure — once explained the philosophy plainly to podcaster Raj Shamani: "This is basically the ash. We come from ash and go back to it. So, this is basically [to remind us] that whatever we do is not something to be arrogant about. It's something that I have been doing from a young age, and I have been doing it ever since."

Max Verstappen sees light at the end of tunnel

Miami. (Agency)

Four-time world champion Max Verstappen said he could "see light at the end of the tunnel" after claiming an impressive second place in Saturday's qualifying for Sunday's Miami Grand Prix. The 28-year-old Dutchman, frustrated by progress at Red Bull and the driving experience of racing in the new hybrid era of F1 cars, said his team's upgrades had made his car far more comfortable and pleasing to drive.

"For sure, the car has not been great in the previous races," said Verstappen, whose previous best grid position this year was eighth.

On Sunday, he will start alongside championship-leading Italian teenager Kimi Antonelli of Mercedes, who claimed his third consecutive pole on Saturday.

"From my side, I never felt comfortable with the layout of the car," said Verstappen. "I think over these last few weeks the team has been pushing flat-out to try and bring upgrades to the car and make me feel more comfortable with a lot of things and it really paid off."

"I feel more in control of the car again and then I can push a bit more. The upgrades are working and to be on the front row is way better than I expected heading into this weekend." Now, let's start with a good start. I've not had a lot of them this year. We'll try to have a look at that, for sure, and see what the weather will do tomorrow, but I'm already very happy with where we are. "From here there's like light at the end of the tunnel, and we can just push on and try to close the gap further."

Red Bull, in common with most leading teams, made use of F1's enforced five-week hiatus due to the conflict in the Middle East to deliver major upgrade packages for their cars.

While Verstappen purred with satisfaction, his friend and rival -- defending world champion Lando Norris of McLaren, who won Saturday morning's sprint race in convincing style from pole -- was unhappy at qualifying only fourth.

"I think we did a good job but I think the others just did a really bad job yesterday and did what they should have done today... so I have no complaints."

"It was trickier today with the wind and the high temperatures and I was struggling a big more for whatever reason. We didn't change anything. It was just the conditions."

Has Hardik Pandya lost MI dressing room? EX-IND batter's big claim after CSK defeat

Manoj Tiwary said Hardik Pandya appears to have lost the Mumbai Indians dressing room after the defeat to Chennai Super Kings. He said the side looked fundamentally unsettled, with limited backing for the captain and inconsistent performances damaging the campaign.

New Delhi. (Agency)

Former India batter and IPL winner Manoj Tiwary claimed that Hardik Pandya has lost the MI dressing room after their latest loss to Chennai Super Kings on Saturday, May 2. Mumbai were beaten by their arch-rivals by eight wickets in another one-sided derby. The loss meant that Mumbai are ninth on the points table.

Hardik's captaincy has been questioned by pundits, with fans also observing some

unrest within the squad. During the loss to PBKS, Jasprit Bumrah was seen to be unhappy with the MI skipper's calls and showed his displeasure on the field.

Speaking to Cricbuzz after the match, Tiwary said that MI's campaign is well and truly over and feels that there seems to be something fundamentally wrong with the team.

"For me, it certainly is over; in fact, for me, it was over a long time ago. As you know, whenever we sit down for a discussion, we speak quite openly and frankly with one another. I base my observations and comments strictly on what is visible on the field. And, in my opinion—judging by the brand of cricket we've witnessed—it appears that something is fundamentally amiss," said Tiwary.

Coming to Hardik and his captaincy, Tiwary felt that none of the players are standing behind the all-rounder. While the former India batter admitted that Hardik hasn't lived up to the hype of being MI skipper, he also blamed the rest of the squad for not stepping

up during the season.

"Look, a captain is supposed to win the confidence of every single player in the squad; you have to step up and be a true leader. Right? However, observing the



situation, it seems as though no one is truly standing by Hardik. It feels like no one is rallying behind him; the kind of support he ought to be receiving simply isn't materializing."

"Yes, the captain certainly has a specific role to play—and perhaps, he isn't fulfilling that role as effectively as he could be. From my

perspective, he isn't quite living up to the task. But beyond that, the players themselves need to shoulder their share of the responsibility," said Tiwary.

The former KKR man pointed out the examples of Suryakumar Yadav and Tilak Varma, who remained inconsistent throughout the campaign.

"Take Suryakumar, for instance: he hasn't been delivering performances on a consistent, match-to-match basis. Similarly, Tilak had one standout match, but he hasn't been scoring runs since then. If this kind of inconsistency persists among the rest of the squad, how can you possibly expect to achieve positive results? It is, quite frankly, deeply disappointing," said Tiwary.

'REMOVE EL CLASICO NAME'

Chennai's win on Saturday meant that CSK have now won six out of the last seven matches against MI. Chennai also closed the gap to Mumbai in their head-to-head record, which now stands at 24-21, still in favour of MI.

IPL 2026: Punjab's bowling in focus as Gujarat look to spice up playoffs race

New Delhi. (Agency)

The IPL playoff race is heating up as the Punjab Kings and the Gujarat Titans battle it out in Ahmedabad. Earlier in the day, in-form Sunrisers Hyderabad look to strengthen their position on the points table against a resurgent Kolkata Knight Riders, who have shown some signs of life in them at the Uppal.

However, the firm focus will be on the evening game, which will be a proper clash of ideologies. When you look at Punjab and Gujarat, the difference is almost like attending a rock band's concert and a ghazal session. One is all about giving you that adrenaline rush with the big hits, and the other is about being simple, soothing, and at times, just old school cricket.

The current PBKS can be considered the



most attacking batting lineup in the history of the IPL, and the numbers back it up. Across four metrics. They lead the all-time charts across the board — boasting a staggering average of 43.1, a strike rate of 186, striking a boundary every 3.6 balls, and clearing the ropes every 7.9 deliveries. But the gulf between their batting and bowling was exposed during the loss to RR when the Royals chased down 223 with

ease. GT, on the other hand, are once again dependent on their top three, who have shown signs of being more aggressive. Their bowling seem to be in top form with the likes of Kagiso Rabada, Arshad Khan, Rashid Khan, and Mohammed Siraj stepping up this season.

A win for GT will spice up the playoff race as they will enter the top four. For Punjab, they need two more wins to reach the magical 16 points mark to secure a playoff spot.

For SRH, another win will be their sixth on the trot and push them ever so close to a playoff spot themselves. For KKR, it is all about survival and another victory will keep them just about alive in the competition for now. With so much at stake, Sunday promises.

From T20 World Cup heroes to IPL 2026 flops: Will MI rest their Indian core?

New Delhi. (Agency)

If you're Jasprit Bumrah, Hardik Pandya, Tilak Varma or Suryakumar Yadav, you would probably be wondering how things have unraveled so dramatically in a matter of weeks. On March 8, all four were being hailed as heroes as India clinched their third T20 World Cup title — the faces of a triumphant campaign, carrying the weight of a nation with ease.

Fast-forward to May 2, and the mood has shifted sharply. The same names are now being scrutinised as some of the biggest underperformers of IPL 2026. Bumrah, long regarded as a T20 master, has just three wickets from nine matches at an average of 94.67 — numbers that feel almost surreal for a bowler of his calibre.

Tilak has 193 runs this season, including a hundred, but the southpaw has struggled to leave a consistent mark. Suryakumar's poor run continued at Chepauk, where he looked set before falling for 21 — another start that slipped away. The former World No. 1 T20I batter now has 183 runs from nine matches.

Hardik, meanwhile, cut a dejected figure after the game, admitting the season simply hasn't gone their way. His returns — 183 runs and four wickets from eight matches — reflect a campaign that has lacked rhythm and control.

So has the T20 World Cup high turned into a lingering hangover? Has the toll of back-to-back cricket finally caught up with MI's Indian core?

Well, Mumbai coach Mahela Jayawardene isn't ready to go there just yet. Despite the mounting pressure, MI still retains a mathematical chance of qualification — and for him, that keeps the fight alive and the belief in the famed Indian core still intact. "I think it's too early for me to say anything. I think we've still got 5 more games. I mean, anything can happen for us."

Thomas Cup: No Lakshya, no party, as India get blown away by France 0-3 in semi-finals

Horsens. (Agency)

It felt more like a rowdy football match and less of a badminton competition when India took on France in the semi-finals of the Thomas Cup 2026 on Saturday, May 2.

Despite hosts Denmark taking on China on the other court at the Forum Horsens Arena, Indian and French fans dominated the decibel meters, turning the semi-final into an electric, high-voltage clash. The 0-3 scoreline, which saw India getting knocked out of the competition, does not do justice to the way the tie ebbed and flowed through the evening. There were many moments when the French camp fell silent, and many phases when their players looked under pressure and even a little shaken, but they somehow managed to pull off a victory. In doing so, they helped their nation register their first-ever final appearance in the tournament. The French, led by Toma Junior Popov and



Christo Popov, beat India in straight matches, helping France become only the second European nation, besides Denmark, to reach the finals of the competition. It was a historic moment for the Popov brothers, who carried the weight of the nation on their shoulders and produced exceptional badminton to beat a strong Indian side in straight games.

Without the services of Lakshya Sen, India's calculations were thrown out of the window, as they were forced to play

young Ayush Shetty in the first singles of the match, and then a 33-year-old Kidambi Srikanth in the second singles against world No. 10 Alex Lanier.

Lakshya, who had pulled off a sensational victory against world No. 6 Chou Tien-chen in the quarter-finals, was ruled out of the tie due to a swollen elbow and blisters on his feet. He watched on painfully as India were beaten in three straight matches in little more than two hours.

One can argue that India were put on the back foot even before the tie began, as the side could not field their strongest players against France's best combination. Because Christo Popov and Toma Junior Popov play both singles and doubles for the French team, the tie was not lined up in the usual manner. Instead of the traditional order, the matches were arranged as follows to ensure adequate rest for the French players:

No longer CSK's Rs. 14.2 Crore gamble, Kartik Sharma spreads his wings in yellow

Kartik Sharma finally proved that he wasn't just a big-money gamble for CSK, repaying the faith of the management by scoring a well-composed fifty to get his side the win in the El Clasico against Mumbai.

New Delhi. (Agency)

When Kartik Sharma reached his fifty against Mumbai Indians on Saturday, May 2, there was a visible release — a weight finally lifted off his shoulders. Bought for Rs. 14.2 crore after being pursued by five teams, expectations were sky-high. But the returns

hadn't matched the hype. Just 58 runs from five matches isn't what you expect from a big-money signing.

Yet, the Chennai Super Kings management didn't waver. They doubled down on their belief in the youngster and handed him a role that demanded both composure and courage. Against Mumbai, he was asked to walk in at No. 4, steady the innings, and guide the chase alongside the captain.

The trust ran deeper — he was picked as the impact player ahead of the more experienced Sarfaraz Khan.

What followed wasn't fireworks or a highlight-reel blitz. Instead, it was something far more valuable — a composed, no-frills 54 off 40 balls that quietly did the job. Well, maybe not entirely without flair, considering the Dhoni-esque celebration at the end. But more importantly, it was the



innings that introduced the world to the real Kartik — the player CSK had backed all along. And finally, that faith began to pay off.

"Today was the perfect platform on a difficult wicket where they knew that the spinner was going to operate in the middle over phase, and they wanted one Indian player to bat with Ruturaj, and he came, and he took that responsibility really well, and so happy for

him because he was not getting runs, and people are talking so highly about him. Finally, that trust has paid off for CSK," said Piyush Chawla after the game to JioStar.

The praise didn't stop there. CSK head coach Stephen Fleming also lauded the knock, calling it a reward for Kartik's temperament through a challenging start to the season.

"You have the young players, there's two parts to it," said Fleming. "One is how you introduce them. It is a big stage no matter what they've been doing at domestic level. So understanding their mentality is really important and it is a big step-up. They can have all the talent in the world but the temperament is what we're looking for, and his [Kartik's] introduction was tough at the start and then he had a little bit of time out. He worked hard and today was a good reward for that," said Fleming.

Malaiika Arora

On Women Being Questioned About Age, Desirability: 'Men Are Rarely Subjected To Scrutiny'



Malaiika Arora, who has completed over 30 years in the entertainment industry, recently spoke out about the stark disparity in how ageing is perceived for men and women. She highlighted how women are constantly questioned about growing older and expected to justify how they feel about it, while men are rarely subjected to the same scrutiny.

When asked about navigating perceptions around the evolution of her appearance over time, Malaika Arora said on The Right Angle podcast, "There are days when these thoughts cross my mind, days when I question the obvious, and then there are days when I simply don't care because I know I'm doing what I love. I'm enjoying this phase of my life, I feel like I'm in my prime, and I'm still hungry to do so much more. That's what truly matters to me."

She further added, "What I find interesting is that women are constantly asked these questions about age, beauty, and desirability, while men are rarely subjected to the same scrutiny. A woman is always expected to justify how she looks. 'Do you still feel beautiful? Do you still feel desirable? How does it feel to be this age?' These questions are almost never directed at men."

She mentioned, "For me, it's never been just about physical appearance. Of course, that's what the world sees first, but there's so much more. It's about how you feel mentally, emotionally, and spiritually. It's about what drives you, what motivates you to get out of bed every morning and seize the day."

"I don't wake up thinking, 'I look good today.' That's not how most women function. We wake up wanting to create, contribute, build something meaningful, and leave behind a legacy that our children and families can be proud of. And honestly, the constant commentary around women and age needs to change."

"She looks amazing for her age,' 'She's so fit at this age', why is age always the headline? I was myself then, I am myself now, and I'll continue to be myself twenty years from now because I feel good, I feel strong, and I feel fulfilled. I think women everywhere need to wear that confidence like a badge of honour, unapologetically. We should celebrate ourselves, our journeys, and everything we continue to become," Malaika concluded.



Tumbbad 2: Has Alia Bhatt Joined Sohum Shah And Nawazuddin Siddiqui's Film? Find Out



Sohum Shah's Tumbbad has long been regarded as one of Bollywood's most underrated horror dramas, earning cult status over the years for its atmospheric storytelling and mythological depth. With Tumbbad 2 now in the works, expectations are naturally soaring among fans. In March, Sohum announced Nawazuddin Siddiqui's addition to the cast, upping the excitement quotient. Now, the latest report suggests that Alia Bhatt has also come on board for a special appearance.

According to Mid-Day, the makers have roped in Alia Bhatt for a cameo role in the folk horror film. Even though her screen time will be short, the report suggests that it is a very pivotal role in the story. A source told the portal, "The makers needed someone who brings gravitas and intrigue in a short screen time. Alia fit that space." It is also being said that Alia will shoot for the film on May 3 before heading to the US for the Met Gala on May 4. The source further added, "The shoot is tightly planned with an elaborate set constructed in Madh Island. Alia will shoot for two days in all. Since she is making an appearance at the Met Gala on May 4, the makers have brought a double for some patch scenes." However, the makers are yet to officially announce her addition.

Director Adesh Prasad's sequel is set to delve deeper into the dark, cursed mythology surrounding the deity Hastar, expanding on the eerie lore established in the first film. It will explore the dangerous consequences of awakening forces that were never meant to be worshipped, promising a more intense and unsettling narrative that builds on the original's haunting premise.

Meanwhile, Alia is currently busy shooting for Sanjay Leela Bhansali's Love & War with Ranbir Kapoor and Vicky Kaushal. It is set to hit theatres in January 2027. On the other hand, Tumbbad 2 is set to arrive on December 3, 2026.

Karan Johar Reviews Meryl Streep, Anne Hathaway's The Devil Wears Prada 2: 'This Sequel Speaks Of Our Times'



Filmmaker Karan Johar has often spoken about his admiration for The Devil Wears Prada, a film he has re-watched countless times over the years. So when The Devil Wears Prada 2 finally arrived nearly two decades later, the excitement was inevitable! The film, starring Meryl Streep, Anne Hathaway and Emily Blunt, was released in theatres on May 1, and Karan Johar has now shared his thoughts about the film, calling it deeply rooted in today's times.

Karan Johar Reviews The Devil Wears Prada 2
Karan Johar took to his Instagram to share his review of The Devil Wears Prada 2, the much-anticipated follow-up to the iconic original starring Meryl Streep and Anne Hathaway. "Nostalgia is powerful... It keeps the present hopeful ... my memory of watching #devilwearsprada is embedded in my heart... I walked out more in love with Meryl Streep (if that was possible) and understanding the pursuits of Miranda Priestly .. even though she was a tough leader, even though she was aesthetically judgemental and raising eye brow elitist to a fault.... But I understood her for her chase to attain excellence and perfection.... I wondered how I would feel revisiting Andy, Nigel, Emily and Miranda," he wrote.

Karan Johar wrote that the sequel cleverly blends humour with a sharp commentary on the current media landscape. "Right at the top let me not compare the two films as the first has a massive heads up of cumulative nostalgia... This sequel speaks of our times, the (sadly) emerging irrelevance of serious journalism ...the digital overdrive Mania that is eating into the beauty of print... the powerlessness of the artistically powerful forces at the hands of corporations... the need for consolidations over ideations... all that in a Comedy? Yes... that's the solid strength of Part 2 it makes you think of the travesty of our times," he added. KJo wrote that Meryl Streep's character Miranda Priestly is 'more vulnerable', while Anne Hathaway's character Andy Sachs is 'more hopeful' this time around. "Nigel is more amiable and Emily is just wonderful! I ate my popcorn and sat back on my red hot seat and went back to my 33-year-old self who believed that visions can't be replaced by vendors!!! That's all," he wrote.

Twinkle Khanna

Offers Glimpse Of Her Favourite Spot At Home: 'I'd Give Up My Bedroom, But Never My...'

Author, columnist and former actress Twinkle Khanna on Friday afternoon gave her fans a sneak peek into her most cherished spot at home, that is her balcony. The actress referred to it as a peaceful space, where she 'works, unwinds, listens to music, spends time with family and



most importantly, daydreams.' Twinkle shared a soothing video montage on her social media account and offered glimpses of her cozy balcony space at home. The clip shows Twinkle seated comfortably on a beautifully designed hanging daybed placed in the balcony, surrounded by cushions, indoor plants. Twinkle appears to overlook a breathtaking sea-facing view from the daybed.

In one of the other clips, Twinkle is seen sitting thoughtfully in a denim shirt paired with loose pants.

In another frame, the actress is seen working on her laptop while seated in the same hanging lounge setup.

She captioned the post as, "This is my favourite place to work, unwind, watch my dog watch the world, listen to music, chat with my family, and most importantly, daydream. I'd give up my bedroom, but never my balcony. What's your favourite spot in the house?"

Talking about Twinkle Khanna's career, the actress who made her Bollywood debut with Barsaat in 1997 was loved for her character portrayal as Komal.

Followed by Barsaat, she was seen in movies like Jab Pyaar Kisi Se Hota Hai, Baadshah and other movies. The actress then went on to also be a part of the movie Mela that flopped at the box office. Twinkle met Akshay on the sets of International Khiladi where they reportedly fell in love and got married soon after. The actress stepped away from acting and decided to focus on her family life alongside being an author and also an interior designer.

